Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनज्ञान

हिन्दी मासिक

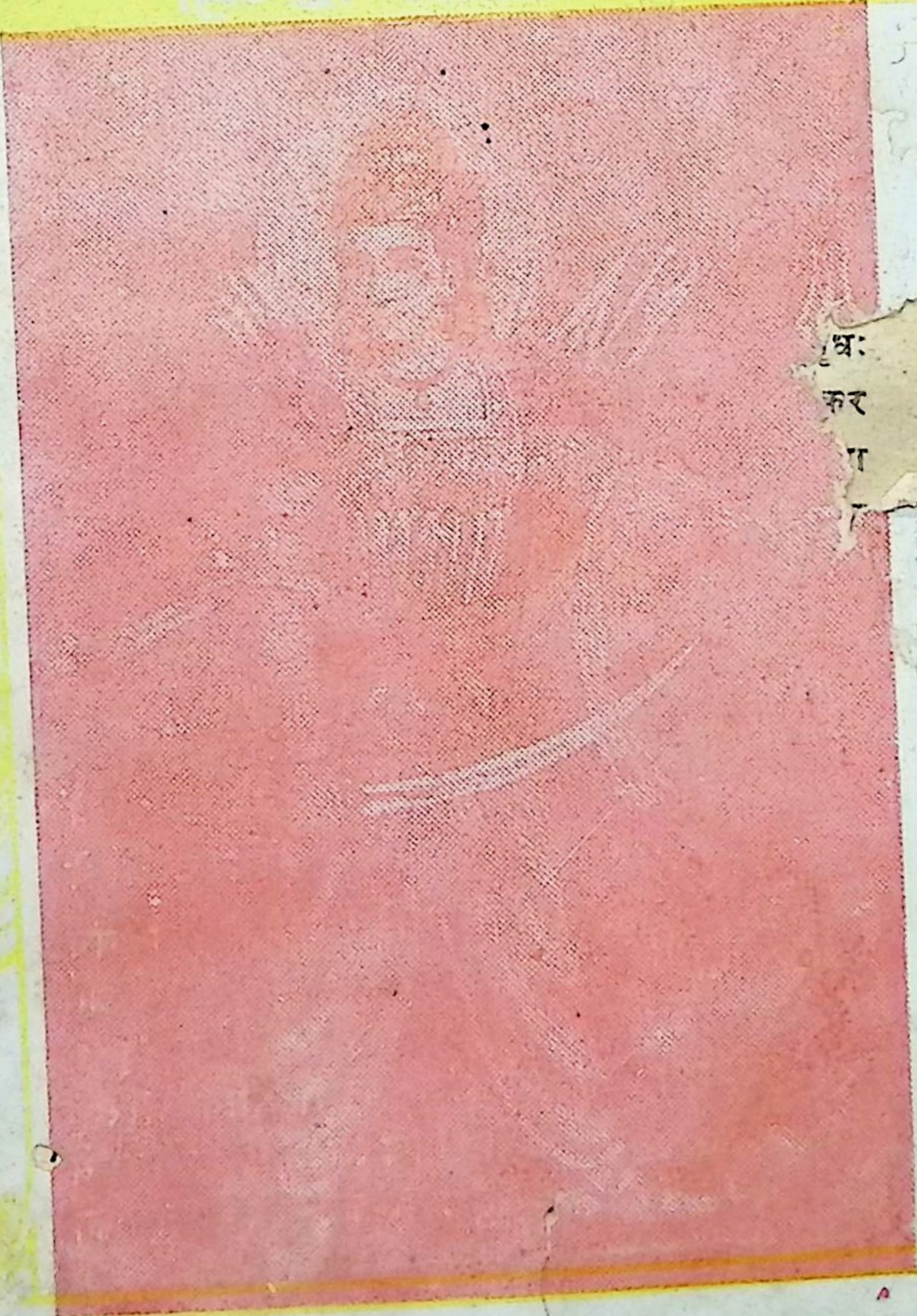

१६ नवम्बर से १५ दिसम्बर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दो आँसू !

—कुंवर सुखलाल 'आर्यमुसाफिर'

जिन्हें संसार में संसार का उपकार करना था।
जिन्हें दुनियां में वैदिक धर्म का विस्तार करना था।
अनाथों और अछूतों का जिन्हें उद्धार करना था।
जिन्हें निज देश और जाति का वेड़ा पार करना था।
उन्हें देखो कि बाहम बरसरे पैकार बैठे हैं।
समाजों को मिटाने के लिए तैयार बैठे हैं।

सभाओं में सदा जो संगठन के गीत गाते हैं।
बड़े सरमन सुनाते हैं बड़ी बातें बनाते हैं।
खुदाई का जो खुद को बगरज खादिम बताते हैं।
जो उनके दिल टटोलो तो खुदी से स्याह पाते हैं।
ये ही लीडर रहे तो हो चुका प्रचार वेदों का।
इन्हें तो खून करना है दयानन्द की उम्मीदों का।

निकलते थे जो हम शानों पै वेदों के अलम रखकर।
फरिश्ते भी फ़िदा होते थे उस पुरजोश मंजर पर।
जला देते थे हम दुश्मन के खिरमन को कलम रखकर।
हटाते ही न थे पीछे कभी आगे क़दम रखकर।
'नमस्ते' लब पै आते ही मुख़ालिफ़ चौंक पड़ते थे।
'समाजी' नाम से पाखंडियों के होश उड़ते थे।

उठो अब आर्यवीरो फिर से अपना संगठन करके।
समाजों को बचाओ फूट से कोई जतन करके।
मिटा दो ढोंग और पाखण्ड को भगवद् भजन करके।
बजाओ वेद का डंका फिदा जान और तन करके।
तुम्हें जेबा नहीं हरगिज भी इस हालत से घबराना।
जो तुम चाहो तो कुछ मुश्किल नहीं बिगड़ी का बन जाना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य के लिए संघर्ष करो।

संस्थापक— स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक—पंडिता राकेशरानी
एवं. सह-सम्पादक—विमलचक्षु:
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
मुखमेलपुर, दिल्ली-110036
दूरभाष : 7202325
7202249
कार्यालय—2286, आर्यसमाज मार्ग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 5724741
वार्षिक मूल्य : 40 रुपये
आजीवन : 501 रुपये
विदेश में : विमान से 48 पौंड,
60 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
विदेश में : 1501 रुपये
एक प्रति : चार रु०
नवम्बर 1989 वर्ष 22, अंक 7

वेदोपदेश—

पाप की अंतिम झाँकी

अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः।
नुदस्वादेवयुञ्जनम् ।। सामवेद।

अर्थ—(सोम !) मेरे सूखे हृदय के संजीवन ! (क्रतुवित्) तेरी पहुंच मेरे प्रत्येक संकल्प, प्रत्येक क्रिया, प्रत्येक चेष्टा में है। (मत्सरः) तू हर्ष का सरोवर है। तू (मृधः अपघ्नन्) पापों का विनाश कर (पवसे) पवित्रता का प्रवाह लाता है। (अदेवयुं जनम्) पाप की ओर प्रवृत इस जन को (नुदस्व) पाप-पथ से हटाकर सन्मार्ग में प्रेरित कर।

भावार्थ—मेरे अन्दर मस्ती का सागर ठाठें मार रहा है। मस्ती की लहर मेरी प्रत्येक क्रिया के साथ-साथ उठती है। एक पवित्र हर्ष का प्रवाह है जिसमें मैं दिन-रात डूबा रहता हूं। मेरा प्रत्येक कार्य ईश्वर के समर्पण है। ऐसी अवस्था में पाप के उदित होने का अवसर ही कहाँ है ? सोमरस के प्रथम घूंट के साथ ही मां बाप के बीज तक को नष्ट कर चुका हूं।

(स्व. पं० चमूपति जी)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

दीप तो जला दिए-छांट दो बची निशा (सम्पादकीय) ३
गद्दी की भूख ही भूख (महात्मा वेदभिक्षु की अमरवाणी) ७
दंगे और राष्ट्रद्रोह—सिद्धार्थ १०
आप ही के पत्र १३
समाचार दर्पण २१
सम्प्रदायवाद और अलगाववाद के असली अपराधी कौन
—युगल किशोर चतुर्वेदी २५
वोट किसे दें ? —राजेन्द्र कुमार गोयल २८
धर्म-परिवर्तन के षड्यन्त्र ? —पं. जयन्त कुमार आर्य ३३
असली अल्पसंख्यक कौन ? —स्व. श्री प्रकाश जी ३८
सहयोगी सदस्य ४५
आदि मानव कैसे थे ? —राजेन्द्र सिंह ४६
शस्त्र की गूंज उठे झंकार (कविता) —वेद प्रकाश ५६
ब्रह्मचर्य्य-विज्ञान —सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ६०
राष्ट्रभक्त पांडव —धनंजय प्रसाद देशपांडे ७७
आज की नारी देवी नहीं, लेडी है। —ज्ञानार्थी ८१
कांग्रेस और भारत की स्वतंत्रता —दुर्गादत्त शर्मा ८४
कल का हिन्दुस्तान (कविता) —जगदीश श्रीवास्तव ८६
बिजूका ८७
हिन्दुओं की कुछ मांगे —सत्यव्रत वेदालंकार ९६
समाज, धर्मनिरपेक्षता और सरकार —डा० बी. आर. एस. गुप्त १०२
सजल (कविता) —डा० रत्नलाल रत्नेश १०८
आर्य समाज बुद्धिजीवी सम्मेलन सम्पन्न १०९

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखक की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हों।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

दीप तो जला लिए–छाँट दो बची निशा

दीपावली के पावन पर्व पर सिर्फ दीप ही नहीं जलते, अंधकार से संघर्ष का संकल्प भी इस परम्परा के पालन करने में समाहित होता है। अंधकार तो कहीं भी हो अपशकुन ही होता है। चाहे मन के आँगन में हो या देश की दहलीज पर। श्री मन्तो ने अपनी दीपोत्सव बट्टालिकाओं में विद्युत दीप जलाकर मनाया और निर्धनों की कुटियों में माटी के दीये जलाये गए। युगों-युगों से इस देश की संस्कृति और मर्यादा के प्रति निष्ठावान हर व्यक्ति की जगतनियन्ता से यही याचना रही है। "तमसो मा ज्योतिर्गमय"।

देश ने दीपोत्सव तो मना लिया, परन्तु अभी भी अंधकार के सघन घन राष्ट्र की अस्मिता को चुनौती दे रहे हैं। इस भारत भूमि में ऐसे भी कोटि-कोटि जन हैं, जो इस देश का अन्न खाकर यहीं की हवा में सांस लेकर भी इस राष्ट्र लक्ष्मी की आरती उतारने से कतराते हैं। राष्ट्र की मुख्य धारा में समाहित होने के स्थान पर अपनी अलग पहचान बनाये रखने के नाम पर गंगा के निर्मल जल में उन्हें परायापन लगता है। और विडम्बना यह है कि राष्ट्रीयता की गंगा-यमुना-सरस्वती के संगम में उन्हें स्नान करने को प्रेरित करने के स्थान पर वोटों के सौदागर राजनीतिज्ञ दल उनकी अनुनय-विनय कर उन्हें अलगाव की राह पर चलने को ही प्रोत्साहित कर रहे हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में अपनी भारत भूमि में राष्ट्रीय चुनावों का महायज्ञ अथवा चुनावी महाभारत प्रारम्भ हो रहा है।

अब चुनाव की रणभूमि धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र में युयुत्सु आमने सामने खड़े हैं। और देश के पचास करोड़ से भी अधिक मत दाताओं को यह निर्धारित करना है कि एक लघु से अंतराल को छोड़कर इस देश की सत्ता का सतत संचालन करती आ रही कांग्रेस को ही वे सत्ता में लौटने का कानूनी और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नैतिक अधिकार प्रदान करते हैं या फिर ऐसे विपक्ष को स्वीकार करते हैं, जो सतही तौर पर तो योग्य एवं नैतिक विकल्प लगता है फिर भी बंटा हुआ सा है। अठारह से इक्कीस वर्ष की आयु के नए मतदाताओं को भी इस चुनाव में अपनी सारगर्भित भूमिका निभानी है। अब मतदान में लगभग पन्द्रह दिन ही शेष रह गए हैं। हम तो एक ही बात निश्चय के साथ कह सकते हैं कि अखाड़े में डटे सत्तापक्ष और विपक्ष में से जो भी चित्त होगा, वह प्रतिद्वन्दी के दाव से नहीं बल्कि अपने दौर्बल्य से ही होगा। अन्तर मात्र इतना ही है कि यदि विपक्ष की विजय होती है तो कुछ दिनों तक उसकी नैतिक विजय कही जायेगा। यदि सत्ता पक्ष कांग्रेस ही फिर विजयी होती है तो वह दावा करेगी कि पिछले दो वर्षों में उसके विरुद्ध लांछनों का जो अम्बार लगा था जनता ने उसे तार-तार कर दिया हैं। उस स्थिति में स्वतन्त्र भारत का वही शाश्वत विरोधाभास भी एक बार पुनः उजागर होगा कि इस देश की जनता पूरे पांच वर्ष तक कांग्रेस को कोसती रहती है। परन्तु मत-पेटी तक पहुंचते-पहुंचते क्षम्य और करुणा अथवा दया और उदारता की जैसे परम्परा सी निभाकर मतदान करती है।

इस चुनाव में उतरे सभी पक्ष स्वयं को दूध का धुला और प्रतिद्वन्दी को महापातकी सिद्ध करने में धरती आकाश एक कर रहे हैं। चुनाव घोषणा होते ही इस कुरुक्षेत्र में भाषण शूरों की पौबारह हुई है। आकाशवाणी, दूर-दर्शन, तांत्रिकों, ज्योतिषियों, चुनाव पंडितों, धन कुबेर और राजनेताओं का धन-गर्जन भी वायुमंडल में गूंज रहा है, तथा चुनाव प्रचार बन्द होने तक गूंजता रहेगा। इस चुनाव महासभा में लगभग २१५ राजनीतिक दलों ने निर्वाचन आयोग के समक्ष पंजीकरण हेतु आवेदन किया। प्रत्येक दल ने धर्म निरपेक्षता, लोकतन्त्र और समाजवाद के संवैधानिक सिद्धांतों में आस्था प्रकट की अनिवार्य शर्त भी निभाई है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि जब ये सभी दल एक ही विचारधारा को मानने वाले हैं तो कोई भी सत्ता में जाय, वह कोई भी ठोस नीतिगत परिवर्तन नहीं ला पायेगा। "धर्म निरपेक्षता" को यदि "पंथ निरपेक्षता" के रूप में व्यवहारित किया जाय तो हमारा कोई मतभेद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं रहेगा। क्योंकि हम जिस हिन्दू राष्ट्रवाद के पक्षधर हैं-वह तो मजहब, पंथ और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर है। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर किसी वर्ग विशेष का तुष्टिकरण इस मूल अवधारणा के ही सर्वथा विरुद्ध है। हम इन निर्वाचनों में यह तथ्य स्पष्ट देख रहे हैं कि सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों के ही नेता गण वोटों की भीख मांगने के लिए उनके घरों पर सिजदे करने की होड़ लगा रहे हैं। जो स्वयं तो सगर्व भारतीय कहने में भी सकुचाते हैं और अपने अनुयायियों को भी इसके लिए उकसाते हैं कि "राष्ट्रहित की तुलना में भी उनका साम्प्रदायिक हित (?) ही सर्वोपरि है।"

यह भी विचित्र ही विडम्बना है कि रामजन्म भूमि प्रकारण में विरोध करने वाले तो जनता दल और कांग्रेस (इ) दोनों में ही ससम्मान स्थान पाते हैं। जबकि इस देश की नारी को "जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" अर्थात् "माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी महान है" का उद्घोष करने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम राम की गौरव-गरिमा को अक्षुण्ण रखने के पक्षधर हिन्दू राष्ट्रवादी साम्प्रदायिक घोषित कर अछूत माने जाते हैं।

इस जटिल परिस्थिति में भी इस देश के प्रति निष्ठा, आस्था, और श्रद्धा रखने वाले राष्ट्रभक्तों को इस प्रश्न पर भी गंभीरता से विचार करना होगा, कि नई लोकसभा में हिन्दू हितों से सम्बन्धित किसी भी प्रश्न पर अपनी बात बेबाक रूप से कहने वाले कुछ लोग आ सकें। क्योंकि सशक्त और न्यायसंगत मुद्दे पर भी सक्षम वकील के न मिल पाने पर विजय पाना कठिन हो जाता है। जबकि सशक्त वकीलों के बल पर अनेक स्थितियों में दोषी भी बरी हो जाते हैं।

अतः हमारा राष्ट्र के प्रबुद्ध मतदाताओं से आह्वान है कि वे भावनाओं में नहीं बहते हुए राष्ट्र के उज्जवल भविष्य की कामना को साकार करने के लिए ही अपने वोट का उपयोग करें। अपने क्षेत्र के प्रत्याशियों को उपरोक्त कसौटी पर कसकर ही अपने कर्तव्य का निर्धारण करें। राष्ट्र हितार्थ ऐसे प्रत्याशियों को ही अपना समर्थन दें जो मजहब और सम्प्रदाय तथा दलगत हितों पर देश की राष्ट्रीयता को प्रमुखता दें। जो इस देश को अपनी मातृ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह अपना विश्वास अटल है ।

क्या तम फिर से
जीत पाएगा
हम से,
प्रश्न यही दिन रात
व्यथित करता है,
जय के प्राणों पर
संकट आए
तो कौन नहीं
चिन्तन करता है ।
आज देश की सीमाओं पर
धर्म प्रचारक
घूम रहे हैं
आग लगाते,
उसे बुझाना,
एक समस्या बन बैठी है
काल बली है,
किन्तु कहीं हम भी तो
छलना ग्रस्त नहीं बन बैठे,
सोच रहे क्या ?
मृत्यु निमन्त्रण !
बाट देखते,
दूर पार से हिमगिरि ऊपर
क्रास नहीं तुमने देखा है ?
राम कृष्ण से
क्या सीखा है ?
जंगल-जंगल
आग लगी हैं
घर-घर पंछी डोल रहे हैं
सारी गांठे खोल रहे हैं ।
राम कृष्ण अस्तित्व
मिटाकर
ईसा-ईसा बोल रहे हैं ।
बोल रहे हैं । वे
अन्धकार के बेटे
पाप समेटे,
विषधर बनकर
छा जायेंगे,
और हम यूं ही
अपने घर में
मूक बने से
मर जाएंगे—
हिन्द देश की
सारी जनता,
कायरता को धर्म समझ कर
अपना सब अस्तित्व मिटाकर
विष पी लेगी ·· ···
सोच रहा हूँ···—
युद्ध छिड़ा है,
क्रास-ओ३म् में,
जीत क्रास की होगी,
गंगा का जल—
पीने वालो ·······

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कृष्ण राम के पहरेदारो,
कहाँ गया अभिमान तुम्हारा
कहाँ शेष अस्तित्व तुम्हारा
छल से, बल से
शिवा के कुटिल अस्त्र से
वो जीतेंगे·······—
नहीं-नहीं-नहीं-
प्रलय निमन्त्रण
हमको है स्वीकार नहीं।
हम जागेंगे
हम जीतेंगे।
सत्य हमारा
अणुबम होगा,
नष्ट सभी अज्ञान करेगा ?
और
उन्हें भी राम-कृष्ण का
पावन अमृत
पीकर भारत
विदा करेगा।
हिमगिरि पर
त्रास नहीं लगने देंगे
वहां कलश ही
पावन होकर
पुनः प्रतिष्ठित
होगा
विजय सत्य की
निश्चित होगी
होगी-
यह अपना
बिश्वास अटल है।

वर्तमान राजनीति

धर्मनिरपेक्षता के प्रवाह में आगे-आगे रहने की दौड़ भारतीयता को नष्ट करने की सीमा तक जा पहुंची है। रूस-चीन भक्त, देश के बँटवारे के पक्षधर, हिन्दी के दुश्मन सभी एक जुट होकर राजनीति के सूत्रधार बन रहें हैं।

एक स्वर से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को कोसना एक फैशन सा बनता चला जा रहा है। मुसलमान-ईसाई-सिख चाहे जो रवैया अपनाएँ बोलने वाला तो कोई नहीं किन्तु आर० एस० एस० के विरुद्ध बोलना देश-भक्ति बन गई हैं।

इस संगठन से हमारा कोई संबंध कभी नहीं रहा, किन्तु फिर भी हमारा यह निश्चित मत है कि केवल यही एक संगठन आज देश में ऐसा है जो भारत की महान् गरिमा का संरक्षक बन सकता है। (शेष पृष्ठ १२ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समायिक विचार

दंगे और राष्ट्रद्रोह

सम्पूर्ण देश की निगाहें आज दो मुद्दों की ओर उठी हुई है। एक है राम जन्मभूमि पर शिलापूजन का और दूसरा चूनाव का। एक मुद्दे की सफलता इस देश के लोगों का अपने राष्ट्र की संस्कृति के प्रति अनन्य निष्ठा और भक्ति से सम्बन्धित है तो दूसरे की सफलता भ्रष्टाचार और अन्याय के विरूद्ध जनता का उमड़ता आक्रोश !

अपनी इस सरकार को देखें, तो यह किसी भी मायने में अंग्रेजी सरकार से कम नहीं है। अपने इस अंग्रेजी चरित्र को यह 'मेरा भारत महान्' जैसे नारों के पीछे छिपा कर देश की जनता की आंखों पर पट्टी बांधने की कोशिश करती है। इसी के साम्राज्य में 'खादी फैशन की वस्तु बनी है और फैशन के मोड़ पर दूसरों से आगे निकल गई है। इसी सरकार कुकुरमुत्तों की तरह हिन्दुस्तान में अंग्रेजी स्कूलों की बाढ़ ला दी है। महिलाओं की इज्जत नीलाम करने और उन्हें भ्रष्टाचार की लत डलवाने के लिए इसी सरकार ने पंचतारा होटलों और क्लबों की नुमायश-सी लगा रखी है। गाँधी टोपी के नीचे छिपे इसके अंग्रेजी दिमाग ने ही गांव-गाँव में शराब की दुकानें खुलवा दी हैं। इसी सरकार की छत्रछाया में लोगों के विदेशी बैंक के बैलन्सों का बिस्तार हुआ है।

अंग्रेजी सरकार ने सदैव भारतीयों के साथ दुरंगी चालें चलीं—चाहे बंगाल का विभाजन हिन्दू-मुसलमानों के बीच एक न पटने वाली खाई यदि किसी ने खींची तो वह अंग्रेजी सरकार ही थी। दोनों की पीठें थपथपाती थी वह। कभी न भरने वाले घाव दिए हैं। अंग्रेजी सरकार ने भारत वर्ष को हमारी यह सरकार भी उसी के नक्शे कदम पर चल रही है। नेहरू जी ने जिस अंग्रेजी संस्कृति को अपनाने का जिम्मा लिया उसे हिन्दी के उत्तराधिकारी निभाते आ रहे हैं।

दंगे किसकी देन हैं ? इस प्रश्न को इसा मद्देनजर देखना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कभी आक्रामक नहीं रहे और न ही उनकी संस्कृति और इतिहास में ऐसे उदाहरण हैं। हिन्दुओं की अतिसहिष्णुता स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। परन्तु जो अपनी आक्रमकता के चलते अरब से हिन्दुस्तान तक आ धमके, जिनकी आक्रमकता इतिहास के पन्नों में व्याप्त है, जिनकी आक्रामकता ने पाकिस्तान को जन्म दिया और जो आज भी अपने आपको महमूद गजनवी, मुहम्मद बिनकासिम, मुहम्मद गोरी जैसों का वंशज मानते हैं, यह हमारी सरकार को दिखाई नहीं देता। यदि आत्मरक्षा का नाम ही आक्रामकता है, तो हिन्दू वास्तव में आक्रामक जीव है।

जिस राम जन्मभूमि से हिन्दुस्तान के अधिकांश नागरिकों की भावनाएँ जुड़ी हों जिस राम का नाम इस देश के लिए गर्व का विषय हो, जिस देश की संस्कृति राम के नाम को लेकर जीवित बची हो, उसका पक्ष लेने वालों को साम्प्रदायिक करार देने वाले कौन हो सकते हैं ? जाहिर है, वे ही जो अपनी नसों में अब भी विदेशी खून बहता पा रहे हों। दंगे भी उन्हीं की देन है। असहिष्णुता का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है कि 'भारत माता' और राम की जय के नाम से लोग भड़क उठते हैं। कौन हैं ये लोग ? क्या इन्हें देशभक्त कहा जाएगा ? एक मस्जिद के पीछे दंगों में सैकड़ों की जानें ले लेने वालों को क्या वे सैकड़ों मस्जिदें अभी भी नहीं दिखाई देतीं जो मन्दिरों के ऊपर खड़ी हैं।

सरकार की दुरंगी चाल है कि वह मुसलमानों की पीठ थपथपा रही है— यदि हिन्दू नहीं मानें, तो वह बल प्रयोग कर सकती है। हिन्दुओं से कहती कि यदि ताहस तो यह सब कर जाओ, हमने तो ताला खुलवा दिया। सरकार क्यों नहीं कहती कि यह इस देश की अस्मिता का प्रश्न है, राम इस देश के गौरव हैं। अतः राम जन्मभूमि का निर्माण होना ही चाहिए। सरकार मानती है कि इन दोनों के लड़ने पर उसे बंदरबांट का अवसर प्राप्त होगा। उसके दोनों हाथों में लड्डू हैं। मुसलमानों की सहानुभूति चाहिए इस नपुंसक और मक्कार सरकार को, अतः वह खुलकर राम-मन्दिर की वकालत नहीं करती, और उनके दंगों को रोकने का प्रबन्ध नहीं करती। हिन्दुओं को सहानुभूति चाहिए, अतः मुसलमानों को खुश करने की सीमा तक जाकर वह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामजन्म-भूमि के शिलापूजन-कार्यक्रम पर रोक नहीं लगा पा रही है। वोट ! वोट ! वोट ! सरकार की निगाहें सिर्फ यही तलाश रही हैं।

यह मौका भी वह तलाश रही है कि चुनाव की हवा उसके खिलाफ बही तो वह इन्हीं दंगों का सहारा लेकर चुनाव नहीं भी करवा सकती है और इस समय प्राप्त अधिकारों के चलते किसी भी नई जुगाड़ के जरिये शासन करती रह सकती है।

जनता को चाहिए कि वह इन सब चालों से सावधान रहे तथा शान्ति व सावधानी से सरकार को धूल चटाए।

—सिद्धार्थ

(पृष्ठ ९ का शेष)

हिन्दू सो रहे, पर इससे इस महान् जाति की मृत्यु निश्चित है। मुसलमान-ईसाई-रूस चीन के पक्षधरों के विरुद्ध आज एक सबल मोर्चा—संगठन बनाने की आवश्यकता है। विशुद्ध भारतीय आधार पर भारत को माँ मानने वाले एक झंडे के नीचे आकर एक राजनैतिक दल का निर्माण करें—या भारतीय जनसंघ जनता पार्टी छोड़ धर्म-निरपेक्षता का लबादा उतार—भारत में मनु का धर्म राज्य, गांधी के सपनों का राम राज्य स्थापित करने का व्रत ले।

संसद का अधिवेशन वेदमंत्रों से आरंभ हो। भारत की संस्कृति को उभारा जाए और धर्म निरपेक्ष नहीं धर्मराज्य स्थापना का संकल्प हम लें तभी भारत बचेगा।

हम भारत को बचाने का व्रत लें—देशद्रोही प्रवृत्तियों—शक्तियों के विरुद्ध सुदर्शन चक्र उठाएँ—यह समय की माँग है।

जनज्ञान श्रावणी सम्वत् २०२६ (जौलाई १९७९ से)

विचित्र जन्तु-विचित्र बातें

— ईल मछली ४०० वोल्ट तक विद्युत पैदा कर लेती है जो इसके दुश्मनों को अचेत करने के लिए पर्याप्त होती है।

— रानी मधुमक्खी एक दिन में लगभग १५०० अण्डे दे सकती है।

— कंगारू का नवजात बच्चा सिर्फ एक इंच ही लम्बा होता है।

— पेंगुविन ऐसा पक्षी है जो उड़ तो नहीं सकता पर कुशल तैराक है।

— तितलियां स्वाद का आनन्द अपनी टांगों के सहारे भी ले सकती हैं।

— जिराफ तो अक्सर मौन ही रहता है पर इसकी जीभ पूरी डेढ़ फीट लम्बी होती है।

— समुद्री घोड़ा एक ऐसी मछली है जो अपनी दोनों आंखों से एक साथ दो दिशाओं में देख सकती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

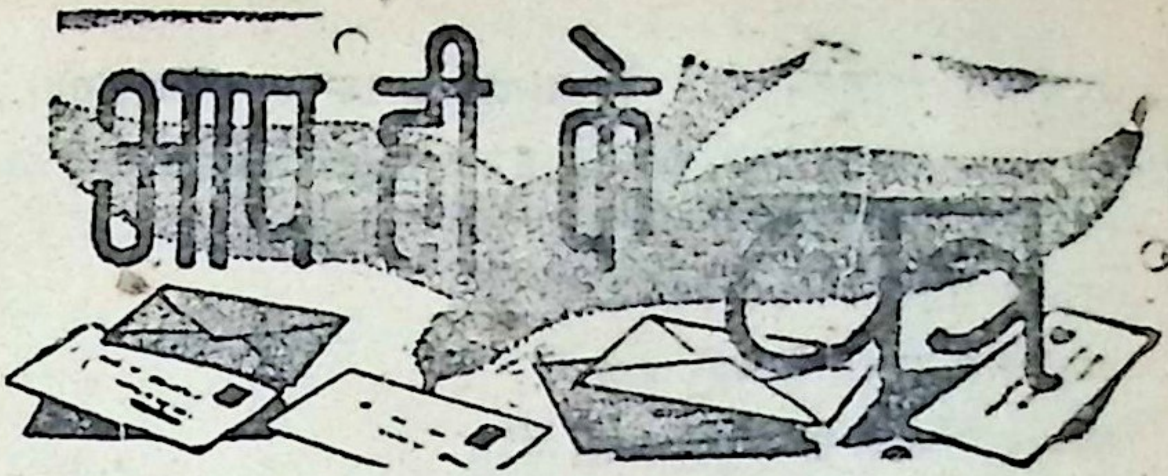

आदरणीया बहन राकेशरानी जी,

यों तो 'जनज्ञान' का प्रत्येक अंक ही संग्रहणीय एवं बार-बार पठनीय हुआ करता है किन्तु इस बार का १६ अक्तूबर १५ नवम्बर का अंक तो बहुत ही अच्छा बन गया है। खास कर मैं यहाँ दो लेखों का नाम लूंगा।

१. दयानन्द-बलिदान, स्वामी जी के अन्तिम दिन एवं उनकी अन्तिम क्रियाओं का सविस्तार वर्णन पढ़ कर ज्ञानार्जन हुआ। जिस धीरता व निश्चलता से स्वामी जी ने मृत्यु का वरण किया उससे उनके पूर्ववर्ती एवं पूर्वज महापुरुषों, रामचन्द्र जी, कृष्ण चन्द्र जी, बुद्धदेव व महावीर स्वामी जी की याद बरबस आ गई। भगवान कृष्ण, भगवान बुद्ध देव तथा भगवान महावीर स्वामी अन्तिम समय तक धर्मोपदेश करते रहे थे उसी प्रकार महाभाग दयानन्द जी भी अविचल भाव से प्रभु गुणानुगान में लगे रहे। अहोभाग्य है हमारे कि हम ऐसे महापुरुषों की सन्तान हैं।

स्वामी जी की ये पंक्तियां विशेष कर गौर तलब हैं। "जब यह जगत ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि की निन्दा से भी नहीं चूका तो मैं क्या चीज हूं।" तथा "उदयपुराधीश (महाराणा जी) से मेरा केवल तीन ही बार मिलना हुआ।"

ये पंक्तियां ऐतिहासिक महत्व की हैं।

दूसरा लेख श्रीयुत राजेन्द्र सिंह जी कृत 'आर्यों का भारत-मूलत्व' एक बहुत ही ज्ञानवर्धक तथा स्थायी महत्व का लेख है जिससे तथ्यों एवं आंकड़ों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुओं की वाहवाही भले ले लें, हिन्दू राष्ट्र का कल्याण नहीं होगा। अब समय की पुकार है कि सभी हिन्दू-हितैषी खुलकर हिन्दू राजनैतिक दल का नाम लेकर जनता से समर्थन देने का आवाहन करें। ऐसा करके ही हम हिन्दू जनता का सही मार्गदर्शन कर रहे होंगे। विश्व-शान्ति के लिए, वैदिक धर्म के उद्धार के लिए, दयानन्द के स्वप्नों का साकार करने के लिए और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लिए, सिर्फ एक ही मार्ग है कि हिन्दू राजनैतिक दल का बिना शर्त समर्थन।

मुझे याद हैं १९४६ व १९४७ में प्रायः सभी मुसलमानों का एक ही नारा था—'हम मुस्लिम' हमारी जमात—मुस्लिम लीग, हमारी मांग—पाकिस्तान इसी तरह आज हिन्दू का भी एक ही घोष हो—'हम हिन्दू—हमारी संस्था 'हिन्दू महासभा'—हमारी मांग हिन्दू राज्य'—जितनी आस्था और लगन से हम इस काम को करेंगे उतना जल्दी हमें इसका परिणाम मिलेगा—यह घोष किसी के विरुद्ध नहीं है यह तो हमारी आत्म-रक्षा के लिए है।

चित्रभूषण, दिल्ली

क्या हिन्दू द्वितीय श्रेणी का नागरिक है ?

४२ वर्ष पूर्व हिन्दुओं के महान बलिदानों के फलस्वरूप देश को स्वाधीनता मिली किन्तु राजनीतिक क्षेत्र में कमजोर एवं दुर्बल प्रवृत्ति के लोगों का वर्चस्व रहा, राजनीतिक क्षेत्र में किन्हीं कारणों से अधिकांश लोगों ने रुचि नहीं ली तथा उदारवादी रवैया अपनाने और तुष्टीकरण की नीति को चलाते रहने के कारण आज अपने ही देश में अनेकों राष्ट्रवादी सज्जन कहने लगे हैं कि हिन्दू की स्थिति द्वितीय श्रेणी के नागरिक जैसी हो गई है जिसकी पुष्टि निम्नलिखित तथ्यों एवं कारणों से हो सकती है :—

(१) सरकार ने कई मन्दिरों का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया लेकिन किसी मस्जिद या चर्च की व्यवस्था में कुछ दखल नहीं किया।

(२) सरकार ने हिन्दू कोड्-बिल में परिवर्तन कर दिया किन्तु मुस्लिम पर्सनल ला में कोई परिवर्तन नहीं किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(३) सरकार ने हिन्दू के लिए बहुविवाह पर प्रतिबन्ध लगा दिया और मुस्लिम को चार विवाह करने की छूट अभी तक कायम हैं।

(४) हिन्दुओं को तीर्थस्थलों पर जाने पर यात्रीकर देना पड़ता है जबकि मुस्लिमों को हज की यात्रा पर जाने पर करों में रियायत दी जाती है।

(५) मुस्लिम एवं ईसाई अपने विद्यालयों में धर्मशिक्षा दे सकते हैं किन्तु हिन्दुओं के विद्यालयों में इस पर प्रतिबन्ध है।

(६) अल्पसंख्यक अपनी इच्छा से विद्यालयों में अध्यापकों की नियुक्ति एवं बरखास्तगी कर सकते हैं किन्तु हिंदुओं के विद्यालयों पर शिक्षा अधिकारी का नियन्त्रण रहता है।

(७) केन्द्र में तथा कई राज्यों में अल्पसंख्यक आयोग बन गए हैं जबकि आवश्यकता हिन्दू आयोगों की थी क्योंकि हिन्दू समाज बुरी तरह बंटा हुआ है।

(८) हिन्दू धर्मप्रकोष्ठ की स्थापना किसी भी पार्टी में नहीं हुई है जबकि अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ कई पार्टियों में बने हुए हैं और सक्रिय होकर अल्पसंख्यकवाद को बढ़ा रहे हैं।

(९) रोजा-अफ्तारी की दावत राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री तथा अन्य मन्त्रीगण देते हैं किन्तु नवरात्रियों में प्रसाद— ग्रहण-कार्यक्रम का आयोजन आज तक किसी ने नहीं किया है।

(१०) गोपालन केन्द्रों की स्थापना नहीं की गई जबकि मछली-पालन और मुर्गीपालन पर जोर दिया जा रहा है।

यदि हिन्दू में राजनैतिक जागृति नहीं आई, तो हिन्दू की स्थिति तृतीय श्रेणी के नागरिक जैसी हो जाने की सम्भावना है क्योंकि कुर्सी प्राप्त करने के लिए बढ़-चढ़कर वायदे किए जा रहे हैं। हिन्दुओं को प्रथम श्रेणी का नागरिक बनने के लिए हिन्दू संगठनों को मजबूत बनाना चाहिए।

इन्द्रदेव, बुलन्दशहर

उर्दू से प्रदेश की एकता को खतरा

हिन्दू महासभा बुलन्दशहर की बैठक उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उर्दू को प्रदेश की द्वितीय राजभाषा बनाने के लिए विधान सभा में बिल पेश किए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाने के निश्चय को दुर्भाग्यपूर्ण, असंवैधानिक और अनुचित बताते हुए दुःख व रोष प्रकट किया गया और प्रस्ताव पारित करते हुए मांग की गई कि निम्नलिखित कारणों के आधार पर उर्दू को प्रदेश की द्वितीय राजभाषा नहीं बनाया जा सकता है :—

(१) संविधान के अनुसार पूरे राज्य में किसी भाषा को द्वितीय राजभाषा नहीं बनाया जा सकता है बल्कि कुछ जिलों में ऐसा किया जा सकता है।

(२) संविधान के अनुसार ३० प्र०श० से अधिक संख्या होने पर जिले में द्वितीय राजभाषा बनाई जा सकती है अतः यह व्यवस्था कुछ जिलों में ही की जा सकती है पूरे राज्य में नहीं।

(३) उर्दू के आने से प्रदेशवासियों में एकता की भावना कम होगी, अलगाववाद की भावना बढ़ेगी जिसके कारण भविष्य में प्रदेश का बंटवारा हो सकता है।

(४) उर्दू के द्वितीय राजभाषा बनने से प्रदेश सरकार को करोड़ों रुपये का खर्च बढ़ जाएगा क्योंकि सरकारी घोषणाएं, विज्ञप्तियाँ, सूचना, फार्म, उत्तर आदि उर्दू में भी दिए जाएंगे।

(५) प्रदेश के छात्र/छात्राओं पर उर्दू को पढ़ने का बोझ और बढ़ जाएगा।

अतः सरकार कांग्रेस (आई), जनता दल आदि से मांग की जाती है कि प्रदेश की गरीबी को दूर करने के लिए, रहन-सहन का स्तर ऊंचा करने के लिए, पैसे को विकास कार्यों में लगाया जाए तथा एक प्रदेश में दो-दो भाषाएं बनाकर अलगाववाद और साम्प्रदायिकता को बढ़ावा न दिया जाए।

—महामन्त्री, हिन्दू महासभा, बुलन्दशहर

श्री बूटासिंह को श्री अशोक सिंहल का खुला पत्र

महोदय,

श्रीराम-जन्मभूमि के विवाद के सम्बन्ध में विश्व हिन्दू परिषद् एवं श्रीराम जन्मभूमि पर मुक्ति यज्ञ समिति ने समय-समय पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से रखा है। जिन प्रमुख विषयों को इस सन्दर्भ में उभार कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विचार के लिए शासन की ओर से समाचारपत्रों में प्रस्ताव आया है, उनके सम्बन्ध में परिषद एवं श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के प्रतिनिधि मण्डल के कुछ विचार आपके समक्ष रखे जा रहे हैं।

श्रीराम जन्मभूमि के बारे में हाईकोर्ट की विशेष पीठ के निर्णय को स्वीकार किये जाने के सम्बन्ध में हमारा स्पष्ट कहना है कि यह निर्णय न्यायालय की परिधि के बाहर है। श्रीराम जन्मभूमि का निर्णय हिन्दू समाज की धार्मिक आस्था एवं विश्वास का विषय है। विश्वासों को बदलने का कार्य हमारे संविधान ने न्यायालय के सुपुर्द नहीं किया है। यदि इस पर कोई व्यवस्था देने का अधिकार रखते हैं, तो वह हिन्दू समाज के धर्माचार्य और धर्मग्रन्थ हैं। शताब्दियों से हिन्दू समाज उस स्थान की पूजा-अर्चना जन्मभूमि के रूप में करता आया है और आज भी कर रहा है। समाज के धर्माचार्यो एवं सन्तों ने एक मत से उस स्थान को जन्मस्थल घोषित किया है।

कश्मीर में "हजरत बल' स्थान पर बाल के खो जाने पर इस्लाम धर्म के धर्मगुरुओं का निर्णय ही माना गया था। किसी न्यायालय को यह कार्य नहीं सुपुर्द किया गया। इसी प्रकार ईसाई धर्म में हजरत ईसा-मसीह का जन्म एक कुमारी कन्या के गर्भ से हुआ, यह आस्था एवं विश्वास का विषय है, किसी न्यायालय द्वारा निर्णय लेने का विषय नहीं। इसी प्रकार हमारे धर्मग्रन्थ, हमारे धर्मगुरु हमारे समाज ने इस स्थान को श्रीराम की जन्मभूमि माना है। अतएव यह प्रतिनिधि-मण्डल इस विषय को न्यायालय की परिधि से बाहर मानता है। न्यायालय के निर्णय लेने का कोई भी प्रभाव हिन्दू आस्था पर नहीं पड़ सकता।

मन्दिर के शिलान्यास का कार्यक्रम जो ९-११-१९८९ के लिए प्रस्तावित है, शास्त्रीय दृष्टि से यह प्रातः १०.०० बजे उत्खनन से प्रारम्भ होगा और १० नवम्बर, १९८९ को दोपहर १.३५ पर पुष्पांजलि कार्यक्रम होगा। शिला-न्यास का विधान सिंहद्वार पर ही करने का है। शिलान्यास का कार्यक्रम नियंत्रित रूप से सम्पन्न किया जायेगा। हिन्दू समाज का संघर्ष तो जन्मभूमि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के गर्भगृह के लिए है, यदि यह गर्भगृह का स्थान ६ नवम्बर, १९८९ तक हिन्दुओं को प्राप्त नहीं होता तो जन्मभूमि के लिए संघर्ष चलेगा।

(३) तथाकथित मस्जिद को यथावत् स्थान पर बने रहने देना और चबूतरे के पास मन्दिर निर्माण के प्रस्ताव को यह प्रतिनिधि मण्डल स्वीकार नहीं करता है। राष्ट्रीय स्मारक का विचार हिन्दू समाज एवं इस प्रतिनिधि-मण्डल को पूर्णतः अमान्य है। राष्ट्रीय स्मारक एक राष्ट्र एवं समाज के गौरव का प्रतीक होता है। भारत के पच्चासी प्रतिशत हिन्दू समाज की पूज्य तीर्थस्थलों श्रीराम-जन्मभूमि पर खड़ी की गई यह इमारत राष्ट्रीय कलंक का चिन्ह है, न कि गौरव का ? अतएव हिन्दू समाज इसको कभी स्वीकार नहीं करेगा और यदि किसी आदेश से यह थोपा गया तो इसका हिन्दू समाज में विरोध होगा। तथाकथित मस्जिद को ससम्मान स्थनान्तरित करने का प्रस्ताव इस प्रतिनिधि-मण्डल को पूर्णतः मान्य है।

जहाँ तक अल्पसंख्यकों के कल्याणकारी कार्यक्रमों का विषय है, इसके बारे में प्रतिनिधि मण्डल का यह मत है कि इन कार्यक्रमों की आड़ में जो अल्पसंख्यकों की तुष्टीकरण की नीति छिपी है, वह राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध हो रही है। बजाय इसके कि उन्हें शिक्षित कर राष्ट्र की मुख्य धारा में लाया जाए, उनको विशेष सुविधाएं देकर अलग रखे जाने की नीति घातक है और उसमें उनका भी हित नहीं है। देश में चारों ओर दंगे, अलगाववाद, भय आदि इसी कारण व्याप्त है।

अशोक सिंहल

सदस्य, श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति

रूस और भारत

आदरणीय,

जब सोवियत संघ जैसा "नास्तिक" देश द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हिटलर द्वारा तोड़ी गई देवताओं की प्रतिमाएं "स्वयं" इसलिए पुनंस्थापित कर सकता है कि मूर्तियां टूटने से देश के आत्मसम्मान को ठेस पहुंची थी तो "हिन्दुस्तान" तो विश्व में सबसे बड़ा आस्तिक देश भी है।

—जैवेन्द्र कुमार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

बिहार राज्य आर्य समाज प्रतिनिधि सभा एवं पटना जिला आर्य सभा के तत्वावधान में पटना के एतिहासिक स्थल-श्रीकृष्ण स्मारक हाल में विशाल वैदिक धर्म (आर्य) महासम्मेलन, जो ९ एवं १० सितम्बर १९८९ को सोल्लास सम्पन्न हुआ, के राष्ट्र सम्मेलन, महिला जागृति सम्मेलन, हिन्दू एकता सम्मेलन, एवं सामाजिक न्यायसम्मेलन का उद्घाटन क्रमशः आचार्य भगवान देव, श्रीमती प्रभावती गुप्त, प्रो० बलराज मधोक, श्री भोला प्रसाद सिंह ने किया। सामाजिक न्याय सम्मेलन के मुख्य वक्ता के रूप में स्वामी अग्निवेश ने हरिजन-गिरिजन, पिछड़ा और महिलाओं की क्रांति को तेज करने तथा किसान मजदूर आन्दोलन चलाने की प्रबल आवश्यकता पर बल दिया। तथा न्याय क्रान्ति को प्रबल रूप देने तथा आर्य समाज को नयी दिशा प्रदान करने के उद्देश्य से राज्य स्तरीय बुद्धिजीवी सम्मेलन ८, ९ एवं १० दिसम्बर ८९ को पटना में आयोजित करने का निर्णय लिया गया। प्रो० बलराज मधोक एवं महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष डा० श्याम नारायण आर्य, ने भारत के समस्त हिन्दुओं को एक संगठन सूत्र में बान्ध कर अराष्ट्रीय विघटनकारी तत्वों के षड्यन्त्रों के विरुद्ध जंग छेड़ने और आगामी निर्वाचन में राष्ट्रवादी दलों को वोट देने का आह्वान किया।

इस सम्मेलन में निम्नलिखित विद्वानों ने विचार प्रकट किए आचार्य वेदभूषण, पं० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी, पं० प्रेमानन्द शास्त्री, पं. नवलकिशोर शास्त्री, पं. सीताराम निर्मय, पं. रामस्वरूप शास्त्री, पं० सत्यव्रत वानप्रस्थ, पं० दयानन्द सत्यार्थी, पं० व्यास नन्दनशास्त्री, पं० हरिदास ज्वाल पं० मोहन सिंह, पं० रामचन्द सिंह, क्रान्तिकारी, पं० सीताराम आर्य, पं० शिवधर आर्य तथा श्री धर्म देव प्रसाद।

सम्मेलन में सैकड़ों शिक्षार्थियों को संस्कार-शास्त्री की उपाधि दी गई, एवं दर्जनों तपस्वियों का सम्मान किया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अखिल भारतीय स्वतन्त्रता-सेनानी-सम्मेलन का उद्घाटन

पं० धर्मवीर आर्य झंडाधारी बताया है कि ने सारनाथ मे १४ अक्टूबर को स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की उपस्थिति में श्री चिन्तामणि पाणिग्रही राजपाल की अध्यक्षता में वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना और गायत्री मंत्री के पाठ के साथ उन्होंने अपना उद्घाटन भाषण दिया।

उन्होंने एक प्रस्ताव प्रस्तुत कर के भारत सरकार से यह मांग की है कि सरकार बचे हुए भारत को तत्काल हिन्दू राष्ट्र घोषित करे तथा गौ-हत्यारों को मौत की सजा दें। उन्होंने आरोप लगाया कि उत्तर प्रदेश सरकार हिन्दू हितों की हत्या करके उर्दू और अरबी का प्रचार कर रही है।

उन्होंने भारत सरकार के कर्णधारों से अनुरोध किया कि वोटों के लिए भारत माता के हत्यारों के हाथों बिकने का महापाप न करें। हिन्दू-हितों के विरोधियों को हिन्दू-जनता कदापि वोट न दें। अखिल विश्व में रामराज्य स्थापित होने की आज प्रबल प्रतीक्षा हैं। प्राचीन काल में बुद्ध मंदिरों को मुगल बादशाहों ने सारनाथ में तोड़ा था जो सात सौ पचास थे इस बुद्ध मंदिर सारनाथ का निर्माण भारत सरकार करें। इस अखिल भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी सम्मेलन में वेदपथिक जी ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि भारत के हितों के विरोधियों की नागरिकता भारत सरकार समाप्त करे।

पं० क्षितीश जी का सम्मान

विख्यात पत्रकार, चिंतक, लेखक, स्वतन्त्रता-संग्राम-सेनानी पं० क्षितीश वेदालंकार का १५ अक्टूबर को अजमेर में अभिनन्दन किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि के पद से बोलते हुए दैनिक हिन्दुस्तान के समाचार सम्पादक एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री विश्वमित्र उपाध्याय ने कहा : कि देश के बड़े अखबारों को पूंजीपतियों द्वारा खरीद लिए जाने के कारण आज पत्रकार आजाद नहीं है। वह मालिकों के इशारे पर चलने लगा है।

पहले पत्रकारिता सेवा भावना व मिशन के रूप में की जाती थी, जबकि अब अखबारों के मालिक, राष्ट्र, समाज व पत्रकारिता के मूल्यों पर ध्यान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देने की बजाए अपने निजी उद्योग धंधों व कल-कारखानों के हित में काम करते हैं। उन्होंने प० वेदालंकार को राष्ट्र, समाज और भाषा के संकल्पित व्यक्तित्व वाला पत्रकार कहा। उन्होंने पत्रकारों से जनोन्मुखी अखबार निकालने की अपील की।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए भारत सरकार के प्रकाशन विभाग के निदेशक डॉ० श्याम सिंह 'शशि' ने पत्रकारों से गुजारिश की कि वे समाज के नैतिक पतन का मुकाबला अपनी पत्रकारिता के जरिए करें।

समारोह में सुभाष विद्यालंकार, प्रो० धर्मवीर, रासासिंह, बाबूराम शास्त्री,, वीरेंद्र सिंह पंवार आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस मौके पर बोलते हुए 'पंजाब तूफान के दौर से' के लेखक क्षितीश पं० वेदालंकार ने कहा कि पत्रकारिता में आवारगी शामिल है, क्योंकि इसके बिना जिज्ञासु नहीं हो सकता।

कार्यक्रम का आयोजन 'नया युगपुरुष' की ओर से किया गया। इस अवसर पर डॉ० शशि ने कहा कि पं. वेदालंकार को दुशाला ओढ़कर उनका अभिनन्दन किया। एक अभिनन्दन ग्रंथ का विमोचन भी किया गया। प्रारम्भ में आर्य बालिका विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत गाया। अन्त में 'नया युग पुरुष' परिवार की ओर से पत्रकार वीरेन्द्र आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन अनिल लोढ़ा ने किया।

बधाई

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट एवं गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतार पुर जालन्धर (पंजाब) के वार्षिकोत्सव पर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में ३० सितम्बर को आयोजित "वेद अष्टाध्यायी व संस्कारविधि कण्ठस्थीकरण मौखिक परीक्षाओं" में वेद एवं मूल अष्टाध्यायी गुरुकुल प्रभात आश्रम अग्रणी रहा। यजुर्वेद कण्ठस्थकर्त्ताओं में आर्यजगत् में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर २००० रु० पुरस्कार के साथ ब्र० शिव शंकर निगमालंकार को 'यजुर्वेदी' की उपाधि से सम्मानित किया गया एवं मूल अष्टाध्यायी के कण्ठस्थकर्त्ताओं में पाँच-पाँच सौ रुपये पुरस्कार के साथ ब्र०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योगेन्द्र कुमार, ब्र० यज्ञदेव एवं ब्र० विद्याबन्द को 'पाणिनीय' उपाधि से अलंकृत किया गया।

इन योग्य ब्रह्मचारियों ने सवाग्रेसर रहकर गुरुकुल एवं मेरठ को गौरवान्वित किया अतः इन्हें अनेकश- हार्दिक वर्धापन प्रदान करते हैं।

स्नातक-मण्डल, गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ

चुनाव

आर्य समाज मन्दिर, महर्षि दयानन्द मार्ग, अहमदाबाद-२२ की वार्षिक साधारण सभा दि. १७-९-८६ को सम्पन्न हुई, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का सर्वसहमति से निर्वाचन किया गया :—

प्रधान—श्री पूरनचंद जी नागर ; उपप्रधान—श्री रामेश्वर लाल जी लाहोटी, श्री हरीशचंद्र जी श्रीवास्तव ; मंत्री—श्री बलदेव राज जी सेठ, उपमंत्री—श्री भरत जी अग्रवाल, श्री सुरेश भाई सेठ ; कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र जी अग्रवाल ; पुस्तकाध्यक्ष—श्री जयन्तिभाई राजदेव ; प्रचार-मंत्री—श्री जेठाभाई आर्य, श्री रामचन्द्र भाई पंचाल।

पुस्तक समीक्षा

श्रीहिन्दुभूमिनुत्यष्टकम्—अष्टश्लोकात्मक यह कृति श्री आनन्दतीर्थ शर्मा की भावप्रवण लेखनी से निःसृत है। भारतमाता अर्थात् हिन्दुभूमि की स्तुति में अवतारित यह रचना प्रवाहमयी काव्यधारा उत्कृष्ट उदाहरण है।

पुस्तक का स्तरीय आंग्लभाषा में प्रवाहपूर्ण अनुवाद श्री पूर्णप्रज्ञपर्था ने किया हैं (अच्छा होता यदि आर्यभाषा में भी अनुवाद हो जाता)। पुस्तक की प्रशंसा में सर्वश्री गुरु गोलवलकर जी, हरगोविन्द मिश्र, श्री गलगली रामाचार्य, गोपाल शास्त्री, दर्शन केसरी इत्यादि की सम्मतियां उद्धृत की गई हैं।

पुस्तक का मूल्य २.१० रु० है तथा प्राप्तिस्थान हैं—श्री पाणिनि महाविद्यालय, डाकघर-आत्मकूर (कुरनूल जिला), आन्ध्र प्रदेश-५१८४२२ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्प्रदायवाद और अलगाववाद के असली अपराधी कौन ?

—युगल किशोर चतुर्वेदी

पिछले कई वर्षों से प्रायः समूचे देश में जो साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं, और अलगाववाद पनप रहा हैं, उसके लिए शासक दल के प्रमुख नेता प्रायः हिंदू समुदाय के भारतीय जनता पार्टी, विश्वहिंदू परिषद्, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तथा शिव सेना को दोषी मानकर प्रतिदिन उनकी ही भर्त्सना करते रहते हैं परंतु सम्प्रदायवाद और अलगाववाद का आरम्भ कब और कैसे तथा किसके द्वारा हुआ इस पर कभी विचार नहीं किया गया और न उन तत्वों का नाम लिया गया है, जिन्होंने यहाँ सम्प्रदायवाद का विष वमन किया और अलगाववाद की आग में देशवासियों को झोंका।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि जिस समय अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस ने विदेशी शासन से देश को मुक्त कराने के लिए यहाँ राष्ट्रीय एकता का नारा बुलन्द किया था, तब धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर दो राजनीतिक दल उभर कर आये थे। उनमें से एक थी हिंदू महासभा जिसके तत्कालीन मुख्य नेता थे वीरविनायक दामोदर सावरकर और दूसरे भाई परमानन्द दूसरा दल था मुस्लिम लीग, जिसके नेता थे, मिस्टर अली जिन्ना।

इनमें से जहाँ तक हिंदू महासभा के नेताओं का सम्बन्ध है, वे तो उतने ही उत्कट देशभक्त थे, जितने धर्मपरायण। भला कोई वीर सावरकर की देश के लिये की गई कुरबानी और अनेक वर्षों तक सही काले पानी की यातनाओं को भूल सकता है, जितना तप, त्याग और कष्ट सहन करने का उदाहरण उन्होंने उपस्थित किया था, अन्य बहुत कम लोगों ने किया है। इसी प्रकार भाई परमानन्द जिन्होंने कई वर्षों तक निरन्तर काले पानी की जेल का दंड भोगा था, उसकी भी तुलना बहुत थोड़े लोगों से ही की जा सकती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने और उनके अन्य अनुयायियों ने कभी देश के विभाजन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अथवा दो राष्ट्रों के सिद्धांत की कल्पना भी नहीं की थी। वे आजीवन भारत माता के अनन्य उपासक रहकर सदैव उसी की सेवा करते रहे।

इसके विपरीत श्री जिन्ना साहब ने कट्टर मुसलमानों की संस्था मुस्लिम लीग को पनपाकर उसे इतना विराट और विशाल बनाया कि वह भारत को अपना देश न मानकर साम्प्रदायिक आधार पर पृथक पाकिस्तान राष्ट्र की मांग कर बैठी। इसके लिए उन्होंने सनें ४५-४६ में ऐसा जेहाद छेड़ा कि डायरेक्ट ऐक्शन (सीधी कार्यवाही) का नारा देकर मुस्लिम बहुल प्रदेशों में नृशंस नरसंहार आरम्भ कर दिया। अन्त में उनकी उस सम्प्रदायवादी और अलगाववादी नीति के आधार पर अंग्रेजों ने उनको पाकिस्तान के पृथक स्वतन्त्र राज्य की मान्यता दे दी और विवश होकर खान अब्दुल गफ्फार खां तथा महात्मा गांधी के अतिरिक्त परिस्थिति से बाध्य होकर अन्य कांग्रेसी नेताओं ने भी उसको इस आशा से स्वीकार कर लिया था कि मुस्लिम समुदाय का अलग राष्ट्र बन जाने से अब इस देश में सम्प्रदायवाद और अलगाववाद का अंत हो जाएगा।

देश के विभाजन के फलस्वरूप दोनों देशों में जैसी नृशंस हत्याएं, लूट-पाट, अपहरण और बलात्कार की घटनाएं घटित हुई थीं, उनका स्मरण करके अब भी रोमांच हो जाता है, परंतु फिर भी भारतवासियों ने इस विश्वास पर संतोष की सांस ली थी कि अब भविष्य में वैसी हृदय द्रावक घटनाओं की कभी पुनरावृत्ति न होगी और कम से कम मुस्लिम लीग जैसी कट्टर साम्प्रदायवादी पार्टी को यहाँ अपना अस्तित्व बनाये रखने का अवसर नहीं मिलेगा।

परंतु देश के दुर्भाग्य से ऐसा हुआ नहीं, भारत के स्वतंत्र होने और यहाँ जनतंत्र कायम हो जाने पर जो चुनावों का सिलसिला आरम्भ हुआ तो हमारे सत्ता लोलुप शासक दल ने चुनाव जीतकर अपना बहुमत बनाये रखने के लिए उसी मृत प्राय: मुस्लिम लीग को पुन: जीवित करके उसे अपना अभिन्न सहयोगी बना लिया। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस बात से मिलता है कि जब उक्त शासक दल के नेता सम्प्रदायवाद और अलगाववाद को बढ़ावा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देने के लिए हिंदुओं के पूर्वोक्त संगठनों भाजपा, रा. स्वयं से. सं., शिव सेना और विश्वहिंदू परिषद् के नामों का तो उल्लेख करते हैं, परंतु उन्होंने मुस्लिम लीग का नाम आज तक कभी एक बार भी नहीं लिया। इतना ही नहीं, अब जब-जब और जहाँ-जहाँ साम्प्रदायिक दंगे होते हैं, तो उनके लिए भी केवल हिंदुओं की संस्थाओं को ही दोषी ठहराया जाकर उन्हीं के धार्मिक उत्सवों पर पाबन्दी लगाने की बात कही जाती है, तथा उन्हीं के नेताओं को दण्ड देने की धमकी दी जाती है, जबकि दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम तथा अन्य मुस्लिम नेताओं द्वारा चाहे जितने भड़काने वाले भाषण दिए जाए, पर उनके लिए उफ भी नहीं निकालते, बल्कि उनको अल्पसंख्यक कहकर उनके सारे अपराध माफ कर दिए जाते हैं। सरकार की इस नीति का मुख्य कारण हिन्दू समाज का ऐसा कमजोर होना ही माना जाता है कि जिसको आसानी से दबाया जा सकता है। किसी कवि ने ठीक कहा भी है :

यही कहें श्रुति, स्मृति, यहीं सयाने लोग।
तीन दबावत निशक ही, पातक राजा रोग।।

यदि शासक लोगों को इस देश के सभी नागरिकों के प्रति निष्पक्ष न्याय करण है तो ईमानदारी से यह निर्णय करना होगा कि सम्प्रदायवाद और अलगाववाद का असली अपराधी कौन है ? और उसी को उचित दण्ड देना चाहिए।

जो दे सकते हो वह दो

हमारा काम है माँगना इसलिए माँगना कि हम उसे ज्ञान से पूर्ण कर आप ही को लौटा सकें। हम सग्रह के लिए नहीं माँगते। हम दान के लिए, रक्षा के लिए, ज्ञान के लिए शिक्षा की झोली फैलाते हैं।

आसुरी शक्तियों से लड़ने के लिए साधन चाहिए।
भारत को भारत रखने के लिए प्राण चाहिए।
विदेशी पादरियों के कुचक्र विफल करने के लिए
सब कुछ चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वोट किसे दें ?

—राजेन्द्र कुमार गोयल

अचानक चुनाव की घोषणा से आज का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है कि वोट किसे दें।

शासक दल के समर्थकों द्वारा पुराने घिसे-पीटे एवं विचित्र तर्क दिये जा रहे हैं। उनका कहना है कि हमारा तो खा-खा कर पेट भर गया, नई पार्टी आएगी तो अधिक खाएगी। वे पिछले २० या ३० वर्षों से यह कहते आ रहे हैं पर दिखता है कि उनकी भूख बढ़ती ही जा रही है, कितनी बेशर्मी से यह स्वीकार करते हैं कि वे भ्रष्ट हैं, फिर भी वोट मांगने का दुसाहस करके जनता का अपमान कर रहे हैं, उनको इसका सबक मिलना ही चाहिए। उनका यह भी कहना है कि सब एक जैसे हैं जो पार्टी आयेगी वह भी ऐसा ही करेगी। कभी पांचों उंगलियां एक जैसी नहीं होती। हर नेता या पार्टी की अपनी विशेषता अपनी नीति या कार्यक्रम होता है। और फिर यदि सब एक जैसे हैं तो क्यों न नए लोगों को आजमाया जाये तथा शासक दल के घमण्ड को तोड़ा जाए।

उनका यह भी कहना है कि विपक्ष एक नहीं है। इसलिए क्या एक ही पार्टी को स्थिर रखना ठीक होगा ? रुका हुआ पानी भी सड़ जाता है। समय-समय पर पार्टी बदलते रहने से शासक दल जनता का ध्यान रखता है तथा स्वस्थ प्रतियोगिता होती है एवं शासक तथा शासन का स्तर सुधरता है। फिर प्रश्न यह नहीं कि कौन जीतेगा, प्रश्न है कि कौन जीतना चाहिए ? या फिर बहुमत न आने की अवस्था में किस दल के सदस्य अधिक संख्या में जीतकर आने चाहिए। प्रश्न है कि हमें क्या करना है, किसको जिताना है।

क्या पंचायत राज, जो शासक दल के लिए मात्र नारा है, विश्वास नहीं मंहगाई तथा इसी प्रकार के ठोस सत्य तथा तथ्यों को खा जाएगा। वास्तव में तो तथ्य इस नारे को खा जायेगें। सभी जानते हैं कि केन्द्र ने कर्नाटक राज्य के पंचायत राज बिल को दो वर्षों तक लटकाया, अनेक कांग्रेजी राज्यों में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंचायत तथा नगर पालिका चुनाव दस वर्ष से भी अधिक समय से नहीं हुए तथा विपक्ष के प्रदेशों में पंचायत अधिक अच्छा काम कर रही है तथा कोई भी अन्य पार्टी जीतीं तो पंचायतें अधिक फुले-फलेंगी। अनुभव बताता है कि महंगाई कांग्रेस राज्य की विशेषता है और यदि महंगाई रोकनी है तथा लम्बी लाइनें नहीं चाहिए तो फिर कांग्रेस का मोह त्यागना होगा। आखिर जनता को आम खाने हैं न कि पेड़ गिनने।

प्रमुख प्रश्न यह है कि क्या एक ही पार्टी शासन करती रहेगी? क्या एक ही परिवार का शासन चलता रहेगा? क्या कभी सच्चा लोकतन्त्र भी आएगा कि योग्यता के आधार पर कोई शासक बन सकेगा? क्या वास्तव में हमारा देश परिवार के शासन से मुक्त हो सकेगा? क्या लाल बहादुर शास्त्री जैसा व्यक्ति जो इस देश की मिट्टी का बना हो, जिसमें भारतीयता हो, फिर आ सकेगा?

आज सबसे प्रमुख प्रश्न है कि हमारे देश का, भारतीय संस्कृति का, हिन्दुत्व का क्या होगा? आवश्यकता है इसको बनाये रखने की। यह हमारे पूर्वजों की धरोहर है आने वाली पीढ़ियों के लिए। कांग्रेस ने घोषित किया है कि सबसे प्रमुख बात साम्प्रदायिकता से लड़ने की है। सभी जानते हैं कि कांग्रेस सरकार के अनुसार हिन्दू ही फिरकापरस्त हैं। वे मुस्लिम कट्टरवाद तथा साम्प्रदायिकता को अंग्रेजी की तरह सदा बढ़ावा देते रहे हैं। बोट क्लब पर आग लगाने तथा सिर तोड़ देने की धमकी देने वालों तथा '२६ जनवरी न मनाओ' तथा 'भारतीय संविधान हम नहीं मानते,' यह कहने वालों के विरुद्ध तो कोई कदम नहीं उठाते परन्तु संसद के बाहर 'गोहत्या बन्द हो' का प्रदर्शन करने वाली शान्तिपूर्ण जनता पर गोली चल सकती हैं। शान्तिपूर्ण हिन्दुओं की रक्षा नहीं कर पाते, उनके जलूसों पर पत्थर फेंकने, लुटने, आग लगाने वालों को कभी चेतावनी नहीं देते परन्तु राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल पर जानबूझकर झूठा दोष लगाते हैं। यदि आज ये संगठन भारत में न हों तो हिन्दू कितने अरक्षित तथा असहाय हो जाएंगे। जो शस्त्र इकट्ठा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करते हैं तथा जलूसों में शस्त्र लेकर निकलते हैं उन्हें कुछ नहीं कहते। वास्तव में वे नहीं चाहते कि लोग भारत में शान्ति से रह सकें। अंग्रेजों की तरह वे भी हिन्दू-मुसलमानों के दंगे चाहते हैं, उर्दू या कोई भी नया प्रश्न लेकर कोई न कोई नया अतमाशा तथा समस्यापैदा कर देते हैं विदेशी ईसाई मिशनरियों को उनके असामाजिक कार्यों, पराधों तथा देश विरोधी कार्यों के कारण भारत छोड़ने के लिए दिये गए प्रदेश सरकारों के आदेश भी रद्द कर दिए गए संसार के अनेक देशों में बंगलादेश, फिजी आदि में हिन्दुओं पर अत्याचार हो रहे हैं। धर्मपरिवर्तन तथा राष्ट्रद्रोह के लिए विदेशों से आ रहे धन पर रोक नहीं लगाई जाती तथा इसी कारण गोरखालैण्ड, बोडोलैंड आदि आन्दोलन एक षडयन्त्र के कारण भयंकर रूप में सामने आ रहें हैं। पाकिस्तान तथा बंगला-देश के नाम से दो मुस्लिम देश, मिजोरम नागालैण्ड जैसे राज्य कश्मीर तथा पंजाब समस्या आदि सब कुछ इसी का परिणाम है और दोष देते हैं हिन्दू राष्ट्र के एकताकारक नारे को। आज हिन्दू शब्द उत्तर-दक्षिण का भेद समाप्त कर रहा है, संप्रदाय तथा प्रदेश की भावना से ऊपर उठाकर एक कर रहा है। मिजोरम चुनाव में कांग्रेस घोषणापत्र में कहा गया कि वे ईसाई सिद्धान्तों के अनुसार सरकार चलाएंगे, परन्तु यदि कोई कहे कि भारतीय या हिन्दू संस्कृति के अनुसार चलेंगे तो उसे ये साम्प्रदायिक कहते हैं। वे लोग भारत में सम्मान नागरिक संहिता नहीं बनाना चाहते तथा मुसलमानों द्वारा एक से अधिक शादी पर रोक नहीं लगाते जबकि पाकिस्तान में मुसलमान एक से ज्यादा शादी नहीं कर सकता। यदि कोई एक से अधिक करना चाहता है तो एक गलत रास्ता (Loophole) छोड़ा हुआ है कि वह मुसलमान बनकर दूसरी शादी कर ले। कानून की ऐसी स्थिति राष्ट्रहित के विपरीत है। डा० मनोहरन इसीलिए मुसलमान हो गया था इसका परिणाम हुई मीनाक्षीपुरम् की घटना। स्वामी विवेकानन्द ने ठीक ही कहा है कि किसी एक व्यक्ति के हिन्दू समाज को त्याग देने पर इस समाज का एक व्यक्ति केवल कम ही नहीं हो जाता, बल्कि उसके शत्रु की संख्या में एक की वृद्धि हो जाती है। यह स्पष्ट है कि कांग्रेस का फिरका परस्ती से लड़ने का अर्थ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है हिन्दुत्व से लड़ना।

आज कांग्रेस शासन द्वारा रामजन्मभूमि का विरोध हो रहा है। भारत की अनेक मुस्लिम संस्थाएं तथा देशभक्त मुसलमान इसका समर्थन कर रहे हैं, इस सच्चाई को दूरदर्शन पर नहीं लाया जाता यदि ऐसा किया जाए तो फिर समस्या ही न सुलझ जाए। परन्तु कांग्रेस शासन कट्टर तथा साम्प्रदायिक मुसलमानों को शह देकर समस्या पैदा कर रहा है। तथा नहीं चाहता कि देशभक्त मुसलमान शांतिपूर्वक जी सकें। मर्यादा पुरुषोत्तम, श्रीराम इस देश के इतिहास-पुरुष हैं, राष्ट्रीय महापुरुष हैं, सभी भारतीयों के पूर्वज तथा आदर्श पुरुष हैं। जिस प्रकार से इण्डिया गेट से जार्ज पंचम का बुत हटाया गया था, उसी प्रकार रामजन्म भूमि का आन्दोलन भारत से गुलामी के चिह्न हटाने तथा हिन्दू को जगाने और संगठित करने का सकारात्मक आन्दोलन है जिससे इसके पश्चात इकट्ठी की गई हिन्दू शक्ति को समाज-सुधार, सेवाकार्य तथा देशनिर्माण की ओर लगाया जा सके।

यह छिपा नहीं है कि मुस्लिम देशों तथा मुस्लिम साम्प्रदायिकों का अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र है कि विदेशी धन की सहायता से बचे-खुचे भारत में भी तीन तरीकों से मुस्लिम जनसंख्या बढ़ाई जाए। पहला, अधिक बच्चे पैदा करके (हम पांच हमारे पच्चीस), दूसरा घुसपैठ द्वारा (बंगलादेशी मुसलमान) तथा तीसरा धर्म-परिवर्तन द्वारा, विशेषकर भारत के ८ करोड़ हरिजनों का (मीनाक्षीपुरम)। इस प्रकार कुछ वर्षों में किसी प्रकार मुसलमानों की जनसंख्या अधिक करके तथा उसके पश्चात् होने वाले लोकसभा चुनाव में किसी प्रकार भी ५० प्रतिशत से अधिक मुसलमान सांसद आने पर भारत में शरियत का शासन तथा मुस्लिम राज्य घोषित कर दिया जाए तब यहां का प्रधानमन्त्री मुसलमान होगा। देश में हिन्दू संस्कृति समाप्त, रामकृष्ण का नाम लेना समाप्त तथा विश्व की एक मात्र लोककल्याण तथा शान्तिपूर्ण संस्कृति का भारत से नाम निशान समाप्त। क्या यह षड्यन्त्र सफल होना चाहिए? क्या हम राम-कृष्ण के भक्तों का कोई कर्तव्य नहीं कि समय रहते जागें। पाकिस्तान बनने पर अनेक हिन्दू वहां से सब कुछ छोड़कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आए। वे वहां भी सुख से रह सकते थे। परन्तु उन्हें हिन्दू संस्कृति प्यारी थी। यदि ऐसा ही चलता रहा तो फिर हिन्दू कहां जायेगा ? क्या हिन्द-महासागर में डूबेगा ? ऐसी स्थिति में हम सोते रहे तो आने वाली सन्तानें हमें क्या कहेगी ? क्या हमें जयचन्द या जयसिंह जैसे लोगों के समान देश-द्रोही नहीं कहेंगी ? आइए इस चुनौती को स्वीकार कर लें। यदि हिन्दुत्व सबल होता है तो—

१. भारत में नैतिकता, अनुशासन, व्यवस्था, कर्तव्य, सेवा-भावना स्वाभाविक रूप से आएगी।
२. दूरदर्शन का उपयोग व्यक्ति पूजा में न होकर राष्ट्रनिर्माण के लिए होगा।
३. पड़ोसी राज्यों नैपाल, लंका, आदि से सम्बन्ध सुधरेंगे।
४. भ्रष्टाचार, सामाजिक कुरीतियाँ, विषमता, अभाव, अत्याचार, अन्याय, सामाजिक असुरक्षा, आदि समाप्त होकर तेजी से प्रगति होगी, गरीबी तथा मंहगाई दूर होगी। गुप्त वंश के राज्य के समान फिर भारत का स्वर्ण युग आएगा।
५. साम्प्रदायिकता दूर होकर राष्ट्रीयता, एकता तथा जागरण आएगा। भारत संसार की प्रमुख शक्ति के रूप में उभरेगा तथा विश्व शान्ति सम्भव होगी।
६. छत्रपति शिवाजी के राज्य की तरह सभी धर्मों, धार्मिक ग्रन्थों, धर्म स्थानों तथा महिलाओं का आदर होगा। आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में "हिन्दुस्तान के रहने वाले सबसे पहले भारतीय या हिन्दू हैं, बाद में सनातनी, जैन, बौद्ध, सिख या मुसलमान हैं।"
७. संसार में भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार समाप्त होगा तथा सम्मान बढ़ेगा।

सभी देश भक्तों को चाहिये कि वे अन्य सभी तर्कों, कुतर्कों से अधिक महत्व इस बात को दें। चुनावों में हिन्दू-हित के पक्ष वाली पार्टी तथा प्रत्याशी को वोट दें। व्यक्तिगत सम्पर्क से हर घर में तथा हर व्यक्ति के दिमाग में इस सच्चाई को बैठा दें तथा इस महान् अभियान में पूरे जोर-शोर से लग जाएं और इसके विपरीत सरकारी माध्यमों के दुरुपयोग द्वारा किए गए प्रचार को नकार दें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म-परिवर्तन के षड्यन्त्र ?

—पं. जयन्तकुमार आर्य (भूतपूर्व पादरी)

आजकल भारत के हर भाग में धर्म-परिवर्तन की कोशिशें बहुत ही बड़े पैमाने पर चल रही है। मैंने व्यक्तिगत तौर पर देखा है कि धर्म-परिवर्तन का कार्य वहीं सफल होता है जहाँ गरीबी, अशिक्षा, पिछड़ापन, जातिवाद का बोलबाला है। और यह कारण है कि धर्म-परितंन का घिनौना खेल वनवासियों, हरिजनों, जनजातियों, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, नागालैंड, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, और असम के जनजाति के लोगों में बड़ी भयंकर सफलता के साथ खेला जा रहा है जो निश्चय ही भविष्य में भारत की एकता, अखण्डता, और संप्रभुता के लिए बहुत बड़ा खतरा है। जिस तेजी के साथ धर्म-परिवर्तन हो रहा है, विशेषकर सीमावर्ती राज्यों में, वह इस बात का द्योतक है कि हमारी सरकार, खुफिया विभाग, और प्रशासन या तो नकारा हो चुके हैं या जानबूझकर आँखें मूंदकर भारत की सुरक्षा को खतरा पैदा करने वालों को बढ़ावा दे रहे हैं।

गरीबी

धर्म-परिवर्तन का एक कारण गरीबी है। वनवासी और हरिजन तथा पिछड़ी जाति के लोग इतने गरीब हैं कि उन्हें दो जून की रोटी जुटा पाना मुश्किल होता है, उन्हें सरकार और सम्पन्न वर्ग के लोगों से उपेक्षा और शोषण के सिवा कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। ऐसे समय में इन भूखे और उपेक्षित लोगों के बीच में ईसाई मिशनरी जा पहुंचते हैं। इनके पास बेइन्तहा विदेशी पैसा होता है और इन पैसों को ये अभागे इन उपेक्षित गरीब लोगों में बनावटी प्यार और सहानुभूति के दिखावे के साथ बिखेर देते हैं और इस प्रकार इन भूखे नंगे उपेक्षित लोगों का धर्म, ईमान और आत्मसम्मान खरीद लेते हैं। इनके बच्चों को शिक्षा के नाम पर पाश्चात्य विचारधारा और ईसाई मजहब में पूरी तरह प्रशिक्षित करके इनके दिल में अपने देश, धर्म और संस्कृति के प्रति घृणा पैदा करते हैं। ये नये ईसाई अपनी मातृ-भूमि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और संस्कृति के प्रति वफादार न होकर ईसा मसीह के एजेन्टों के वफादार होते हैं। ऐसे नये बने ईसाइयों को, जो इन ईसाई मिशनरियों के हाथ की कठपुतली होते हैं, हर तरह के राष्ट्र और संस्कृतिविरोधी कार्यों के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

अशिक्षा

अशिक्षा और पिछड़ापन भी धर्म-परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मेघालय, असम आदि की जनजातियों में शिक्षा का विकास नहीं हो पाया है जिससे ये भारत और इसकी संस्कृति एव इतिहास के बारे में कुछ नहीं जानते। यदि कुछ शिक्षण-संस्थायें हैं तो वे केवल ईसाई मिशनों द्वारा चलाई जाती है जहां पाश्चात्य दर्शन, संस्कृति और विकास के बारे में तो बताया जाता है परन्तु भारतीय संस्कृति एवं धर्म की पूरी तरह उपेक्षा की जाती है। परिणामस्वरूप हम देखते हैं कि नागालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा, अरुणांचल प्रदेश में भूमिगत विद्रोहियों की शक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। ये विद्रोही भारत और भारतीयता के प्रति वफादार न होकर विदेशी शक्तियों के प्रति वफादार हैं जो भारत की एकता, शांति, अखण्डता के खिए खतरा बन गए हैं। हमारी सेना की लगातार कोशिशों के बावजूद इनकी इन गतिविधियों को कुचला नहीं जा सका है। **मैं दावे से कहता हूँ कि यदि उत्तर पूर्वी भारत में ईसाई मिशनों की शिक्षण-संस्थाओं का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाये और इनका भारतीयकरण किया जाये तो इस खतरनाक स्थिति को धीरे-धीरे सुधारा जा सकता है।** ये ईसाई शिक्षण-संस्थाएं इन विद्रोहियों की प्रेरणास्रोत हैं। इसके अतिरिक्त इन सीमावर्ती क्षेत्रों में विकास की गति को और तीव्र करने की आवश्यकता है।

जातिवाद—

भारत में जातिवाद भी धर्म-परिवर्तन का एक बड़ा कारण है। जातियों द्वारा अन्याय तथा दुर्व्यहार और उपेक्षा भी छोटी जाति के लोगों को इन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईसाई मिशनरियों के चंगुल में फंसाती हैं। छुआछूत को जब तक पूरी तरह समाप्त नहीं किया जाता, धर्म-परिवर्तन की समस्या बनी रहेगी। सवर्णों द्वारा छोटी जाति के लोगों को मंदिरों में न घुसने देना, उनको धार्मिक अनुष्ठानों; कार्यों से अलग रखना और उनकी उपेक्षा करना भी धर्म-परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है।

जागरूकता का अभाव

समाज में एकता और जागरूकता का अभाव भी इन ईसाई मिशनरियों को प्रोत्साहित करता है कि हमें तोड़ सकें और निःशंक होकर धर्म-परिवर्तन का घिनौना खेल खेल सकें। हमारे समाज में संकीर्ण विचारधारा वालों का बोलबाला है, ऐसे लोग केवल स्वार्थ के लिए जीते हैं, इनका कार्य हर गलत तरीके से सम्पन्न होता है और इनमें सम्पत्ति की तृष्णा इतनी होती है कि ये शोषण और अत्याचार करने से भी नहीं चूकते। इस तरह सम्पत्ति कुछ इने-गिने लोगों के हाथों में जाती है तथा समाज का एक विशाल वर्ग गरीबी से परेशान हो उठता है। वह अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाता, ऊपर से इस वर्ग को बेकारी, अपमान, उपेक्षा और भूख का सामना करना पड़ता है। कथित सम्पन्न वर्ग का दृष्टिकोण स्वार्थवश इतना संकुचित हो जाता है कि वह इस अभागे वर्ग के लिए अपना कोई कर्तव्य नहीं समझता, उल्टे सब सामाजिक, आर्थिक, अधिकार अपने पास केन्द्रित कर लेता है। परिणामस्वरूप समाज का एक बड़ा वर्ग भूखा, नंगा, बेरोजगार और उपेक्षित हो जाता है। तब यही कहावत चरितार्थ होने लगती है 'मरता क्या न करता।' इस विशाल किन्तु गरीब उपेक्षित बेकार वर्ग को दिखावटी सहानुभूति, आर्थिक सहायता, सामाजिक उत्थान का लालच दिखाकर विधर्मी लोग उनका धर्म-परिवर्तन करने में सफल हो जाते हैं।

पारिवारिक अशान्ति और पति-पत्नी के बीच सामान्य प्रेमपूर्ण सम्बन्ध का न होना भी सन्तान को मानसिक तनाव की तरफ धकेलता है। जिस बच्चे को माता-पिता की उपेक्षा मिलती है, और उसको समझने की कोशिश नहीं की जाती है, उसके बहक जाने की प्रबल सम्भावना रहती है। माता-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिता को चाहिए कि वे अपनी संतान को मानसिक तनाव और हीनभावना का शिकार होने या उपेक्षित समझने का अवसर न दें। मेरा धर्म-परिवर्तन भी इसी कारण हुआ था। मां की मृत्यु, पिता के द्वारा उपेक्षा और रिश्तेदारों की स्वार्थपरता ने मेरे तरुण हृदय को प्यार की खोज में भटका दिया और मैं इन धोखेबाज देशद्रोहियों के चंगुल में फंस गया था। ऐसा फिर नहीं होने देना है। इसलिए हमें अपने बच्चों को सहानुभूति और प्यार के साथ अपने संस्कारों, संस्कृति एवं धर्म के प्रति जागरूक बनाना चाहिए।

शान्ति के नाम पर विघटन का खेल

शान्ति की आड़ में ये ईसाई मिशनें अशान्ति का बीज बो रही हैं। यदि ये सचमुच शान्ति के लिए कार्य करते है तो क्यों नहीं केवल शिक्षा, चिकित्सा का कार्य करके सेवा करते और छुआछूत मिटाने में सहायक बनते ? वे ईसाई बनाना क्यों चाहते है ? धर्म-परिवर्तन क्यों करते हैं ? सेवा चिकित्सा शिक्षा की आड़ में ईसाइस्तान बनाने की प्रेरणास्रोत विदेशी शक्तियां हैं। ये ईसाई मिशन उनके एजेन्ट हैं। इनकी चालों, मीठे बोलों, सेवा के नाटकों से सावधान रहकर अपने देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा करना हमारा पवित्र कर्तव्य है। क्या जगह-जगह स्कूल व अस्पताल खोलकर ये लोगों की सेवा करना चाहते हैं ? क्या सचमुच इनकी रुचि भारत में एकता, शान्ति और भाईचारा उत्पन्न करने में है ? ये ईसाई पादरी और विशप कहते हैं—जी हां, हम तो उपर्युक्त बातों और कार्यों के लिए ही भारत में कार्यरत हैं और हमने शिक्षा और चिकित्सा में बहुत योगदान किया है भारत को एक ईसाई राष्ट्र बनाने की दिशा में। यहां के लोगों के एक विशाल भाग को ईसाई भी बनाया गया, इसी शिक्षा और चिकित्सा की आड़ में। क्या भारत के लोगों को शिक्षा और चिकित्सा केवल ईसाई बनने के बाद ही उपलब्ध की जा सकती है ? वास्तव में इनका मूल उद्देश्य भारत को एक ईसाई राष्ट्र के रूप में बदलना है। शिक्षा और चिकित्सा तो साधन मात्र है क्योंकि धर्म-परिवर्तन के लिए ये बहुत ही सुरक्षित दीवार है। इनकी आड़ में खुलकर धर्म-परिवर्तन का खेल खेला जाता है और खेला जा रहा है।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारा देश, हमारी संस्कृति और हमारा धर्म (वैदिक धर्म) आज विदेशियों और विधर्मियों के सुनियोजित आक्रमण का लक्ष्य बन गया है। हमारे देश में जहाँ मुसलमानों की जनसंख्या तेजी के साथ बढ़ रही है और बढ़ रही है वहीं ईसाईयों द्वारा हमारी आर्य जाति को तीव्रता के साथ धर्म-परिवर्तन का शिकार बनाया जा रहा है और इनका धर्म-परिवर्तन का कुचक्र इतना भयावह रूप ले चुका है कि यदि हम और समय तक सोते रहें तो इसमें हिन्दू जाति का एक विशाल भाग विधर्मी बन जाएगा और अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा, वैदिक धर्म नष्ट हो जायगा और इस देश का पूर्ण रूप से बिखण्डन होकर हमारी संस्कृति और धर्म का लोप हो जायेगा। देश का उत्तर-पूर्वी भाग आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और वैचारिक रूप से भारत से अलग हो चुका है। इस भाग को किसी भी समय ईसाई राष्ट्र घोषित किया जा सकता है। इधर उत्तर भारत में जातिवाद, छुआछूत और अंधविश्वासों से त्रस्त गरीब और उपेक्षित हरिजनों और वनवासियों को पैसा, नौकरी, शादी इत्यादि का लालच देकर और दिखावटी प्यार दिखा कर सेवा, शिक्षा और चिकित्सा की आड़ में उनके धर्म-परिवर्तन का प्रयास और कार्य पूरी गति से जारी है।

क्या हम तब जायेंगे जब हमारी सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक मृत्यु हो चुकेगी ? क्या हम तब जायेंगे जब हम अपने देश में अल्पमत में होकर असहाय और उपेक्षित बन जायेंगे ? क्या हम तब जायेंगे जब मातृ-भूमि का टुकड़ों-टुकड़ों में विखण्डन हो जायेगी ? क्या हम तब जायेंगे जब हम धर्मच्युत होकर पशुवत् जीवन जीने को विवश हो जायेंगे ?

आइये ! अपने देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए हम स्वामी दयानन्द सरस्वती के बताए हुए मार्ग पर चलें और वैदिक धर्म का वास्तविक रूप में अनुसरण करके अस्पृश्यता और अंधविश्वास को त्याग कर अपनी मातृभूमि को बिखण्डित होने से बचायें और विधर्मियों और देशद्रोहियों की चालों को विफल कर दें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

असली अल्पसंख्यक कौन ?

—स्व० श्री प्रकाश जी

अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक की अतार्किक परिभाषाओं ने जहाँ इस देश के हिन्दू को भयंकर हानि पहुँचाई है, वहीं इस देश को राजनीतिक और सांस्कृतिक युद्धों का अखाड़ा बन रहा है। तथाकथित अल्पसंख्यक-सुविधाओं के घोड़े पर सवारी करने वाले समुदायों ने इस देश से सुविधाएँ तो प्राप्त की है, परन्त देश की शांति के सामने सदैव प्रश्नचिह्न खड़े किए हैं।

स्वर्गीय श्री प्रकाश जी न केवल महाराष्ट्र के राज्यपाल थे प्रत्युत देश के वरिष्ठ राजनेताओं में गिने जाते थे। हाल ही में चित्र संसद भवन में लगाया गया है। उपर्युक्त विषय पर उन्होंने बेवाक होकर अपनी तार्किक गवेषणा प्रस्तुत की है। —सम्पादक

बहुसंख्यकों और अल्पसंख्यकों का प्रश्न तथा अल्पसंख्यकों का हितसाधन तथा बहुसंख्यकों के अत्याचारों से उनकी रक्षा की तत्परता का दावा; ये रावण के सिरों के तरह हैं, जो काटने पर फिर-फिर उग जाते हैं।

परन्तु मुझे संदेह है कि जहाँ तक हमारे देश की आबादी का सम्बंध है क्या "अल्पसंख्यक" और बहुसंख्यक शब्दों के ठीक अर्थों को समझने का प्रयत्न सचमुच कभी किया गया है।

यह बात स्वयंसिद्ध मान ली जाती है कि हिंदू अथवा जैसा कि कई बार कहा जाता है, सवर्ण हिंदू बहुसंख्यक हैं और उनका एकमात्र जीवनोद्देश्य तथाकथित अल्पसंख्यकों को कुचलना है।

इसलिए कहा जाता है कि यह देखना सत्ताधारियों का कर्त्तव्य है कि विशेषतः सरकारी नौकरियों और धारासभाओं आदि निर्वाचित संघटनों में, तथा सरकार द्वारा दी जाने वाले परमिट, लाइसेंस आदि कृपाओं में अल्पसंख्यकों को उचित भाग मिले।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसे संरक्षणीय अल्पसंख्यकों में मुसलमान, स्त्रियां और हरिजन आते हैं। एंग्लो-इंडियनों का भी नाम लिया जाता है। पारसी, यहूदी, बौद्ध आदि अत्यंत छोटे समुदायों का और भारतीय ईसाइयों का इनमें उल्लेख नहीं किया जाता। शायद यह मान लिया जाता है कि वे अपनी देख-भाल स्वयं कर सकते हैं।

दीर्घकाल से यह समूचा प्रश्न मुझे चकित किए हुए है और मैं स्पष्टतया समझ नहीं पाया हूँ कि अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक की बात करते समय हमारे शासकों का और देश-हितैषियों का असली अभिप्राय क्या होता है और वे वास्तव में क्या करना और करवाना चाहते हैं ?

ऐतिहासिक दृष्टि से जहां तक मुझे स्मरण है, पहले यह आवाज उठाई गई कि मुसलमान अल्पसंख्यक हैं और (तथाकथित) बहुसंख्यक हिंदुओं की क्रूरता से बच पाने के लिए उन्हें संरक्षण की आवश्यकता है।

अंग्रेज इस विषय में सिद्धांत रूप से पहले ही फैसला कर चुके थे, इसलिए उन्होंने मुसलमानों को अधिकारों की मांग करने और उनके लिए जोर डालने को प्रोत्साहित किया जहां तक मुझे स्मरण है, ऐसी पहली मांग १९०७ में मुस्लिम नेताओं ने आगा खां के नेतृत्व में तत्कालीन वाइसराय लार्ड मिण्टो के सम्मुख रखी।

उन दिनों यह बात काफी प्रसिद्ध थी कि आगा खां द्वारा पेश किये गये निवेदनपत्र और वाइसराय के उत्तर दोनों का मसविदा वाइसराय के सचिवालय में तैयार किया गया था। यह बात खुल्लमखुल्ला कही भी गई, मगर इसका प्रत्याख्यान कभी नहीं किया गया।

तब से हिंदू-मुस्लिम समस्या निरंतर भयंकर होती चली गयी और दुर्दैवपूर्ण देश-विभाजन में उसकी परिणति हुई। १९०७ में मुसलमान अल्पसंख्यकों के रूप में अधिकाधिक अधिकार मांगते चले गए। उन्हें निरंतर सफलता मिलती गई, क्योंकि अंग्रेज उनकी तरफदारी कर रहे थे।

जब 'भारत छोड़ो' आंदोलन प्रारम्भ किया, तो भी मि० जिन्ना ने, जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब तक मुसलमानों के एकमात्र नेता बन चुके थे, 'विभाजन करके भारत छोड़ो' का जवाबी नारा लगाया, क्योंकि वे अनुभव कर रहे थे कि यदि अंग्रेज विभाजन किए बिना ही चले गए तो फिर देश के बंटवारे का मौका नहीं आएगा।

एक बार मैंने एक बड़े मुखिया नेता से पूछा कि क्या आप, उदाहरणार्थ, पारसियों को अल्पसंख्यक नहीं मानते और ऐसा नहीं अनुभव करते कि उन्हें विशेष रियायतें मिलनी चाहिए।

संख्या में अत्यल्प होते हुए भी पारसियों ने हमारे राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में बड़ा उल्लेखनीय हिस्सा अदा किया है। वे दानियों और उद्योगपतियों में अग्रगण्य रहे हैं, और विज्ञान, चिकित्सा, कानून, कला आदि सभी चीजों में आगे रहे हैं। जो तीन भारतीय ब्रिटेन के हाउस आफ कामन्स के सदस्य बने, वे तीनों ही पारसी थे।

मुझे ऐसा लगा कि इन मुस्लिम नेता का ख्याल था कि इन सफलताओं के रहते पारसियों को किसी प्रकार के संरक्षण की आवश्यकता नहीं है, भले वे अल्पसंख्यक हों या नहीं। वे किसी का भी मुकाबला कर लेंगे।

परंतु मुसलमानों का अल्पसंख्यक मानने का आग्रह अंग्रेजों में भी उतना ही था, जितना कि स्वयं मुसलमानों में था। याद आता है, एक ब्रिटिश दूतावास के प्रधान अधिकारी से भारत-विभाजन के बारे में मेरा वार्तालाप हुआ था। उन्होंने बड़ी स्पष्टता से कहा था—"हम (अर्थात् अंग्रेज) असहाय अल्पसंख्यक मुसलमानों को क्रूर-बहुसंख्यक हिंदुओं के रहम पर भला कैसे छोड़ सकते थे।

इस पर मैंने उन्हें बताया कि अविभक्त भारत में मुसलमान २५ से ३० प्रतिशत थे, जब विभाजन के बाद वे भारत में १० प्रतिशत रह गए, क्योंकि सब तो पाकिस्तान नहीं जा पाए। मैंने यह भी कहा कि १० प्रतिशत को निश्चय ही २५ प्रतिशत से ज्यादा खतरा होगा। मगर ऐसा लगा कि वे इस तथ्य को समझ नहीं पाए। और यहां पर यह कह दूं कि यह वार्तालाप भारत के बाहर हुआ था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैंने इस राजनयिक से यह भी कहा कि इन १५ प्रतिशत मुसलमानों से अधिक अंग्रेजों के संरक्षण के पात्र तो देशी नरेश थे, जो बिल्कुल असहाय हो गए। वे अपने देश के हितों का भी विरोध करके अंग्रेजों का साथ देते रहे और अंग्रेज उनकी देखभाल करने के लिए अनुबंधित थे।

मेरे मित्र ब्रिटिश राजनयिक के पास इसका बस यही उत्तर था कि मैं राजनीतिज्ञ नहीं हूं और मैं नहीं जानता कि वस्तुस्थिति क्या थी। वार्तालाप वहीं समाप्त हो गया।

ये बातें गौण प्रतीत हो सकती हैं, तथापि इनका उल्लेख मैं इसलिए कर रहा हूं कि अल्पसंख्यक का प्रश्न बहुत उलझा हुआ है और उसका कोई स्पष्ट उत्तर नहीं है;

मुझे याद आया है, जब १९१७ में या उसके आस-पास, मद्रास में ब्राह्मणों के तथाकथित प्रभुत्व के विरुद्ध जस्टिस पार्टी ने आन्दोलन आरम्भ किया और अब्राह्मणों को न्याय दिलाने की मांग तो वी.एस. निवासशास्त्री ने हताशा और हैरानी से भरकर कहा था कि यह कितनी विचित्र बात है कि जो असल बहुसंख्यक हैं—मद्रास की आबादी में बहुसंख्यक ब्राह्मण केवल ३ प्रतिशत थे वे अपने को अल्पसंख्यक माने और इस आधार पर विशेषाधिकार मांगे!

अब हिंदुओं की बात लें, जिन्हें बहुसंख्यक तथा ऐसी संघठित इकाई माना जाता है, जो अल्पसंख्यकों को कुचलना चाहती है। यह बात स्मरण रखने योग्य हैं कि यद्यपि ऐसा समझा जाता है कि सब हिंदू एक 'हिंदू धर्म' के अनुयायी है तथापि वास्तव में मूलतः हिंदू किसी धर्मविशेष का वाचक नहीं था, बल्कि सिंधु नदी के पूर्व और दक्षिण में निवास करने वालों के लिए इसका प्रयोग होता था।

जिसे आप 'हिंदू' मानते हैं, ऐसे किसी आदमी से पूछिये कि आप कौन हैं? वह कभी नहीं कहेगा कि मैं हिंदू हूं। वह सदा ही अपनी जाति, उपजाति भी बतायेगा। वह अपने को ब्राह्मण, क्षत्रिय, अग्रवाल, कायस्थ, खत्री;

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अहीर, कुरमी, चमार, धोबी, डोम, महार या जाने क्या-क्या बतायेगा। मगर मैं हिंदू हूं, यह उत्तर उसे कभी नहीं सूझेगा।

अगर यही सवाल किसी मुसलमान से किया जाये, तो वह कहेगा, मैं मुसलमान हूं। उसे शुरू में यह खयाल आयेगा ही नहीं कि वह शिया, सुन्नी, वहाबी या कादियानी है। ये बातें वह तभी बतायेगा, जब उससे और ज्यादा पूछताछ की जाये।

कोई पारसी, यहूदी, बौद्ध और ईसाई भी अपने धर्म का ही नाम लेगा। मगर हिंदू कभी ऐसा नहीं करता। हिंदुओं की जातियां और उपजातियां, जिनकी संख्या चार से चार हजार हो गयी है और जिनमें नयी-नयी उपजातियां आज भी उपज रही हैं, अलग-अलग खानों में कैद होकर जीती हैं।

हर एक जाति उपजाति के अपने विश्वास हैं, विधियां एवं रीति-रिवाज, धार्मिक और सामाजिक व्रत, अनुष्ठान हैं, जिनमें परस्पर कोई समानता नहीं है। बहुधा वे सब परस्पर विरोधी भी होते हैं।

खान-पान और विवाह की हर जाति-उपजाति की अपनी विशेष विधियां हैं और अलग जातियों के बीच विवाह तो लगभग होता ही नहीं। यदि कुछ अन्तर्जातीय विवाह करते भी हैं तो अन्त में उनकी अपनी अलग जाति बन जाती है और इस कृत्रिम रूप से निर्मित जाति में अपने भीतर शादी-विवाह होने लगते हैं।

इसलिए यह कहना कि हिंदू इस देश की आबादी से बहुसंख्यक हैं, बिल्कुल गलत है। यह विशाल जनसमूह जिसे 'हिंदू' कहा जाता है, वास्तव में अल्पसंख्यकों की एक विशाल जमात है। और ये विभिन्न जातियां आज वही रियायतें और विशेषाधिकार मांग रही हैं, जो कि मुसलमान मांगा करते हैं।

तो बहुसंख्यक कौन है? मेरी निश्चित राय है कि मुसलमान इस देश की आबादी में असली बहुसंख्यक हैं। विभाजन से पहले भी ऐसा ही था और विभाजन के बाद भी यही स्थिति है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमान संघटित और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समुदाय है। वे अपना धर्म-परिवर्तन नहीं करते, अपितु दूसरों को धर्म-परिवर्तन के लिए निमंत्रण देते हैं।

यदि उनमें से कोई धर्म-परिवर्तन कर ले, तो वे चिंतित हो उठते हैं। हिंदू निश्चय ही ऐसी चिंता नहीं करते।

जब मैं महाराष्ट्र का राज्यपाल था, नौ लाख महार बौद्ध बन गये। मैंने तो नहीं देखा कि किसी मंत्री या अन्य किसी को इससे तनिक भी चिंता हुई हो। बल्कि राजनैतिक कारणों से वे इन धर्म-परिवर्तनकारियों को वे सब सुविधाएं पूर्ववत् देते रहने को उत्सुक थे, जो उन्हें हरिजन के नाते प्राप्त थीं और अब धर्मपरिवर्तन के बाद कानूनन नहीं मिल सकते थे।

आज भी बड़ी संख्या में हिंदू, मुसलमान हो रहे हैं, मगर हिंदू चिंता नहीं करते। न वे इस प्रकार के धर्मपरिवर्तन के कारणों का पता लगाने और उन्हें सामाजिक बुराइयों के निवारण का प्रयत्न करते हैं, जो इन लोगों को हिंदू समाज से भगाती हैं।

लोगों के ईसाई बनने से कुछ व्यक्ति चिंतित हैं। लेकिन वे भी मुसलमानों में दखल देने का साहस नहीं करते, क्योंकि मुसलमान वास्तव में सशक्त सुघटित बहुसंख्यक हैं, जिनको छेड़ने का साहस कोई नहीं कर सकता।

हाल में जब संसद में यह बात उठाई गई कि देश के समस्त नागरिकों के लिए एक साझा दीवानी कानून होना चाहिए, तो कानून मंत्री ने स्पष्ट रूप से कहा कि मुसलमान विवाह आदि कुछ मामलों को अपने धर्म का अंग मानते हैं। जैसे कि हिंदू वैसा न मानते हों।

सिर्फ हिंदुओं का ही ख्याल रखना आवश्यक है, क्योंकि भिन्न रीति-रिवाजों, मान्यताओं और रूढ़ियों के कारण वे अल्पसंख्यक समुदायों में बंटे हुए हैं और संघटित न होने के कारण वे लड़ नहीं सकते।

अंग्रेज इस बात को समझते थे। राजनीतिक सहज-बोध (इंस्टिक्ट) और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानवीय स्थितियों को सही-सही भांपने में वे लाजवाब थे, और वे ऊपर से मुसलमानों को अल्पसंख्यक कहते हुए भी भीतर से जानते थे कि मुसलमान अत्यंत सशक्त बहुसंख्यक हैं। यह बात याद रखने योग्य है कि उन्होंने भारत की आबादी को मुसलमानों और गैर-मुसलमानों में बांट रखा था।

इसीलिए चुनाव के निर्वाचन क्षेत्रों को हिंदू और गैर-हिंदू नहीं, अपितु मुस्लिम और गैर-मुस्लिम कहा जाता था। गैर-मुस्लिमों में शेष सब धर्मों और सम्प्रदायों के लोग शामिल थे, लेकिन मुसलमानों को अलग इकाई माना गया था। मुझे मालूम है कि शियाओं को इससे शिकायत थी, क्योंकि इस विभाजन में सिर्फ सुन्नियों की बन आती थी। मगर सरकार ने राजनीतिक मामलों के लिए मुसलमानों को एक अविभक्त इकाई ही माना।

तात्पर्य यह है कि अल्पसंख्यकों और बहुसंख्यकों के विषय में अपनी मान्यताओं पर पुनर्विचार करना उचित है। देश में असली स्थिति क्या है, यह देखना चाहिए और तभी ऐसे समुचित कदम उठाये जा सकेंगे, जिससे हम वास्तविक अर्थों में एक राष्ट्र बन सकेंगे, जिसमें सबके लिए एक दीवानी कानून होगा और सब व्यक्ति और समुदाय एक ही राष्ट्र के नागरिकों के रूप में अपने कर्त्तव्यों का पालन और अधिकारों का उपयोग करेंगे।

केवल तभी किसी के यह पूछने पर कि आप कौन हैं, हममें से प्रत्येक कहेगा—"मैं भारतीय हूं" जैसा कि विश्व के किसी भी देश के नागरिक अपना परिचय अपने देश के नागरिक के रूप में देते हैं।

(नवनीत से साभार)

चुटकले

एक व्यक्ति ने अपने मित्र से कहा—यार, पिछले दो महीनों से मेरी पत्नी अपना वजन घटाने के लिए घुड़सवारी कर रही है। कोई नतीजा निकला, मित्र ने पूछा। "हां यार, पत्नी की जगह घोड़े का वजन बारह किलो घट गया है।"

मनु ने कनु से कहा—अगर तुम्हें भगवान छप्पर फाड़कर एक करोड़ रुपये दे तो तुम क्या करोगे?

कनु ने कहा—पहले मैं छप्पर को ठीक करवा लूंगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहयोगी सदस्य

51 रुपए दान देने वाले : सर्वश्री सरसनदास, कच्छ जगदीशप्रसाद, अलीगढ़ प्रमोदकुमार रस्तोगी, मुरादाबाद ज्ञानचन्द्र आर्य, एोण्डा मेवालाल, कलकत्ता।

50 रुपए दान देने वाले : सर्वश्री कलाकेन्द्र बांसवाड़ा, शंकरलाल, डुंगरपुर अर्जुनकुमार, भागलपुर पारसचंद जैन, बम्बई।

25 रुपए दान देने वाले : सर्वश्री कान्तीप्रसाद, मेरठ रमेशचन्द, मेरठ लालमणि शर्मा, बलिया, रामवृक्ष प्रसाद रांची, वासुदेव पंडित, बंबई, गिरधारीलाल, दिल्ली ७ लक्ष्मीचंद आर्य, रायसेन, जवाहर मेडिकल, बम्बई, डा० जयदत्त, अलमोड़ा, डा० एस० सी० आर्य, दमन।

21 रुपए दान देने वाले : सर्वश्री किशोरी शाह, सीतामढ़ी, फावले नामदेव, बीदर जयप्रकाश गुप्ता, सौवन हरिराम गुप्ता, धनवाद सुरेन्द्र कुमारशर्मा जयपुर प्रो० जसवन्त सिंह, बीकानेर बाबा गुप्तेश्वर नाथ, मुंगेर बीना गुप्ता दिल्ली शंकर, बर्दवान शंकरसिंह आर्य, इन्दौर, आर० सी० गुप्ता, जयपुर; आर्यभूषण सिंघल, फरीदकोट, जगदीश सिंह आर्य, बिजनौर, प्रमोद कुमार दिल्ली, राजकुमार, मुजफ्फरनगर, हरी मोहन अग्रवाल, छत्तरपुर, बी० व० बिमानी, नान्देड़, जयसिंह, सूरसागर, एस० के०, दिल्ली, आर्य समाज, मंदसोर, देवेन्द्रकुमार रस्तोगी, शाहजहांपुर, एस० के० मुरारका, शिलांग, दामोदरदास स्तम्भ, सत्यनारायण प्र० आर्य बस्ती, मंत्री आर्य समाज, खरगाव राजेन्द्र कुमार भटनागर, भोपाल।

20 रुपए दान देने वाले : सर्वश्री पदमसेन अग्रवाल, मुजफ्फरनगर, जी० एन० भटनागर, सीतापुर, विश्वामित्र जी, दिल्ली' विवेक मरोफर, बम्बई ईश्वरलाल, गुलबगी जगदीश, अमृतसर आर० सी० पी० यादव देवरिया विष्णु प्रसाद आर्य होशंगाबाद, सरोज आर्य मेरठ, ओउमशरण वर्णवाल, मुंगेर।

11 रुपए दान देने वाले : सर्वश्री सीताराम प्रधान, रामपुर, नन्द किशोर दीक्षित, कानपुर, महेन्द्र प्रसाद आर्य, प० चम्पारण करणसिंह, अहमदाबाद'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जसाराम वर्मा आर्य, मण्डी के० एल० गोधा, उदयपुर चांदमल स्वर्णकार, फतेहनगर, विजयकुमार, गोरखपुर, वी० एस० गुप्ता नई दिल्ली, मोतीलाल, धनबाद, लक्ष्मीनारायण, इटावा, एम० एल० कोटवाल, जम्बूतवी, कैलाशचंद मुजफ्फरनगर, ओमप्रकाश शर्मा, दिल्ली, देवातिथि, मद्रास हरीहर शर्मा, लखनऊ, शशिकान्त, पुणे गंगाराम चेल्दी, पुणे फूलचंद जैन, विलासपुर आर० पी० शर्मा, कांगड़ा, ज्ञान प्रकाश, फरीदाबाद, लीलाराम पुजारी, खेड़ा दयानन्द गुप्ता, शाहदरा रबि जी, सोलापुर विनोद बुक डिपो, दल्ली राजहरा अनन्त सिंह, मेरठ, गोविन्दराम, हरिद्वार वैद्य राममुनि वानप्रस्थी, हिसार रामपुरी गोस्वामी, उज्जैन, बनवारीलाल आर्य, एटा श्यामलाल अकोला बेनी सिंह, बिजनौर सावित्री देवी आर्य।

10 रुपए दान देने वाले : सर्वश्री गोविन्द राम लातूर, आर्य समाज, सोनीपत, मानसिंह, अलवर, हंसराज अग्रवाल, दिल्ली जमादार सिंह, मुजफ्फरनगर, डा० त्रिलोकी नाथ गुप्ता, लखनऊ गंगाराम खैलदास, बंगलौर, हरिप्रसाद सिंह, अलीगढ़, स्वामी कृष्णचन्द, अम्बाला, परमानन्द, दिल्ली, हजारीलाल, दिल्ली श्याम मुरारी आर्य, अलीगढ़, कँवरचन्द, फरीदकोट, तेजनारासिंह, सहर्षा, डा० वीरेन्द्र सिंह, श्री गंगानगर, नत्थूराम शास्त्री, डेरावस्ती, महेन्द्र भाई, नवसारी, चौ० छिरपाल सिंह, महेन्द्रगढ़, टी० के० मिश्रा, पटना शिवरतनसिंह, जालौन, शिवनारायण सागर, कृष्ण मुरारी कौशल, इटावा हरीवंशपंडीया, भोखपुर, गुलालसिंह, पाली महादेव प्रसाद यादव, सहर्षा हरीसिंह, फरूंखाबाद।

5 रुपए दान देने वाले : सर्वश्री बादशाह सिंह, चित्तौड़, पं० किशनलाल फरीदाबाद, प्रकाश माहेश्वरी, बुलन्दशहर, नारायण सिंह, भागलपुर, गंगाराम, स० परगना कंठी भैय्या, देवघर उदय नारायण भगत, भागलपुर।

"उत्तम दान देने वाला उसको कहते हैं जो देश, काल और पात्र को जानकर सत्यविद्या, धर्म की उन्नतिरूप परोपकारार्थ देवे और वह मध्यम है जो कीर्ति वा स्वार्थ के लिए दान करे।"

—महर्षि दयानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समितिं की माँगें

1. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानन, नियम और अधिकार बनाए जाएं।

2. मजहब के आधार पर पुलिस और अन्य सरकारी विभागों में आरक्षण की माँग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

3. कश्मीर, असम व देश के सभी भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

4. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

5. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

6. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाय।

7. कश्मीर सम्बन्धी धारा 370 तुरन्त हटाई जाए और वहाँ भारत के नागरिकों के बसने की व्यवस्था हो।

8. मजहब के नाम पर अधिकार माँगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

9. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथपत्र भरने का नियम बनाया जाए जिसमें वह स्वीकार करे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

10. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

11. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

		मूल्य
१.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	५०० रु.
२.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्त्तण्ड)	१०१ "
३.	वेद-ज्योति	२० "
४.	वेदांजलि : (वर्ष के ३६५ दिनों के लिए ३६५ वेद मन्त्रों की व्याख्या)	४० "
५.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या)	३० "
६.	अथर्ववेद परिचय	६ "
७.	संस्कार विधि (सजिल्द)	२० "
८.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	३० "
९.	यज्ञ-मीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण) (डा. रामनाथ वेदालंकार)	३० "
१०	सत्यार्थ-प्रकाश (१०" ⊠ १५") स्थूलाक्षर (सादे पेपर पर)	१५१ "
	" " (आर्ट पेपर पर)	२५१ "
११	ज्योति-स्तम्भ	१० "
१२.	वैदिक सम्पत्ति	१५१ "
१३.	सामवेद पद्यानुवाद (मृदुल कीर्ति)	५१ "
१४.	योगासन	२ "
१५.	योग और ब्रह्मचर्य	३ "
१६.	Concept of God	५० "
१७.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	३० "
१८.	LIGHT OF TRUTH	५० "
१९.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	६ "
२०.	वैदिक गीता (गीता के श्लोकों का सरल हिन्दी भाष्य)	५० "
२१.	संक्षिप्त महाभारत	५० "
२२.	संक्षिप्त रामायण	१२ "

२३. गायत्री मन्त्र का चार्ट (हिन्दी व्याख्या व दोनों ओर पत्ती लगा) १.५० पैसे

कम से कम दस प्रतियां मंगवायें। सूचीपत्र मुफ्त मंगायें। आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

कार्यालय :
२२८६, आर्यसमाज रोड
करोलबाग, नई दिल्ली-११०००५

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर
महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
मुखमेलपुर, दिल्ली-११००३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यों का इतिवृत्त —

आदिमानव कैसे थे ?

— राजेन्द्र सिंह

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि 'आर्य' शब्द जातिवाचक न होकर गुणवाचक है और यह सिद्धान्त वधारना अज्ञानता का द्योतक है कि आर्य भारत के मूल निवासी नहीं। इस अंक में विद्वान् लेखक ने आदिमानव और उसकी ऐतिहासिक यात्रा का सप्रमाण विवरण प्रस्तुत किया है और यह भी दिखाया है कि राज्य की अवधारणा इस इतिवृत्त-यात्रा में कैसे व्यावहारिक रूप ले पाई। —सम्पादक

आदिकाल में सभी मानव श्रेष्ठगुणों से युक्त थे, इस कारण **आर्य** कहलाते थे। इस आदर्श के अनुरूप श्रेष्ठ और सत्त्वगुणी व्यक्ति को कालान्तर में भी **आर्य** की उपाधि मिलती रही। इस प्रकार भारतीय इतिहास में आदि-मानव, भूमिपुत्र, प्रमण्डूक (मण्डूक), अग्रज, विप्र शब्द उन मनुष्यों के वाचक हैं, जो मानवसृष्टि के आदि में ईश्वर की कृपा से पृथ्वी-सूर्य के संयोग से उत्पन्न हुए थे। वाल्मीकि रामायण के अनुसार सबका एक वर्ण (ब्राह्मण वर्ण = अग्रज वर्ण), समभाषा (वैदिक भाषा) और एक रूप था (अमरेन्द्रमया बुद्ध्या प्रजाः सृष्टास्तथा प्रभो। एकवर्णाः समभाषा एकरूपाश्च सर्वशः।— उत्तर काण्ड ३०।१९)। महाराज भोज ने भी आदिकालीन मनुष्यों को अग्रज वर्णी (ब्राह्मण वर्णी) कहते हुए आदिकाल में एकवर्णीय प्रजा माना है। (एकोऽग्रजन्मा वर्णोऽस्मिन्—समरांगण सूत्रधार ६।३)। महाभारत में भी यही कहा गया हैं कि आदिकाल में वर्णों में कोई विशेषता नही थी, सारी प्रजा ब्राह्मण थी (न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममिदं जगत्। ब्रह्मणा पूर्वं-सृष्टं हि कर्मभिर्वर्णतां गतम्॥—शान्तिपर्व १८८।१०)। महाभारत में एक दूसरे स्थल पर बताया गया है कि चौपायों में गाय और मनुष्यों में ब्राह्मण अग्रज है। (गावश्चतुष्पदामादिमनुष्याणां द्विजातयः।—आश्वमेधिकपर्व ४४।७)।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस प्रकार आदिमानव=आर्य को धर्मपरायण सात्विक मानस, निर्भ्रान्त बुद्धि, कृश (पतला) परन्तु सुदृढ़, नीरोग शरीर और सर्वथा प्रदूषणरहित सदा वसन्त-समान वातावरण प्राप्त हुआ। वेदवाणी के माध्यम से इन ४,००० युगलों को गर्भवासकाल में ही ज्ञान की स्मृति से उत्पन्न होने पर ज्ञात हुआ कि सृष्टि के निर्माता का कथन है कि 'मैंने यह भूमि आर्यों (श्रेष्ठों=आदि-मानवों) को दी है।' (अहं भूमिमददामार्याय।—ऋग्वेद ४।२६।२)। इस लिए ईश्वर का आदेश है कि जिस प्रकार मैंने तुम्हें आर्य (आदर्शस्वरूप श्रेष्ठ) बनाया है, उसी प्रकार अपनी भावी सन्तति और विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाना (कृण्वन्तो विश्वमार्यम्—ऋग्वेद ८।६३।५)।

अल्पज्ञ मानव काल के विपर्यास से ईश्वरीय आदेश को भूल गया। अपने को श्रेष्ठ (आर्य) न रख सका। यह सब कैसे हुआ? इसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भारतीय साहित्य में विस्तार से प्राप्त होता है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार, जैसा ऊपर बताया गया है, आदिमानवों की क्लेश-विपत्ति-रहित ४,००० वर्ष की आयु होती थी। ज्यों-ज्यों अवस्था बढ़ती गई त्यों-त्यों पूर्व-प्राप्त अष्ट सिद्धियाँ क्षीण होती गईं। उस समय (आदिकाल में) स्त्रियों को आज की भाँति प्रतिमास रजोदर्शन नहीं होता था। इस कारण अपनी आयु के अन्तिम भाग में ही उन्हें सन्तानोत्पत्ति सम्भव हो पाती थी (मसि मासे-स्यार्तवं यद्यत्तत्तदासीद्धियोषिताम्॥ तस्मात्तदा न सुषुवुः सेवितैरपि मैथुनैः। आयुषोऽन्ते प्रसूयन्ते मिथुनान्येव ते सकृत्॥—वायु पुराण ८।४२,४३)। जब स्त्री पुरुषों की अष्ट सिद्धियाँ क्षीण हुईं तो क्षुधा लगने लगी, स्त्री को पुरुष और पुरुष को स्त्री की अपेक्षा होने लगी। यहीं परस्पर सहवास का सूत्रपात हुआ। इस पर भी रजोदर्शन आयु के अन्तिम भाग में होने के कारण स्त्रियाँ एक से अधिक संतान उत्पन्न नहीं कर सकती थीं। इसी काल में पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले सुस्वादु, मधुर और रसीले फल-फूलों के सेवन से उनके प्रति अनुराग और क्षुधा की वृद्धि के कारण अनेक युगलों में अमर्यादित आहार करने की अशिव संकल्प जागृत हुआ। इस अशिव संकल्प ने उनके मन में सत्त्वगुण के ह्रास और रज-तम गुणों की वृद्धि के प्रभाव से मानसिक लोभ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का प्रादुर्भाव हुआ। मानसिक लोभ ने परिग्रह (सभी पदार्थों को चारों ओर ले ग्रहण करने की प्रवृत्ति) को जन्म दिया। परिग्रह ने मानसिक शिथिलता को प्रकट किया। मानसिक शिथिलता ने आलस्य और आलस्य ने उनके तेज को परिक्षीण कर दिया (वराहमिहिरकृत बृहत्संहिता १।१ की टीका में भट्टोत्पल द्वारा उद्धृत महर्षि पराशर के वचनानुसार)। तेज के परिक्षीण होने पर वे अपनी कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण न रख सके, जिसके परिणामस्वरूप वे आहार का अधिक मात्रा में सेवन करने लगे। इससे उनके शरीर में स्थूलता आ गई। स्थूलता से शारीरिक थकान, शारीरिक थकान से आलस्य, आलस्य से क्रियात्मक संचय, संचय से परिग्रह और परिग्रह से क्रियात्मक लोभ का प्रादुर्भाव हुआ (चरक संहिता, विमान स्थान ३।२८)। इस प्रकार अशिव संकल्प से पहले मनोगत और फिर शरीरगत पतन हुआ। जब मनुष्य की सारी सिद्धियाँ क्रमशः नष्ट हो गईं, तब उनके नाश से मनुष्य आकाशवत् निर्मल और उच्चावस्था से पतित हो गया (तथा ताः क्रमशो नाशं जग्मुः सर्वत्र सिद्धयः। तासु सर्वासु नष्टासु नभसः प्रच्युता नराः॥—मार्कण्डेय पुराण ४६।२६)। इस पतन से स्त्रियों में जहाँ पहले जीवन में एक बार रजोदर्शन होता था, वहाँ प्रतिमास रजोदर्शन होने लगा। तब से यह रजोदर्शन **मासिक धर्म** कहलाने लगा। यहाँ से बार-बार सन्तानोत्पत्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ (मार्कण्डेय पुराण ४६।२९)। इस प्रकार प्रथम पीढ़ी के ४,००० वर्ष व्यतीत होते-होते जनसंख्या की अतिवृद्धि का सूत्रपात हो गया।

सन्तान के प्रति ममत्व की भावना पनपी। ममत्व के कारण वृक्षों और धरती पर अपने-अपने अधिकार की भावना का उदय हुआ। फिर वे एक दूसरे के वृक्षों को छीनने लगे। इस दुराचरण से वृक्ष नष्ट होने लगे। दुराचरण के वायुमण्डल पर परोक्ष दुष्प्रभाव से अवशिष्ट वृक्षों के स्नेह, विमलता, रस, वीर्य, विपाक और प्रभाव आदि गुणों में क्षीणता आ गई। अकृष्टपच्या भूमि कृष्टपच्या हो गई। सदा वसन्त का वातावरण नष्ट हो गया। एक ही वसन्त ऋतु छह ऋतुओं में विभाजित हो गई (अकृष्टपच्या मेदिन्याभवन् शालितण्डुला। ऋतवः कालपर्यासात् षड् वसन्तादयोऽभवन्॥—समरांगण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूत्रधार ६।२४,३२)। इस प्रकार हीन गुण वाले अन्न और प्रदूषित वायुमण्डल के आहार-विहार से उस आदिकाल से अपरकाल की ओर पतनावस्था में बढ़ने वाली प्रजा के शरीर पहले की भाँति निर्मल, नीरोग और परिपुष्ट न रहकर पाचक अग्नि और वात से पीड़ित होकर ज्वरादि व्याधियों से आक्रान्त हो गये (चरक संहिता विमान स्थान ३।३६)। इस प्रकार आदिमानव वात, पित्त और कफ दोष के कारण रोगी और शोकाकुल कलेवर वाले हो गये (ततस्तेषामभूद् दोषरोगशोकाकुलं वपुः।—समरांगण सूत्रधार ६।३३)।

मानसिक व शारीरिक रोगी होने से वे आदिमानव स्वकर्मों के दोष से विविध द्वन्दों से घिर गये। त्रिविध दुःखों (आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक) का आगमन हो गया। शीत, निहार, हिम, ताप और वात से पीड़ित रहने लगे। इन प्रकोपों से बचने के लिए वे प्रतिकारस्वरूप कुटी नुमा घर बनाकर रहने लगे (समरांगण सूत्रधार ६।३५,३६)। फिर कृत्रिम दुर्गों का निर्माण हुआ (मार्कण्डेय पुराण ४६।३६)।

प्राकृतिक जीवन नष्टप्राय हो गया। कृत्रिम जीवन का सूत्रपात हुआ। जनसंख्या अधिकाधिक वृद्धि पाने लगी। ग्राम्य अर्थात शहरी जीवन प्रारम्भ हो गया। शीत-ताप-वर्षा से बचने के लिए सबने यथायोग्य और यथारुचि जीवन के पूर्वकाल में प्राप्त वेदज्ञान की आंशिक स्मृति के आधार पर गृह-निर्माण किया। गृहनिर्माण के लिए वृक्षों का प्रयोग हुआ। तृष्णा, क्षुधा और विषाद का प्रतिकार करने के लिए कृषि कर्म का प्रारम्भ हुआ। (वायु-पुराण ८।९६,९७,१२८-१३०)। इन कृत्रिम उपायों से एक सीमित लाभ हुआ। मानव का मन पूर्व की भान्ति अपनी पूर्ण सत्त्वगुणी अवस्था में न पहुंच पाया। जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ देश का विस्तार हुआ। कुछ काल बीतने के उपरान्त सत्त्वगुण के प्रति पुनः अनादर की प्रवृत्ति बढ़ी और फिर आदिकाल के प्रथम १०,००० वर्ष बीतते-बीतते उन्होंने कार्य-अकार्य, गम्य अगम्य, वाच्य-अवाच्य, भक्ष्य-अभक्ष्य, दोष-अदोष कुछ भी नहीं छोड़ा। मनुष्य लोक से धर्म (जीवन मूल्यों) का विलोप हो गया। अन्ततोगत्वा इस पतन का परिणाम यह हुआ कि ब्रह्म-प्रदत्त ज्ञान वेद का इस आदिकालीन मानवलोक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में आदर न रहा (महाभारत शान्तिपर्व ५९।२०,२१)।

तब आदिकालीन प्रजा की पतनशील अवस्था से चिन्तित होकर कतिपय प्रतिष्ठित सत्त्वगुणी मनुष्यों ने अमितबुद्धि, निर्मलमति और दीर्घजीवी स्वयम्भू ब्रह्मा से प्रवर्त्तमान विपत्ति के निवारणार्थ उपाय सुझाने का निवेदन किया कि 'लोभ-मोहादिदुर्भावों' ने मानव लोक के ब्रह्म सनातन (सनातन वेद) को ग्रस लिया है, और हमें भय में डाल दिया है। इससे हमारा जीवन संशयग्रस्त हो गया है। अत: हमारे कल्याण के लिए किसी उपाय पर ध्यान दें।'(महाभारत शान्तिपर्व ५९।२४-२७)। ब्रह्मा ने बचन दे दिया। तब ब्रह्मा ने अपनी अमित बुद्धि और निर्मल मति से एक लाख अध्याय वाले एक विशाल ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रन्थ **त्रिवर्ग** के नाम से विश्वविख्यात हुआ (महाभारत शान्तिपर्व ५९।२९-३२)। यह त्रिवर्ग शास्त्र विश्व का सर्वप्रथम मानवकृत शास्त्र था। इसके साथ ही ब्रह्मा ने अनुभूत विषयों के स्मरणार्थ वाणी को वर्ण और स्वर से चिह्नित करके लिपि का आविष्कार किया (अनुभूतस्य स्मृत्यर्थं लिखितं निर्मितं पुरा। यत्नाच्च ब्रह्मणा वाचं वर्ण-स्वर-विचिह्नितम्॥ अनुभूतस्मारकं तु लिखितं ब्रह्मणा स्मृतम्॥—शुक्रनीतिसार २।२८४ तथा ४।५।१६४)।

इसके उपरान्त ब्रह्मा ने अनेक मनुष्यों को प्रशिक्षण देने का संकल्प किया। तब सर्ग की सकल गति के अन्तर्गत मानव-सर्ग को आतुर जानकर ब्रह्मा ने मनुष्यों के सत्त्वगुणी भूत, आतुर वर्तमान और भविष्य की चिन्ता की। आदि-सत्युग (आदिकाल) के क्रमश: क्षय हो जाने पर लोकों की मोहग्रस्त अवस्था का भली भान्ति अवलोकन करके ज्ञान का आयोजन किया। लोगों के अज्ञान की शान्ति के लिए एक **ज्ञानपीठ** की स्थापना की। शिष्यवर्ग का निर्माण किया। इस शिष्यवर्ग में वसिष्ठ तथा अन्य महर्षि तथा सनत्कुमार, नारद आदि निवृत्तिपरायण महानुभाव भी थे (योगवासिष्ठ २।११।५-८)। यहीं से गुरु-शिष्य-परम्परा का सूत्रपात हुआ।

ब्रह्मा द्वारा शिक्षित होने के कारण ये ब्रह्मा के मानसपुत्र कहलाये। इन मानसपुत्रों में भृगु, पुलस्त्य,पुलह, क्रतु, अंगिरा, मरीचि, दक्ष, अत्रि और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वसिष्ठ उल्लेखनीय हैं। ये **नव-ब्रह्मा** कहलाये (मार्कण्डेय पुराण ४७।५,६) इन नव-ब्रह्माओं में से मारीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ **सप्तर्षि** कहलाने के साथ-साथ **चित्रशिखण्डी** पद से विभूषित हुए। इन चित्रशिखण्डी सप्तर्षियों ने हिमालय के अन्तर्गत महामेरु पर्वत पर एकत्रित होकर चारों वेदों से सम्मण्डित अपने सप्तमुखों से लोकधर्म के संज्ञापक एक शास्त्र की रचना की, जिसमें धर्म, अर्थ, और काम के साथ अन्त में मोक्ष का वर्णन था। चारों वेदों के सार से मण्डित और ब्रह्मा के **त्रिवर्ग शास्त्र** से सिंचित एक लाख श्लोकों से युक्त यह चित्रशिखण्डीय शास्त्र **ओ३म्** से प्रारम्भ होता था (महाभारत शान्तिपर्व ३३५।२७-४५)।

ब्रह्मा के आदेश से क्रियाकर्म के विधानार्थ और मर्यादा के नियमन के लिए भूमिमंडल के पृथक्-पृथक् विभाग करके भूपालों की नियुक्ति की परिकल्पना की गई। बहुत-से स्मृति और यज्ञशास्त्र रचे गए। सभी शास्त्र धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि के लिए रचे गए (योगवासिष्ठ २-११-९-१२)। तब ब्रह्मा द्वारा स्थापित ज्ञानपीठ से विद्या प्राप्त अनुभवी और साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने अपने से भिन्न असाक्षात्कृतधर्मा लोगों को उपदेश देकर वेद-मन्त्रों के अर्थ बताये (यास्ककृत निरुक्त १-२०)। इन १०,००० वर्षों में वेदों के निर्मल, सम्यक् और निर्भ्रान्त होने के प्रति अशिव संकल्प के दोष से प्रवृद्ध अज्ञानता के कारण जो अनादर प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई थी, उसका साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने तर्कसंगत निवारण किया। वेदों के महत्त्व की पुन:स्थापना करते हुए उन्होंने स्पष्ट घोषित किया कि वेद-शास्त्र के बिना मानवकृत शास्त्र की प्रामाणिकता नहीं है। सारे शास्त्र (जो प्रथमत: हमने बनाए हैं) सनातन वेद से ही नि:सृत हुए हैं, जिनके लिए ज्ञान दुर्बोध और जो (लोभ-मोह आदि में लिप्त होने के कारण) वेदों का अध्ययन नहीं कर पाये, उनके लिए उस वेद से ज्ञान को उद्धृत करके हम ऋषियों ने (विविध) शास्त्र बनाये हैं (बृहद् योगी याज्ञवल्क्य स्मृति १२-१,२)।

उक्त तथ्य का समर्थन करते हुए महर्षि वेदव्यास ने भी कहा है कि लोक में जितने भी आगम-शास्त्र और उनकी प्रवृत्तियां विद्यमान हैं, वे सभी वेद के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आधार पर ही यथाक्रम आरम्भ हुई हैं (महाभारत अनुशासन पर्व १२२-४)। मत्स्य पुराण १४२-४०-४२ के अनुसार ब्रह्मा की प्रेरणा से सप्तऋषियों ने वेद के आधार पर दार (विवाह आदि कर्म) और अग्निहोत्र सम्बन्धी अनेक विध श्रौत धर्मों (श्रुति पर आधारित कर्त्तव्यों) का और स्वायम्भुव मनु (स्वयम्भू ब्रह्मा के एक अन्य मानस पुत्र) ने वर्ण-आश्रम सम्बन्धी परम्परागत आचार लक्षण स्वरूप स्मार्त्त धर्मों (कर्त्तव्यों) का विवेचन किया। इस आदि-कालीन इतिहास के असाधारण ज्ञाता चाणक्य (वत्स=वात्स्यगोत्रीय) अपने वात्स्यायन कामसूत्र १-१-६ में स्पष्ट लिखते हैं कि ब्रह्माकृत त्रिवर्ग-शास्त्र के एक वर्ग (धर्म) धर्म-अधिकरण को पृथक् करके स्वायम्भुव मनु ने अपने स्मृति ग्रन्थ (मनुस्मृति) की रचना की। पण्डित लेखरामकृत आर्य कुलियात मुसाफिर भाग १ पृष्ठ ५३ पर उद्धृत श्लोक के अनुसार कृतयुग (सत्युग) के १०,०१० वर्ष व्यतीत होने पर भाद्रमास की पूर्णिमा को स्वायम्भुव मनु ने अपना स्मृति ग्रन्थ ब्रह्मा के आदेश से बनाया (अब्दानांदशकं सहस्रदशकं यातं च सत्ये युगे। भाद्रे मासि कृतामया हि मनुना ब्रह्माज्ञया पूर्णिमा ॥)।

इस प्रकार आद्य कृतयुग के प्रारम्भिक १०,००० वर्षों तक धीरे-धीरे क्षीण होती सद्वृत्तियों की रक्षार्थ और उन्हें पुनः स्थापित करने के लिए ध्यान योग-मनन द्वारा ब्रह्मबल प्राप्त करके प्रजा के संरक्षण और परिपालन हेतु प्रजा के अनुरोध पर ब्रह्मा ने स्वायम्भुव मनु को राजा के पद पर नियुक्त किया (महाभारत शान्तिपर्व ६७-१८-६०)। स्वायम्भुव मनु को विश्व का सर्वप्रथम शासक होने का गौरव प्राप्त हुआ। पूर्व काल का एकवर्णीय आद्य समाज अब (१०,००० वर्षों के व्यतीत होते-होते) परिस्थितिवश चातुर्वर्णीय हो गया।

हिमालय में जन्मी और पालित-पोषित प्रजा के परिपालनार्थ स्वायम्भुव मनु ने हिमालय में ही अपनी राजधानी बनाई। सरयू, कर्णाली नदी और तिलानदी के मध्य त्रिवेणी तीर्थ लालीघाट के ऊपर गगनचुम्बी शैलप्रस्थ पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खड्गचक्र नाम से विख्यात स्थल पर स्वायम्भुव मनु ने अपनी राजधानी स्थापित की। मनु द्वारा स्थापित होने से यह राजधानी मानवी कहलायी। यहाँ स्वायम्भुव मनु की सिंहासन शिला चतुष्कोणीय रूप में आज भी (स्मृति स्थल के रूप में) विद्यमान है। यहाँ अति रमणीय स्थल है। यह स्थल खड्ग और चक्रों से सुरक्षित था। अब इसे चौके-ढुंगा कहते हैं। इसे चौके-ढुंगा से माल और हिमालय स्पष्टतया दृष्टिपथ में आते हैं। उक्त लालीघाट तीर्थ को एकाग्र भी कहते हैं (योगी नरहरिनाथशास्त्रीकृत देवभूमि भारत और आध्यात्मिक नेपाल पृष्ठ १४२)।

इसी एकाग्र नामक स्थल पर बैठे स्वायम्भुव मनु के पास अनेक महर्षि धर्म और वर्णधर्म आदि का उपदेश लेने गए (मनुमेकाग्रासीनमभिगम्य महर्षयः—मनु स्मृति १·१)। तब स्वायम्भुव मनु ने विनम्रतापूर्वक घोषणा की कि जो कुछ किसी का भी धर्म मुझ मनु ने परिकीर्तित किया है, वह सब वेद से अभिहित है और वेद सर्वज्ञानमय है (मनुस्मृति २·७)। अतः वेद की निन्दा करने वाले (जो १०,००० वर्ष के पतन काल में उत्पन्न हो चुके थे अथवा भविष्य में होंगे) नास्तिक हैं (मनुस्मृति २-११)। वेदों की पुनः स्थापना करते हुए मनु (स्वायम्भुव) ने आगे कहा कि भूत, वर्तमान और भविष्य का सम्पूर्ण ज्ञान वेद से प्रसिद्ध होता है (मनु स्मृति १२-९७)। इस प्रकार वेदों के आधार पर प्रजापति स्वायम्भुव मनु ने एक आदर्श-राज्य की आधारशिला रखी। नारदीय मनुस्मृति १-१ के अनुसार प्रजापति मनु (स्वायम्भुव) के राज्य काल में मनुष्यलोक सत्यवादी हो गया था और उसने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त की।

इस काल तक प्रजा समृद्ध होने के साथ-साथ संख्या में भी वृद्धि पाने लगी। जनसंख्या वृद्धि होने पर घरों का विस्तार हुआ। भूमि की अधिक आवश्यकता पड़ी। परिणामतः जनसमुदाय अपने उत्पत्तिस्थल हिमालय के चारों ओर फैल गया। इधर स्वायम्भुव मनु के प्रियव्रत और उत्तानपाद नामक दो पुत्र हुए। प्रियव्रत का विवाह प्रजापति कर्दम की पुत्री काम्या से हुआ। प्रियव्रत और काम्या से दस पुत्र और दो कन्याएं उत्पन्न हुईं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इनमें से पुत्रों के नाम थे—आग्नीध्र, मेधातिथि, वपुष्मान्, ज्योतिष्मान्, द्युतिमान, भव्य, सवन, मेघा, अग्निबाहु और मित्र। इनमें अन्तिम तीन निवृत्तिपरायण महायोगी हुए। प्रथम सात प्रवृत्तिपरायण थे।

प्रियव्रत ने जनसंख्या में अतिवृद्धि देखकर और सर्वत्र राज्य कार्य द्वारा नियन्त्रण-कार्य की कठिनाई का अनुमान करके अपने प्रथम सात पुत्रों (प्रवृत्तिपरायण) को सात विभिन्न द्वीपों का राजा बना दिया। वे द्वीप क्रमशः—जम्बु द्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलि द्वीप, कुशद्वीप, क्रौंच द्वीप, शाक द्वीप और पुष्करद्वीप। ब्रह्मा और उनके साक्षात् शिष्यों ने क्रियाकर्म के विधानार्थ और नियमन को दृष्टि में रखकर पहले ही पृथ्वी का सर्वेक्षण करके देश-विभाग कर लिया था ताकि समय पाकर भूपालों की नियुक्ति की जा सके (योग वासिष्ठ २-११-६-११)। अब उस सर्वेक्षण को क्रियात्मक रूप देने का समय आ गया था। अतः प्रियव्रत के सप्त पुत्र सप्त विभिन्न द्वीपों के शासक नियुक्त किए गए।

जम्बु द्वीप प्रियव्रत के ज्येष्ठ पुत्र आग्नीध्र को शासनार्थ प्राप्त हुआ। इसके साथ ही भारत में उत्पन्न आदि-मानवों के प्रथम वंशजों का विदेश (प्लक्ष आदि छह द्वीपों में) गमन प्रारम्भ हुआ। प्रियव्रत का ज्येष्ठ पुत्र आग्नीध्र जम्बुद्वीप का ही शासक बना रहा। जम्बुद्वीपेश्वर आग्नीध्र ने अपने नौ पुत्रों को जम्बु द्वीप के नौ भाग करके एक-एक भाग का शासन सौंप दिया। आग्नीध्र के नौ पुत्र यथाक्रम थे—नाभि, किंपुरुष, हरिवर्ष, इलावृत्त रम्य, हिरण्यवान्, कुरु, भद्राश्व और केतुमाल। इन्हें क्रमशः हिमाख्य, हेमकूट, नैषध, मध्यमसुमेर, नील, श्वेत उत्तर, श्रृंगवतवर्ष, माल्यवन्त और गन्धमानवर्ष प्राप्त हुए। इस प्रकार आग्नीध्र (प्रियव्रत पुत्र) के ज्येष्ठ पुत्र नाभि को हिमाख्य नामक प्रदेश शासनार्थ प्राप्त हुआ (विष्णु पुराण २-१-५ १८)।

हिमाख्य पति नाभि के पुत्र ऋषभ देव हुए। ऋषभदेव के पुत्र हुए भरत। भरत की माननीय धर्मशीलता के प्रभाव से हिमाख्य नामक प्रदेश भारतवर्ष कहलाने लगा। भागवत पुराण ५-७-३ के अनुसार भारतवर्ष का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रारम्भिक नाम अजनाभ था। मानव की आदिसृष्टि अमैथुनी होती है। वायु पुराण ८-३७.४० के अनुसार जो ४००० मिथुन अर्थात् ८००० स्त्री-पुरुष मानव-सृष्टि के आदि में प्रकट हुए थे, वे अमैथुनी पद्धति से ही प्रकट हुए थे। उनके माता-पिता मनुष्य न होकर धरती-सूर्य थे। इसलिए किन्हीं मनुष्यों द्वारा उत्पन्न न होने के कारण वे अज कहलाये। इन अजों (जाति-वाचक रूप में अज) की नाभि अर्थात् उत्पत्तिस्थल अजनाभ कहलाया। चूंकि योगवासिष्ठ, ब्रह्म पुराण और महाभारत के प्रमाण (लेख के प्रारम्भ में प्रस्तुत) से अजों (अमैथुनी सृष्टि वाले आदि मानवों) की नाभि (केन्द्र=उत्पत्ति स्थल) भारत वर्ष का हिमालयान्तर्गत प्रदेश था, इस कारण उसका नाम अजनाभ पड़ा। इस प्रकार मानव सृष्टि के उत्पत्तिस्थल में उत्पन्न प्रथम शासक की सर्वप्रथम शासित भूमि का नाम अजनाभ पड़ा। प्रमुख उत्पत्ति स्थल और उसके दक्षिण का सारा त्रिकोणीय प्रदेश अजनाभ कहलाया। इसी का उत्तरीय भाग शीत और बर्फीला होने से हिमाख्य कहा गया। कालान्तर में यही भारतवर्ष कहलाने लगा। तब से आज तक इस त्रिकोणीय देवभूमि का भारतवर्ष नाम लोकप्रसिद्ध चला आ रहा है।

उपरोक्त सभी प्रमाणों के अवलोकन से यह भली-भाँति सिद्ध हो जाता है कि भारत मानव-सृष्टि का आदि जन्मदाता है। इसी केन्द्रीय जन्मभूमि में जन्म लेकर कालान्तर में इसी जन्मभूमि भारत के सपूतों ने समय पाकर अन्य द्वीपों को बसाया। अतः आर्यों के भारत आगमन की पाश्चात्य कल्पना शशश्रृंग की भांति सर्वथा मिथ्या है।

आवश्यकता है

'जनज्ञान' कार्यालय में एक संपादन-सहकर्मी की आवश्यकता है जो आर्ष सिद्धांतों का ज्ञान रखने वाला तथा प्रेस के काम से परिचित हो। वेतन योग्यतानुसार। 'जनज्ञान' कार्यालय (करोल बाग) में मिलें या सम्पादक से तुरन्त सम्पर्क करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शस्त्र की गूंज उठे झंकार

—वेद प्रकाश

शत्रु के शोणित से प्रिय आज
सजाओ भारत मां का साज
गूंजे सम्पूर्ण विश्व में गान-
धन्य है ऋषियों की सन्तान !

कौन है शत्रु-मित्र पहचान !
बढ़ाओ स्वसंस्कृति का मान
धरा पर हो शोषण का अन्त
सदा, पूजित हों सज्जन-सन्त

विजय दशमी कर रही पुकार
शस्त्र की गूंजे फिर झंकार
राम की होवे जय-जयकार
खुले न घूमें लण्ठ लबार

न हो मां बहनों का अपमान
न काटी जावें धेनु महान्
धर्मचारी हों बालक-तात
साध्वी बहनें एवम् मात

जाग जाए रघुकुल की लाज
उठा लें चक्र कृष्ण महाराज
भीम की गदा उठे हुंकार
पार्थ-गाण्डीव करें टंकार

धर्म का स्यन्दन हो गतिमान्
न हो पारतन्त्र्य तथा अपमान
बनाएं मां बच्चों को नित्य
ब्रह्मचारी साधक विद्वान्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्रह्मचर्य्य-विज्ञान

— सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

प्रत्येक व्यक्ति दीर्घायु होना चाहता है ताकि वह अधिक से अधिक आयु कर सके। अधिकाँश मनुष्य तो मृत्यु के नाममात्र से भयभीत हो जाते हैं। वैदिक संस्कृति में भी के दीर्घायु पर विचार किया गया है दीर्घायुत्व के चरम के रूप में हम पाते हैं—मृत्यु पर विजय। इसी कारण वेदों में कहा गया—

ब्रृह्मचर्येण तपस्या देवा मृत्युमुपाहनत।
इन्द्रोह ब्रृह्मचर्येण देवेभ्य:स्वराभरत॥ (अथव)

अर्थात ब्रृह्मचर्य व तप से देवताओं ने मृत्यु पर विजय पाई।

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे विभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः॥
॥ अथर्व ॥

। वीर्य की महत्ता ।

मनुष्य के शरीर का तत्व-भाग वीर्य है। वीर्य का स्तम्भन कठिन कार्य है। इसकी रक्षा की चिन्ता योगियों की उन्निद्र आंखों में, ऋषियों के चेहरों की झुर्रियों में और ब्रह्मचारियों की नियन्त्रित दिनचर्या में किसे नहीं दीख पड़ती? मूर्ख लोग भले ही जीवन-शक्ति के रहस्य को न समझते हुए उल्टे मार्ग पर चलें परन्तु समझदार लोग वीर्य-रक्षा को जीवन का लक्ष्य-बिन्दु जानते हैं। इस हिमाद्रि-सम-कठिन दुरूह कार्य में तत्वज्ञानियों के चिन्तित रहने का मुख्य कारण यह हैं कि शरीर के सार अंश को अन्दर ही अन्दर खपा लेने से विद्या और बल की सतत वृद्धि होती है, वीर्य नाश से मनुष्य का चौमुखा ह्रास होता है। वीर्य रक्षा बड़े महत्व का कार्य है।

वीर्य रक्षा के महत्व को समझने के लिए 'वीर्य' क्या वस्तु है, इस बात को समझलेना आवश्यक है। हम यहां पर भारतीय आयुर्वेद तथा पाश्चात्य-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आयुर्विज्ञान, दोनों के वीर्यविषयक मुख्य-मुख्य विचारों का उल्लेख करेंगे ताकि हमारे पाठक इस विषय को भली प्रकार समझ सकें।

भारतीय आयुर्वेद

'अष्टांग हृदय' (शरीर स्थान, अध्याय ३, श्लोक ६) में यह लिखा है :—

रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदस्ततोऽस्थि च अस्थ्नो मज्जा ततः शुक्रं ... .. ।"

भोजन किये हुए पदार्थ से पहले रस बनता है। रस से रक्त, रक्त से मांस, मांस से मेद, मेद से हड्डी, हड्डी से मज्जा, मज्जा से वीर्य, वीर्य अन्तिम धातु है। मशीन में इसके बनने का दर्जा सातवां है। इसके बनाने में शरीर को जीवन के लिए आवश्यक अन्य सब पदार्थों की अपेक्षा अधिक मेहनत करनी पड़ती हैं। रस की अपेक्षा रस में तत्व-भाग अधिक है उत्तरोत्तर सार भाग बढ़ता ही जाता है। शरीर की भौतिक शक्तियों का अन्तिम सार वीर्य है। थोड़े से वीर्य को बनाने के लिए रक्त की पर्याप्त मात्रा की आवश्कता पड़ती है। किन्चिन्मात्र वीर्य का नष्ट हो जाना अत्यधिक रुधिर के नष्ट हो जाने के बराबर है। आयुर्वेद के इस सिद्धान्त को अनेक पाश्चात्य पन्डितों ने भी मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है। डा० कोवन अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'दि सायन्स आफ न्यू लाइफ' के १०६ पृष्ठ पर लिखते :—

"शरीर के किसी भाग में' से यदि ४० औंस रुधिर निकाल लिया जाए तो वह एक औंस वीर्य के बराबर होता है—अर्थात ४० औंस रुधिर से एक औंस वीर्य बनता है।"

अमेरिका के प्रसिद्ध शरीर-वृद्धि-शास्त्रज्ञ, मेकफेडन महोदय ने अपनी पुस्तक 'मैनहुड एण्ड मैरेज' में इसी विचार को प्रकट किया है। 'एनसाईक्लोपीडिया आफ फिजिकल कल्चर' के २७७२ पृष्ठ पर ये लिखते हैं :—

"कई विद्वानों के कथनानुसार चालीस औंस रुधिर से एक औंस वीर्य बनता है परन्तु कुछ एक विद्वानों का कथन है कि एक औंस वीर्य की शक्ति साठ औंस रुधिर के बराबर है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्भवतः इस विषय में पूरा पूरा हिसाब न हो सकता हो, तथापि इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि थोड़े से भी वीर्य को उत्पन्न करने के लिए रक्त की बहुत अधिक मात्रा खर्च होती है। भारतवर्ष में यह चर्चा सर्वसाधारण तक में पाई जाती है। यहाँ हर कोई जानता है कि वीर्य के बनने में ४०, ५० या ६० गुना रुधिर काम में आ जाता है। पाश्चात्य लोगों में यह विचार हाल ही में उत्पन्न हुआ है। मूलतः यह भारतीय आयुर्वेद का विचार है। जब रुधिर में शरीर को जीवित या मृत बना देने की शक्ति है तब वीर्य में वह शक्ति अप्रत्याख्यात रूप से कई गुनी होनी चाहिये, इस बात में किसे सन्देह हो सकता है ?

आयुर्वेद का कथन है कि रुधिर से वीर्य की अवस्था तक पहुंचने में उपर्युक्त सात मंजिलें तै करनी पड़ती हैं। इन का पारस्परिक सम्बन्ध क्या है ; अन्त में रक्त से वीर्य किस प्रकार बन जाता है- इस विषय पर आयुर्वेद की दृष्टि से अभी तक पूरा-पूरा अनुसंधान नहीं हुआ। आयुर्वेद से हमें इतना अवश्य पता चलता है कि रुधिर को वीर्य बनने के लिए बड़े लम्बे-चौड़े सात फेरों वाले रास्ते में से गुजरना पडता है। रक्त का सार भाग बनते-बनते अन्त में वीर्य बनता है।

आयुर्वेद के अनुसार वीर्य का स्थान सम्पूर्ण शरीर है। हृदय में विकार उपस्थित होने पर वीर्य शरीर में स्रावित होकर अण्ड-कोषों द्वारा प्रकट रूप में उत्पन्न हो जाता है। इसी विषय को स्पष्ट करते हुए 'भाव प्रकाश'—कार लिखते हैं :—

> यथा पयसि सर्पिस्तु गूढश्चेक्षौ यथा रसाः ।
> एवं हि सकले काये शुक्रं तिष्ठति देहिनाम् ॥ 240 ॥
> कृत्स्नदेहस्थितं शुक्रं प्रसन्नमनसस्तथा ।
> स्त्रीषु व्यायच्छतश्चापि हर्षात्तत्संप्रवर्तते ॥ 242 ॥

जिस प्रकार दूध को मथने से घी निकल आता है उसी प्रकार बहु—वीर्य वाले देह को भी मथने से वीर्य निकल आता है, जिस प्रकार ईख को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पेरने से रस निकलता है उसी प्रकार अल्प-वीर्य वाले पुरुष के शरीर में से भी अत्यन्त मैथुन करने से वीर्य प्राप्त होता है। सम्पूर्ण शरीर में रहने वाला वीर्य मानसिक प्रसन्नता तथा सम्भोग के समय प्रवृत्त होता है।

2—पाश्चात्य—आयुर्विज्ञान।

पाश्चात्य आयुर्विज्ञान के पण्डित वीर्य को सात धातुओं का सार नहीं मानते। उनके कथनानुसार वीर्य सीधा रक्त से उत्पन्न होता है—उसे सात मंजिलों में से गुजरने की आवश्यकता नहीं होती। ये लोग वीर्य को सम्पूर्ण शरीरस्थ नहीं मानते। उनका कथन है कि मनोविकार उपस्थित होने पर अण्डकोष अपनी क्रिया द्वारा एक द्रव उत्पन्न करते हैं। यही द्रव 'उत्पादक—वीर्य है। जिस प्रकार उत्तेजक पदार्थ के सम्मुख आने पर आंखों से आंसू तथा मुख से लार टपकती है उसी प्रकार अण्ड-कोषों की ग्रन्थियों (ग्लैंड) से वीर्य निकलता है।

अण्ड-कोषों में से दो प्रकार का रस उत्पन्न होता है। एक भीतरी, दूसरा बाहरी। भीतरी को 'इन्टरनल सिक्रीशन' अन्तःस्राव तथा बाहरी को 'एक्सटरनल सिक्रीशन' बहिःस्राव कहते हैं। अन्तःस्राव हर समय अण्डकोषों से होता रहता है और शरीर में अन्दर ही अन्दर खपता रहता है। यह रस सम्पूर्ण देह में व्याप्त होकर आंखों को तेज, मुख को कान्ति तथा अंग-प्रत्यंग को सुडौलपन देता है। चौदह, पन्द्रह वर्ष की अवस्था में बालक के शरीर में अचानक परिवर्तन देख पड़ते हैं उनका कारण अन्तःस्राव का भीतर ही भीतर खप जाना है। जिन प्राणियों के अण्डकोष निकाल दिये जाते हैं वे क्रिया-शून्य तथा स्फूर्तिहीन हो जाते हैं। घोड़े, बैल तथा बकरों को देखकर यह बात आसानी से समझ में आ जाती है। मनुष्यों में भी जिनके अण्डकोष निकाल दिये जाएं वे निस्तेज तथा निर्वीर्य हो जाते हैं। हीजड़ों का-सा हाल हो जाता हैं। वे किसी प्रकार के शारीरिक अथवा मानसिक काम के नहीं रहते।

बहिःस्राव के विषय में पाश्चात्यों का यह कथन है कि इसमें शुक्र-कीटों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के साथ-साथ जनन प्रदेश के अन्य अनेक स्थानों से उत्पन्न हुए द्रव भी मिल जाते हैं। शुक्र-कीट (स्पर्मेटोजोआ) तथा इन द्रवों के समुदाय का नाम ही वीर्य है। शुक्र-कीटों की उत्पत्ति अण्डकोशों से होती है और वे ही संतानोत्पत्ति के कारण हैं। जिस पुरुष के वीर्य में शुक्र-कीट नहीं होते वह नपुंसक कहलाता है। शराब, तम्बाकू, चाय, काफी, अफीम आदि पदार्थों के सेवन से शुक्र-कीट क्रियाहीन हो जाते हैं अतः उत्पादन—शक्ति को स्थिर रखने के लिए इनका त्याग ही सर्वोत्तम उपाय है। शुक्र-कीट शरीर में खप जाते हैं या नहीं, इस विषय में विद्वानों में सम्मति-भेद है, परन्तु डा० कोवन तथा अन्य अनेक पण्डितों का मत है कि यदि शुक्र-कीटों को कुविचारों तथा कुकर्मों द्वारा शरीर से बाहर न फेंक दिया जाय तो वही कीट जो नये जीवन को उत्पन्न करने का सामर्थ्य रखते हैं शरीर में खप कर व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक बल को बहुत अद्भुत रूप से बढ़ा सकते हैं।

वीर्य-कीट, रुधिर का सार-तम भाव है। प्रकृति ने इसे जीवन-दातृ-शक्ति ही नहीं दी परन्तु इसमें वैयक्तिक जीवन को समृद्ध करने का जादू भी भर दिया है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि शुक्र-कीट के शरीर में खप जाने से सम्पूर्ण देह में संजीवनी शक्ति का संचार हो जाता हैं।"

मनुष्य के शरीर की रचना को जानने वाले सभी विद्वान् एकमत होकर मानते है कि भीतरी अथवा बाहरी किसी भी वीर्य-शक्ति का ह्रास मनुष्य की वृद्धि के लिए अत्यन्त हानिकर है। शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए आत्म-संयम द्वारा वीर्य-स्तम्भन अत्यन्त आवश्यक है।

वीर्य के सम्बन्ध में पूर्वीय तथा पाश्चात्य विद्वानों की सम्मतियों का उल्लेख करते हुए उसकी तुलना पर विचार करना बड़ा रोचक विषय है। सामान्य दृष्टि से विचार करने पर दोनों में निम्नलिखित मोटे-मोटे भेद प्रतीत होते हैं :—

१-आयुर्वेद से वीर्य सात धातुओं के क्रम से तथा पाश्चात्य आयुर्विज्ञान के अनुसार सीधा रक्त से बनता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

२-आयुर्वेद वीर्य को सम्पूर्ण शरीरस्थ मानता है, पाश्चात्य लोग इसे अण्ड-कोषों द्वारा उत्पन्न हुआ मानते हैं।

३-पाश्चात्य आयुर्विज्ञान में वीर्य के दो रूप, अन्तःस्राव (इन्टरनल सिक्रीशन) तथा बहिःस्राव (एक्सटरनल) स्पष्ट रूप से माने गये हैं, आयुर्वेद में यह भेद नहीं दीख पड़ता।

४-पाश्चात्य विज्ञान में शुक्र-कीट (स्पर्मेटोज़ोआ) की परिभाषा पाई जाती है। शुक्र-कीट, 'उत्पादक-वीर्य' का नाम है। आयुर्वेद में उत्पादकवीर्य को कोई 'कीट विशेष' नहीं माना गया, शुक्र ही से जीवन की उत्पत्ति होती है।

साधारण बुद्धि से पूर्वीय तथा पाश्चात्य विचारों में, वीर्य के सम्बन्ध में यही चार मोटे-मोटे भेद दीख पड़ते हैं। हमारी सम्मति में सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर इन भेदों का बहुत-सा अंश लुप्त होकर दोनों विचारों में अनेक समानताएं दृष्टिगोचर होने लगती हैं।

१-निस्सन्देह आयुर्वेद वीर्य को सात धातुओं में से गुजर कर बना हुआ मानता है परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि आयुर्वेद के कई ग्रन्थों में वीर्य के सात धातुओं में से गुजर कर बनने के सिद्धान्त को नहीं माना गया है। वे यही मानते हैं कि 'केदारी-कुल्या-न्याय' से रुधिर ही शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों को भिन्न-भिन्न रस देता जाता है। जैसे बगीचे में सब जगह बहता है [illegible] भिन्न-भिन्न [illegible] भिन्न-भिन्न [illegible] खींच लेते हैं, इसी प्रकार रुधिर भी योग-द्रव्यों को [illegible] हुआ सम्पूर्ण शरीर को पुष्ट करता है, जब [illegible] अण्ड कोषों में पहुंचता है तब वे रुधिर में से वीर्य [illegible] लेते हैं। [illegible] विचार और [illegible] पाश्चात्य [illegible] विचार के [illegible] मिलते हैं परन्तु [illegible] निर्णय से नहीं किया जा सकता कि यही विचार यथार्थ सत्य [illegible]

[illegible] आयुर्वेद वीर्य को सम्पूर्ण शरीर [illegible] मानता है [illegible] पाश्चात्य विज्ञान अण्डकोषों द्वारा जनित मानता है। [illegible] के अनुसार [illegible] में यह स्थानसम्बन्धी भेद है। परन्तु यह भेद वास्तविक भेद नहीं [illegible] पाश्चात्य

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैकफेडन महोदय 'इन्टरनल सिक्रीशन' अन्तःस्राव के विषय में लिखते :—

"इन ग्रंथियों से निकली हुई एक-एक बूंद उत्पन्न होते ही शरीर में प जाती है। इसका परिणाम अनवरत उत्साहवृद्धि तथा स्वास्थ्य है जो चपन में विशेष रूप से दीख पड़ता है।"

जैसा ऊपर दर्शाया गया है अन्तःस्राव के विषय में वाग्भट्ट तथा कफैडेन के वर्णनों में कोई भेद नहीं। बहिःस्राव पर पूर्वीय तथा पाश्चात्य युर्विज्ञान की सम्मतियों में कुछ भेद अवश्य है परन्तु बहिःस्राव की सत्ता आयुर्वेद में स्वीकार अवश्य किया गया है।

'भावप्रकाश' में लिखा है :—

"शुक्रं सौम्यं सितं स्निग्धं बलपुष्टिकरं स्मृतम्।
गर्भबीजं वपुःसारो जीवस्याश्रय उत्तमः। 237॥"

अर्थात् वीर्य सोमात्मक, श्वेत, स्निग्ध, बल और पुष्टिकारक, गर्भ का ा, देह का साररूप और जीव का उत्तम आश्रयरूप है। वीर्य का यह न किसी भी पाश्चात्य लेखक के बहिःस्राव 'एक्सटरनल सिक्रीशन' के न से अक्षरशः मिलता है।

हां, 'बहिःस्राव' के स्वरूप के विषय में दोनों विज्ञानों में अत्यन्त सम्मति- हैं। आयुर्वेद में बहिःस्राव के लिए शुक्र-कीट (स्पर्मेटोजोआ) का शब्द पाया जाता, पाश्चात्य-विज्ञान में पाया जाता है, आयुर्वेद में शुक्र, वन्मात्र शब्द का प्रयोग होता है।

अण्डकोषों के बहिःस्राव के विषय में दो कल्पनाएं हैं। आयुर्वेद में कथा- र शुक्र ही बहिःस्राव है, पाश्चात्य आयुर्विज्ञों के अनुसार शुक्र-कीट स्राव हैं। स्मरण रखना चाहिए कि आयुर्वेद ने शुक्र को बहिःस्राव हुए शुक्र-कीट से इनकार नहीं किया। उस शुक्र का नाम यदि शुक्र-कीट जा सके तो आयुर्वेद को कोई आपत्ति नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
परन्तु क्या बहिःस्राव (शुक्र) का नाम शुक्रकीट रखा जा सकता है ?

हमारी सम्मति में उत्पादक-वीर्य का नाम शुक्र-कीट रखना अनुचित है। क्योंकि उत्पादक-वीर्य में गति होती है, वह चलता-फिरता हैं, अतः उसे पाश्चात्य आयुर्विज्ञों ने कीट का नाम दे दिया है—वास्तव में वह शुक्र ही है। भारतीय आयुर्वेद के साथ अध्यात्मशास्त्र भी मिला हुआ है। यदि शुक्र को शुक्र-कीट का नाम दे दिया जाय तो उनमें मनुष्य को पृथक् चेतनता मानने का भाव झलकने लगेगा। यह बात भारतीय अध्यात्मशास्त्र स्वीकार नहीं करता। अतः आयुर्वेद में शुक्र को शुक-कीट का नाम नहीं दिया गया और ना ही यह नाम देना किसी किसी प्रकार उचित प्रतीत होता हैं। उन्हें 'कीट' का नाम क्यों दिया जाय ? उनकी गति का कारण उनकी पृथक् चेतनता नहीं है। शुक्र-कीटों की गति अथवा चेतनता मनुष्य के मस्तिष्क की गति अथवा चेतनता से उत्पन्न होती है अतः उन्हें यथार्थ में 'शुक्र' नाम ही देना चाहिए, 'शुक्र-कीट' नहीं। हां, व्यवहार के लिए यदि उन्हें 'शुक्र-कीट' कह दिया जाय तो इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं दीखती।

हमने अभी कहा है कि 'उत्पादक-वीर्य' की गति का कारण मस्तिष्क है, 'उत्पादक-वीर्य' की 'पृथक् चेतनता' नहीं। यह कथन हमें वीर्य के स्वरूप सम्बन्ध में तीसरे विचार की तरफ ले आता है। आयुर्वेद तथा पाश्चात्य आयुर्विज्ञान के अतिरिक्त वीर्य के स्वरूप के विषय में एक तीसरा विचार है जिसका उल्लेख करना अत्यन्त आवश्यक है।

कई विचारकों का कथन है कि 'उत्पादक-वीर्य (स्पर्मेटोजोआ) की उत्पत्ति रुधिर अथवा अण्ड-कोषों से नहीं बल्कि सीधे मस्तिष्क से होती है। उनका कथन है कि "वीर्य का नाश मस्तिष्क का नाश है क्योंकि वीर्य तथा मस्तिष्क दोनों एक ही पदार्थ हैं।" इसमें सन्देह नहीं कि वीर्य तथा मस्तिष्क को बनाने वाले रासायनिक पदार्थ एक ही हैं। दोनों की तुलना करने पर उनमें बहुत ही थोड़ा अन्तर प्रतीत हुआ है। इस विषय पर गहरे अन्वेषण की आवश्यकता है। यदि रसायन-शास्त्र से सिद्ध हो जाय कि 'उत्पादक-वीर्य तथा 'मस्तिष्क' की रचना में कोई भेद नहीं, तो ब्रह्मचर्य के लिए एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अकाट्य युक्ति तैयार हो जाय। हम यहाँ पर डाक्टरों तथा रसायन-शास्त्र के विद्यार्थियों को संकेत करना चाहते है कि यदि वे इस विषय पर अधिक मनन कर कुछ क्रियात्मक विचारों तक पहुंच सके, तो बहुत लाभ हो।

इस सिद्धांत के सबसे प्रबल पोषक अमेरिका के प्रसिद्ध डा० एन्ड्रू जैक्सन डेविस हैं। अपनी पुस्तक 'ऐन्सर्स टू एवररिकरिंग केश्चन्स फ्रांम दि पीपल' के २९३ पृष्ठ पर वे लिखते हैं :—

"कई शरीर-शास्त्रियों ने यह भ्रममूलक विचार फैला दिया है कि वीर्य की उत्पत्ति रुधिर से होती है। इस सिद्धांत से बुद्धिमान् व्यभिचारी लोग खूब फायदा उठाते हैं। वे कहते हैं कि यतः रुधिर से ही वीर्य बनकर अण्ड-कोषों द्वारा प्रकट होना हैं अतः वे वीर्य का दुरुपयोग करते हुए भी खा-पी कर उसकी कमी को पूरा मान सकते हैं। वे लोग कुछ नहीं जानते। वास्तव में सचाई यह है कि 'उत्पादक-वीर्य 'वीर्य-कीट' अथवा 'स्पर्मेंटोजोआ की उत्पत्ति मस्तिष्क से होती है और अन्य द्रवों के साथ मिलकर वह अण्ड-कोषों में बहिःस्राव के रूप में प्रकट होता है।

"उत्पत्ति का कार्य जीवन के सब कार्यों की अपेक्षा अधिक बड़ा और थकाने वाला कार्य है। इसमें मनुष्य की प्रत्येक शक्ति, प्रत्येक भाव तथा शरीर और मन का हरेक भाग हिस्सा लेता है। मस्तिष्क से उत्पन्न हुआ प्रत्येक ,शुक्र-कीट' यदि बाहर निकलता है तो मस्तिष्क के उस अंश का पूरा नाश समझना चाहिए।

"शारीरिक परिश्रम, मानसिक कार्य तथा किसी एक काम की तरफ लगातार लगे रहने से 'वीर्य-कीट' अथवा 'स्पर्मेंटोजोआ' मस्तिष्क में ही खप जाता है। यदि 'वीर्य-कीट' को केवल उत्पत्ति के लिए काम में लाया जाय तो मनुष्य की शारीरिक तथा मानसिक शक्तियां नष्ट होने से बच जाती हैं।

"इसलिए स्मरण रखना चाहिए कि उत्पादक पदार्थों का उचित मात्रा से अधिक खर्च करना अथवा प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करना मस्तिष्क पर अत्याचार करना है। ऐसा करने से दिमाग की सब तरह की बीमारियों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होने का पूरा निश्चय है। जिन लोगों पर बच्चों की रक्षा की जिम्मेवारी है उन्हें इन बातों को कभी भूलना चाहिए।"

मस्तिष्क तथा वीर्य में कोई खास सम्बन्ध अवश्य है। वीर्य-नाश का दिमाग पर सीधा असर होता है, यह किसी से छिपा नहीं। डा० कोषन यह मानते हैं कि दिमाग से एक द्रव उत्पन्न हो कर उसतरफ को, जिस तरफ मनुष्य के मनोभाव केन्द्रित होते हैं, बहने लगता है। डा० हाल का कथन है कि अण्ड-कोषों से एक पदार्थ उत्पन्न हो कर मस्तिष्क में पहुंचता है जहां से वह यौवनावस्था में प्रकट होने वाले सब शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तनों को प्रादुर्भूत करता है। डा० ब्लौश कहते हैं कि मस्तिष्क तथा वीर्य का पारस्परिक सम्बन्ध देर से माना जा रहा है। यहाँ तक कि शैलिंग की 'नेचु-रल फिलासफी' में मस्तिष्क के लिए 'अण्डकोषों के रस से बना हुआ दिमाग' यह नाम पाया जाता है।

'वीर्य के स्वरूप' के सम्बन्ध में हमने तीनों मुख्य विचारों का उल्लेख इस-लिए कर दिया है ताकि प्रत्येक व्यक्ति इस बात को भले प्रकार समझ ले कि वीर्य-रक्षा किये बिना उसका कोई निस्तार नहीं। तीनों विचार तत्वतः एक ही हैं। किसी भी दृष्टि से क्यों न देखा जाय, वीर्य-रक्षा करना जीवन-रक्षा के लिए आवश्यक, अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है। हमारे नवयुवक पाश्चात्य विचारों के पर्दे के पीछे अपनी कमजोरियों को छिपाने का भरसक प्रयत्न करते हैं, जानबूझकर अपने धोखे में डालते हैं परन्तु उन्हें अपनी आत्मा की आवाज सुन कर अवश्यम्भावी नाश से बचने की फिक्र करनी चाहिए। पश्चिमीय विज्ञान ने अभी तक जो कुछ पता लगाया हैं वह ब्रह्मचर्य के हक में ही जाता है। उसका दुरुपयोग करने की कोशिश न कर उससे शिक्षा लेनी चाहिये। डा० स्टाल ने अपनी पुस्तक "ह्वाट ए यंग हसबैण्ड औट टु नो' में जीवन-शास्त्र की दृष्टि से बहुत ही उत्तम लिखा है :—

"जो लोग वृक्षों की रक्षा करना चाहते हैं उन्हें यह ही मालूम है कि वृक्षों के सौन्दर्य को कायम रखने के लिए आवश्यक है कि उनके फलोत्पादन के समय को जितना हो सके उतना दूर करने का प्रयत्न किया जाय। जब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तक ह..
लदे रहेंगे।
वह फूल पहले ..
का भी यही हाल है
को रोक दिया जाय तब
अधिक जीते हैं। एक तितली
शक्ति का उपयोग करने वाली ति.
वहां वह तितली दो साल से भी ऊपर

ऐसे परीक्षणों से वीर्य-रक्षा का जीवन
सिद्ध है-इस में क्षण-भर के लिए भी सन्देह नह.

शरीर की प्रारम्भिक अवस्था में संचय-शक्ति .
पीते और मौज उड़ाते हैं। किसी प्रकार की चिन्ता नह.
चला जाता है। वहाँ बचपन का एक हाथ का नन्हा-सा पु.
फीट लम्बा, डेढ़ मन का बोझ! परन्तु इस वृद्धि में यही आ.
अंग, प्रत्यंग तथा आत्मा विद्यमान हैं। वही छोटी चीज, बड़ी हो .
हल्की वस्तु भारी हो गई है। इस आश्चर्यजनक परिवर्तन का कारण
की संचय-शक्ति है। हमने बड़े परिश्रम से उपादेय पदार्थों का शरीर में स
किया है, इसी से आज देह उन्नत तथा प्रवृद्ध दिखाई देता है।

परन्तु यह उन्नति चिर-स्थायी नहीं। दिन चढ़कर ढलता है, लहर उठकर गिरती है। शरीर हट्टा, कट्टा होकर क्षीण होने लगता है। संचय के अनन्तर विचय प्रारम्भ होता है। जीवन के बाद मृत्यु पदार्पण करने लगती है। हम दैनिक व्यवहार में देखते हैं कि मनुष्य की समृद्ध होती हुई शक्तियां किसी समय आकर ठहर जाती हैं, रुक जाती हैं, कई बार पतनोन्मुख होने लगती हैं। यह क्यों?

जिन्होंने संचय के पश्चात् विचय, अथवा उन्नति के बाद नाश के अवश्यम्भावी चक्र पर विचार किया है उनका कथन है कि इसका कारण, जीवन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

की प्रौढ़ावस्था के अनन्तर, दो परस्पर विरुद्ध प्रवृत्तियों का टक्कर खाना है। शरीरवृद्धि की स्वार्थमय प्रवृत्ति प्रजा-जनन की परमार्थ-प्रवृत्ति से दब जाती है। मनुष्य घर बसा कर बैठ जाता है। अपने शरीर में संचय करना छोड़कर सन्तानोत्पत्ति करना प्रारम्भ करता है। प्रकृति खेल करती हुई उसे अपनी उंगलियों पर नचाती है। जो व्यक्ति खाने, पीने और अपने शरीर के विषय में, सोचने से आराम नहीं लेता है वही परमार्थ के चक्कर में घूमने लगता है। अपनी सन्तान के लिए कठिन से कठिन कष्ट भोगने के लिए तैयार हो जाता है। स्वभावसिद्ध क्रम से स्वार्थ की अवस्था के पीछे स्वार्थ-त्याग की अवस्था पहुंचा जाती है।

मनुष्य की 'शक्तियों का ह्रास' तथा 'प्रजा-जनन' दोनों एक ही समय में प्रारम्भ होते हैं। प्रजोत्पत्ति के पश्चात् अधिक शारीरिक उन्नति की सम्भावना नहीं रहती। जिस तत्व से शारीरिक उन्नति हो सकती थी वह प्रजोत्पत्ति में काम आ जाता है, फिर शारीरिक उन्नति क्यों न रुक जाय। प्रजा उत्पन्न करना बुरा कार्य नहीं। ऊँचे शब्दों में सन्तान उत्पन्न करना ब्रह्म का अनुकरण करना है। परन्तु इतने से क्या प्रजोत्पत्ति के अवश्यम्भावी परिणाम रुक सकते हैं? नहीं, कभी नहीं।

प्रजोत्पत्ति के प्रारम्भ होते ही शारीरिक शक्तियों का ह्रास प्रारम्भ हो जाता है। सञ्चय की शक्तियों को विचय की शक्तियां आ घेरती हैं। मनुष्य का कदम मृत्यु की तरफ बढ़ने लगता है क्योंकि सञ्जीवनी-शक्ति के बीज का शरीर से बाहर जाना जीवन का प्रतिद्वन्द्वी है। जब शरीर में वृद्धि नहीं समा सकती जब उत्पत्ति प्रारम्भ करने से किसी हानि की सम्भावना नहीं, परन्तु इससे पूर्व उत्पत्ति का कार्य प्रारम्भ करने पर मनुष्य किसी प्रकार भी नाश से नहीं बच सकता। प्रजा-जनन, शरीर-वृद्धि के चरम-सीमा तक पहुंच जाने का स्वाभाविक परिणाम होना चाहिए—इसी का नाम ब्रह्मचर्य्य है। जब भी शरीर-वृद्धि के होते हुए प्रजोत्पत्ति की जाती है तभी ब्रह्मचर्य्य के नियमों का उल्लंघन होता है। 'शरीर-वृद्धि' अथवा 'संचय' की अवस्था में वीर्य का हस्तमैथुन, व्यभिचार अथा बाल-विवाह आदि किसी रूप में भी नाश करना

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'मृत्यु' का आवाहन करना है क्योंकि ब्रह्मचर्य्य ही जीवन और अब्रह्मचर्य ही मरण है।

उत्पत्ति के साथ नाश का अविनाभाव सम्बन्ध है। प्रजोत्पत्ति में वीर्य का क्षय होता है। वीर्य के क्षय का बदला चुकाने के लिए प्रत्येक प्राणधारी को मृत्यु की गठड़ी सिर पर उठानी पड़ती है। जीवन-शास्त्र पर जिन्होंने लिखा है उनकी पुस्तकों से कई ऐसे दृष्टान्त प्रतीत होने लगे। पाठकों को वीर्य-रक्षा के महत्व को दर्शाने के लिए हम यहां ऐसे ही कुछ दृष्टान्तों का संग्रह करेंगे।

हैवलाक एलिस महोदय अपनी पुस्तक 'एरोटिक सिम्बोलिज्म' के १६८ पृ० पर लिखते हैं :—

"वीर्य-नाश में वेदना-तन्तुओं का जो तनाव होता और शरीर को धक्का पहुंचता है वह इतना भयङ्कर होता है कि उससे सम्भोग के बाद प्रतीत होने वाले दुष्परिणामों का प्रकट होना सर्वथा स्वाभाविक है। पशुओं में यही देखने आया है। प्रथम सम्भोग के बाद बड़े-बड़े तैयार बैल और घोड़े बेहोश होकर गिर पड़ते हैं, सूअर संज्ञाहीन हो जाते हैं, घोड़ियां गिर कर मर जाती हैं। मनुष्यों में मौत तो देखी ही गई है परन्तु उसके साथ ही सम्भोग के बाद की थकान से अनेक उपद्रव भी उत्पन्न हो जाते हैं। कभी-कभी कई दुर्घटनाएं होती देखी गई हैं। नवयुवकों में प्रथम सम्भोग से बेहोशी तथा कै आदि होती हैं, कई बार मिरगी हो जाती है, अंग ढीले पड़ जाते हैं, तिल्ली कट जाती है। रुधिर के दबाव को न सह सकने के कारण कईयों के दिमाग की नाड़ियां खुल जाती हैं, अर्धांग हो जाता है। वृद्ध पुरुषों के वेश्याओं के साथ अनुचित सम्बन्ध का परिणाम अनेक बार मृत्यु देखा गया है। बहुत पुरुष नव-विवाहिता वधुओं के आलिंगन के आवेग को नहीं सह सके और उसी अवस्था में प्राण-विहीन हो गए।"

शहद की मक्खियां प्रथमालिंगन के समकाल ही जीवन से ही हाथ धो बैठती हैं। तितलियों का श्वास सम्भोग के साथ ही समाप्त हो जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कीड़ियों की भी यही कहानी है। मछलियाँ सन्तानोत्पत्ति करने के अनन्तर अत्यन्त क्षीण हो जाती हैं। मृत्यु उनसे दूर नहीं रहती। कीड़ों, पतंगों में प्रजोत्पत्ति तथा मृत्यु दोनों ऐसे मिल-जुले हैं कि एक को दूसरे से पृथक् नहीं किया जा सकता। चूहे, गिलहरी, खरगोश प्रजोत्पत्ति के बाद कई बार मर जाते हैं, कई बार बेहोश होकर एक ओर को गिर जाते हैं। पक्षियों में सम्भोग का परिणाम सर्वत्र तात्कालिक मृत्यु नहीं पाया जाता परन्तु इसके दुष्परिणाम उनमें भी किसी न किसी रूप में बने ही रहते हैं। जीवन की लहर के आवेग में उनके जो मधुर गीत निकलते थे वे अब सूखे पड़ जाते हैं, चित्रकार को चकित कर देने वाले पंखों के रंग उड़ जाते हैं, नाचना भूल जाता है, कदम ढीला हो जाता है। ज्यों-ज्यों जीवन उन्नति की तरफ चलता जाता है त्यों-त्यों उत्पत्ति के साथ जुड़ी हुई मृत्यु भी भयंकर स्वरूप को सौम्य बनाने का प्रयत्न करती है परन्तु कितना भी क्यों न हो, उसकी भयंकरता का रुद्र-रूप शिथिल होता हुआ भी दुष्परिणामों में वैसे का वैसा ही बना रहता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्पत्ति का प्रथम शिकार, नाटक का सूत्रधार 'नर' ही होता है। मरना हो तो वही पहले मरता है, बेहोश होना हो तो वही पहले होता है। वही इस उपाख्यान का प्रधान पात्र है, उसी ने रंगीलेपन में फाग उड़ाया है, उसी से किस्सा भी खतम होता है। 'मादों' का जीवन भी संकट में पड़ता है परन्तु, 'नर' की अपेक्षा कम। क्षुद्र-प्राणियों में प्रजोत्पत्ति की ज्वाला भयंकर रूप धारण कर 'नर' को तत्काल भस्म कर देती तथा 'मादा' को स्वल्पकाल में ही भस्मावशेष कर देती है। मनुष्य में इस ज्वाला की शिखा धीमे-धीमे जलती है। कभी ज्वाला चमक उठती और कभी दब जाती है। इस ज्वाला की गर्मी से मनुष्य की अनेक प्रसुप्त शक्तियों का क्रमिक विकास होता है, परन्तु इनकी शिखाओं को भयंकर स्वरूप देने वाले को स्मरण रखना चाहिये कि यदि इस आग ने प्रचण्ड रूप धारण किया तो उसी को स्वयं बलि बनकर अग्नि-देव की रुधिरपिपासा को शान्त करना होगा।

इस प्रकरण में जेडीज और थौमसन ने 'दि एवोल्यूशन आफ सेक्स' में जो विचार प्रकट किये हैं उनका उल्लेख करना अत्यन्त शिक्षा-प्रद सिद्ध होगा। अपनी पुस्तक के २५५ पृ० पर वे लिखते हैं:—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"मृत्यु तथा उत्पत्ति का सम्बन्ध बहुत स्पष्ट है परन्तु साधारण बोलचा में इस सम्बन्ध को शुद्ध रूप में नहीं कहा जाता। लोग कहते हैं कि स प्राणियों को मरना आवश्यक है अतः उन्हें सन्तानोत्पत्ति जरूर करनी चाहिये ऐसा न करने से प्राणियों का सर्वथा लोप हो जायेगा। परन्तु यह बात अशु है। पीछे क्या होगा या क्या न होगा, यह सोचने वाले संसार में थोड़े हैं यथार्थ बात, जो प्राणियों के जीवन के इतिहास समझ पड़ती है यह नहीं है कि "वे प्रजोत्पत्ति इसलिए करते हैं क्योंकि उन्हें मरना है" परन्तु यह है कि 'वे इसलिए मरते हैं क्योंकि वे प्रजोत्पत्ति करते हैं'। गेटे का कथन सत्य है कि 'मृत्यु से बचने के लिए हम प्रजोत्पत्ति नहीं करते परन्तु क्योंकि हम प्रजोत्पत्ति करते हैं इसलिए उसके अवश्यम्भावी परिणाम मृत्यु से नहीं बचते"।

"विज़मैन तथा गेटे, दोनों ने भिन्न-भिन्न उद्देश्यों से ऐसे कीटों तथ पंतगों के जीवनों को दर्शाया है जो 'वीर्य-कीट' के उत्पन्न करने के कुछ घंटो के बाद मर जाते हैं। 'नर' में विचय शक्ति अधिक है अत: उसके जल्दी खत्म होने की सम्भावना है। मकड़ी सम्भोग के बाद मर जाती है। मकड़ी का मरना अन्य प्राणियों के मरने पर प्रकाश डालता है।...... उच्च प्राणियों मे उत्पत्ति के लिए किए जाने वाले त्याग के साथ मिला हुआ नाश का अंश कम अवश्य हो जाता है परन्तु फिर भी प्रेम का बदला चुकाने के लिए मृत्यु का भूत बिल्कुल पीछा कभी नहीं छोड़ता। प्रेम के प्रभात का अन्त प्रायः मृत्यु की घोर निशा में होता है।"

उपर्युक्त उदाहरण में एक कथन बड़े महत्व का किया गया है। जिड़िज तथा थोमसन की सम्मति है कि प्राणि-जगत् में उत्पत्ति इसलिए प्रारम्भ नहीं होती क्योंकि उनकी मृत्यु अवश्य होती है परन्तु उनकी मृत्यु इसलिए होती है क्योंकि वे उत्पत्ति प्रारम्भ कर देते हैं। मृत्यु सन्तानोत्पत्ति का अवश्यम्भावी परिणाम है। निस्सन्देह यह स्थापना है, परन्तु ध्यान रखना चाहिए कि इस स्थापना के करने वाले साधारण व्यक्ति नहीं हैं। यह स्थापना ऐसे व्यक्तियों ने की है जिनका विज्ञान पर ॠण है, जिन्होंने जीवन-शास्त्र के प्रश्न पर अपना बहुत समय बिताया है। अनुभव इस स्थापना की पुष्टि करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्पत्ति के साथ नाश के इस नित्य सम्बन्ध को ही तो देखकर ऋषि, मुनियों ने ब्रह्मचर्य पर इतना बल दिया था। ब्रह्मचर्य के आदर्श को उत्तरोत्तर बढ़ाया था। वसु, रुद्र तथा आदित्य ब्रह्मचारियों में वसु को निकृष्ट ब्रह्मचारी ठहराया था। कितना ऊंचा लक्ष्य है! चौबीस साल तक ब्रह्मचय रखना पर्याप्त नहीं समझा गया। प्राचीन ऋषियों ने ब्रह्मचर्य के प्रश्न को विवाद अथवा व्याख्यान देने तक सीमित नहीं रक्खा था। ब्रह्मचर्य का प्रश्न उनके लिए जीवन-मरण का प्रश्न था। इस पर उन्होने ऐसे ही विचार किया था जैसे आज-कल के विद्वान् किसी 'सायन्स' के विषय पर करते हैं। संयम तथा ब्रह्मचर्य को लक्ष्य में रख कर उन्होंने नियमित पाठशालाएं चलाईं थी जिनका नाम गुरुकुल था। गुरुकुलों में आजकल के स्कूलों और कालेजों की तरह किताबें रटवाकर विद्यार्थियों को पैसा पैदा कर सकने की मैशीन बना देना उद्देश्य न होता था। आधार की मर्यादा तक पहुंचना वहां का ध्येय रक्खा गया था। जिस प्रकार आजकल किताबें पढ़ाना स्कूलों का अन्तिम उद्देश्य समझा जाता है ठीक इसी प्रकार ब्रह्मचर्य का पालन कराना, संयमपूर्वक जीवन बिता सकने की शिक्षा देना गुरुकुलों का चरम लक्ष्य था। प्राचीनकाल में यह कार्य आजकल के शब्दों में एक 'सायन्स' का महत्व रखता था, इसके लिए बड़े-बड़े मस्तिष्क दिन, रात लगे रहते थे। ऋषियों ने जीवन के महत्त्व-पूर्ण प्रश्न का एक हल निकाला था-वह था 'ब्रह्मचर्य'। उनके गुर बड़े सरल थे परन्तु ब्रह्मचर्य के भावों से पुर थे। वे कहते थे—'**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाध्नत**' —ब्रह्मचर्य के तप से देवताओं ने मृत्यु पर विजय प्राप्त किया', '**ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्य-लाभः**' ब्रह्मचर्य के स्थिर रखने से शारीरिक, मानसिक, तथा आत्मिक बल प्राप्त होता है' **मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात्**'—'बिन्दु पात में जीवन का नाश तथा बिन्दुरक्षण में जीवन की रक्षा है'। कैसे छोटे-छोटे संस्कृति के सुन्दर टुकड़े हैं परन्तु इन्हीं में जीवन को विकट समस्याओं के कैसे जीवन-शास्त्र तथा शरीर-शास्त्र के महत्वपूर्ण हल भरे हुए हैं। (क्रमशः)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रभक्त पाँडव

—धनंजय प्रसाद देशपांडे

प्रातः स्मरणीय क्षत्रिय राजाओं की नामावली में, 'पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।' ऐसा उल्लेख है और उन्हें वंदन करने का सदियों का परिपाठ है। इसलिए प्रस्तुत लेख में पांडव और उनके कार्य का त्रोटक रूप में एक आलेख देना चाहता हूँ। लेख के शीर्षक के अनुसार जिज्ञासु पूछेंगे कि पाण्डव और राष्ट्र का ऐसा क्या संबंध है ? एक क्षुद्र राज्यपद, राज्यभोग की लालसा में एक-दूसरे से युद्ध करने वाले पाण्डु पुत्र हैं। उनका इस आसेतुहिमाचल राष्ट्र के साथ कुछ भी संबंध स्थापित नहीं हो सकता। परंतु, स्पष्टरूप से यह कहा जा सकता है कि इतिहास के अनुसार न तो वे क्षुद्र राज्योपभोग के लिए लड़े और न ही उन्होंने उसकी आकांक्षा रखी। पाण्डव केवल सत्य के लिए ही लड़े और मातृभूमि की उन्नति, उद्धार और हित के लिए अपना जीवन बिताते रहे।

इतिहास के अनुसार पाण्डव मूलतः कौरव ही थे। जो कुरुकुल में उत्पन्न हुए, वे सब कौरव ही कहलाते हैं। महाराणा प्रताप, शांतनु, भीष्म, धृतराष्ट्र' विचित्रवीर्य, पांडु आदि आदि सब कौरव ही कहलाते हैं। पाण्डु के पुत्र प्रथम कौरव हैं, तदनंतर वे पाण्डव हैं। इसका अर्थ यह है कि महाभारतीय युद्ध कौरव और पाण्डवों में नहीं हुआ। वह युद्ध धृतराष्ट्र पुत्र-'धार्तराष्ट्र' और पांडुपुत्र-'पाण्डवों के' बीच हुआ। केवल 'कौरव-पाण्डवों का युद्ध' शब्द के प्रयोग से हम कौरवों के और महाराणा कुरु के तत्पश्चात् आये हुए महान कौरव राजाओं के इतिहास को लुप्त कर देते हैं। इससे तो इतिहास की विकृति होती है और कौरव बुरे थे, ऐसा ध्वन्यर्थ प्रस्थापित करते हैं। श्रीमन् महाभारतीय इतिहास के अध्ययन के बिना 'महाराणा कुरु' और उनका आगे चलकर आया हुआ 'कौरववंश' ज्ञात नहीं होगा।

महाभारत में पाण्डवों का ही इतिहास क्यों ?

सर्वसामान्य चिकित्सक को इस शंका से ग्रस्त होना स्वाभाविक है, कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हाभारत जैसे विशाल ग्रन्थ में केवल पाण्डवों का ही इतिहास क्यों है ? उस
त बाल्हीक नरेश थे, पांचाल नरेश द्रुपद थे, चेदिराज शिशुपाल थे, भगवान
कृष्ण भी थे, इस तरह कई राजे-महाराजे अपना राज चला रहे थे। इस
का के निरसन के लिए हम पूछेंगे कि अगर आज भारत का इतिहास
खना हो, तो हम किसका इतिहास लिखें ? —तो जबाव में यही होगा,
न्द्र-सत्ता में जो अधिष्ठित है उनका।' अर्थात् आज जो घटक प्रदेश या राज्य
रूप में हैं, उनको दुर्लक्ष्य किया जाता है। उन्हें सामान्य माना जाता है।
स्थित्यंतर केंद्र सत्ता में आये हैं, उनका अध्ययन किया जाएगा और उन्हें
धिक महत्त्वपूर्ण समझा जायेगा। यही बात स्वाभाविकतया पाण्डवकालीन
तहास में लागू होती है। जिससे हमारी इस तरह की कई शंकाएँ समाप्त
जायेंगी। तो हम इस बलबूते पर यह कह सकते हैं कि पाण्डवों का इति-
र लिखा जाने या इसके अधिक रूप में महाभारत में आने का कारण यही
कि पाण्डव केंद्रसत्ताधीश थे।

पाण्डवों की तथा उनके पूर्वकालीन सम्राटों की सत्ता ही केंद्र सत्ता मानी
ती थी। पाण्डवों ने युद्ध पूर्व पचास वर्ष और युद्ध के पश्चात् ३६ वर्ष
य किया था। महायुद्ध के पहले १३ वर्ष और २ मास के लिए दुर्योधन ने
नीति से 'प्रधानमंत्री पद' (युवराजपद) छीन लिया था। उस समय अनेक
-उपप्रांतों में-राज प्रतिनिधि-राजा-मुख्यमंत्री व राज्यपाल थे। यह सारे
, प्रांत जैसे शाल्व, पांचाल, मत्स्य, चेदि, मगध, गांधार, अंग, बंग,
ष्ट्र आदि प्रदेश इंद्रप्रस्थ-हस्तिनापुर के मांडलिक थे। उन्हें प्रांत या प्रदेश
जाता था, 'राष्ट्र' नहीं। यही कारण है कि भगवान् वेदव्यास जी ने
प्रदेश के राजाओं का इतिहास प्रमुख रूप से महाभारत में नहीं लिखा।
पांडवों का ही इतिहास मुख्य रूप से वर्णन किया गया। केंद्रसत्ता,
ट-राष्ट्राध्यक्षपद, प्रधानमंत्री पद आदि पदों के अन्य गवाह महाभारतीय
ास के सूक्ष्म अध्ययन से ज्ञात हो सकते हैं। इसमें से एक विषय का परि-
कराने का यत्न है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आता है

त
यह
और
संबंध

वर्षों में
थी। तब
केवल राष्ट्र-
जाने के लिए
ौर विप्रसंसद् की
हो रही थी। यह
अनुकूल थे। लेकिन
ट करने की सोच रहे
ये शब्द क्या सूचित
तृभूमि से प्रेम करने वाले,
है! धृतराष्ट्र के विरोधी
ों का ये कहना है। धृतराष्ट्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की सारी करतूतों का उन्होंने स्पष्ट रूप से निषेध किया है। उसकी कड़ी आलोचना भी की है। भूरिश्रवा, सोमदत्त, बाह्लीक आदि राजा उनमें अग्रणी हैं। उनके दबाव से पाण्डवों को फिर सम्मान के साथ लाकर राज्य का कारोबार सौंप दिया गया था।

पाण्डवों ने अपनी मातृभूमि के लिए क्या किया? श्रीमहाभारत ग्रन्थ इसका साक्षी है। आदिपर्व में अर्जुन वनवासपर्व, सभापर्व में दिग्विजयपर्व, राजसूय यज्ञपर्व, वनपर्व में तीर्थयात्रा उपपर्व और युद्ध के पश्चात् आश्वमेधिक पर्व के अध्ययन से हमें इस बात की पूर्णतः जानकारी प्राप्त होती है कि पांडव अपनी मातृभूमि के लिए क्या करते रहे।

उपयुक्त पर्वों से इस विशाल आर्यावर्त की शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता का वैभवशाली इतिहास ज्ञात होता है। पृथ्वीतल के सारे राष्ट्रों को धर्मनिष्ठ लोकतंत्र तथा राजधर्म परिपालन' का संदेह देने के लिए उन्होंने विशाल अधिवेशन (राजसूय) इंद्रप्रस्थ में आयोजित किया था। जो भारतवर्ष का सारे जगत में प्रभाव स्पष्ट करने वाला था। अपने संपूर्ण जीवन में चार-चार बार इस विशाल मातृभूमि की परिक्रमा (यात्रा) करके समस्त प्रदेशों में बसने वाले समाज के साथ जनता के साथ संबंध प्रस्थापित किया था। अर्थात् पूरे विश्व को अपने प्रेम और दया से धर्मनिष्ठ पाण्डवों ने जीत लिया था। और वे प्रजाप्रिय बने हुए थे। हमारे इस दीप्तिमान् इतिहास को सत्य और धर्मनिष्ठ दृष्टि से जानना चाहिए। अपनी दृष्टि साफ रख के ही इतिहास का अवलोकन करना जरूरी है।

आप हमें इस प्रकार भी सहयोग दे सकते हैं।
५०१ रु० भेज कर
जनज्ञान मासिक
के आजीवन सदस्य बनिए।
तथा १५१ रु० का उपहार साहित्य
(१०१ रु० के अमूल्य ग्रन्थ वैदिक सम्पत्ति और
५० रु० मूल्य के सामवेद हिन्दी पद्यानुवाद सहित)
प्राप्त कीजिये।
२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज की नारी देवी नहीं, लेडी है।

—ज्ञानार्थी

यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं कि संसार में जितना महत्त्व नीर का है, उतना ही महत्त्व नारी का है। संसार में अभी तक जितने भी अच्छे या बुरे, महान या शैतान, पुण्यात्मा या पापात्मा हुए हैं और हो रहे हैं, उन सबके पीछे नारी का रहस्य तिरोहित है। नारी के कारण ही आदरणीय विद्वान रावण को 'राक्षस' की उपाधि मिली और नारी के कारण ही श्रीराम को 'मर्यादापुरुषोत्तम' एवं 'देवता' की उपाधि मिली।

यों तो 'नारी' शब्द ही न्यारा है। जिसका अर्थ है—'न अरिः यस्या सा नारी' अर्थात् जिसका कोई शत्रु न हो, वह स्त्री नारी है। सचमुच में नारी के तीन रूप त्रिवेणी की पावन धाराएं हैं, जिसमें स्नान कर, अर्थात् मां का वात्सल्य, बहिन का स्नेह और सहधर्मिणी का प्रणय पाकर, मानव पावन हो जाता है, कृतार्थ हो जाता है।

परन्तु वर्त्तमान समय में जिस प्रकार जल दूषित हो गए हैं उसी प्रकार नारी भी दूषित अर्थात् पथभ्रष्ट हो गयी है या कर दी गई है। फलस्वरूप: लोग स्वास्थ्य एवं चरित्र से पतित हो गए हैं और हो रहे हैं। अतः जहां नीर एवं नारी दूषित हो जाए, तो वहां पुरुष का पतित होना स्वाभाविक है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि नीर एवं नारी पर ही संसार का जीवन-मरण अवलम्बित है। इसी पर संसाररूपी वृक्ष का फूलना-फलना तथा विकसित होना सम्भव है।

इनके महत्त्व को देखते हुए सरकार इन दोनों के शुद्धिकरण का जो प्रयास कर रही है वह हानिकर है। जहां नारी को व्यवहार-ज्ञान द्वारा शिक्षित करने की आवश्यकता है, वहां सरकार इन्हें मात्र 'साक्षर' कर पुरुष के समान अधिकार देने को उत्साहित है। जबकि प्रकृति ने ही नारी एवं पुरुष को शारीरिक रूप से भिन्न कर दिया है फिर कर्म में समानता कैसे हो सकती है। पुरुष एक लंगोटी पहनकर कार्य कर सकता है, पर नारी के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसा सम्भव नहीं। सच्ची बात तो यह है कि समानाधिकार की बात तो तब उठ सकती जब दो चीजें वस्तुतः अलग-अलग होतीं। हमारी भारतीय संस्कृति में 'दम्पत्ति' स्त्री-पुरुष का एक सम्मिलित नाम है, दोनों परस्पर अर्द्धांग हैं। ऐसी अवस्था में पुरुष के साथ प्रतिस्पर्धा करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। क्या किया जाय, वर्त्तमान शिक्षा ने नारियों को विपथगामिनी बना दिया है, इसी से वे समानाधिकार के मोह में पड़कर 'पुरुष-विद्वेष' का उपनेत्र लगाकर अपना हित-अहित भूल रहीं हैं।

आज भारतीय नारी कुशिक्षा एवं फिल्म-संसार से बहककर अपनी महत्ता को विस्मृत कर रही है, पथभ्रष्ट हो रही है। जिसका कोई शत्रु नहीं, वह आज शत्रुओं से आक्रान्त है। जो नारी आदरणीया एवं पूजनीया 'देवी' थी वह आज 'लेडी' हो गई हैं। जिसे देख कवि को व्यंग्य करना पड़ता है—

"पुरुषों-सा अधिकार लेकर रहूंगा।
पति को भी अपना पति ना कहूंगा॥
सज-धज कि दुनियां को विजय करूंगा।
फैशन में खोके जग में नंगा रहूंगा॥
अब फिल्मों में बस नाचना चाहता हूं।
'मर्द से अब औरत बनना चाहता हूं॥"

अपने को भूल जाने के कारण एवं दूषित शिक्षा ग्रहण करने के कारण तथा भारतीय संस्कृति से पतित हो जाने के कारण भले ही नारी पुरुष के सदृश नौकरी द्वारा लाखों रुपए बटोर ले, पर हमें विश्वास है कि इससे संसार का एवं परिवार का कदापि कल्याण नहीं हो सकता।

आज की नारी पुरुष की 'सहधर्मिणी' नहीं, पत्नी मात्र बनना चाहती है। जिसका अर्थ है—पत् = नीचे, नी = ले जाने वाली अर्थात् जो नारी पुरुष को काम-वासना में उलझाकर नीचे की ओर ले जाय, पत्नी है। तथा जो नारी पुरुष के धर्म के साथ अर्थात् पुरुष ने जिस आदर्श को धारण करने का संकल्प लिया है उस संकल्प की रक्षा में जो सतत प्रयत्नशील रहे वा साथ दे, सह-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्मिणी है। अतः हर नारी के लिए सहधर्मिणी पद से आलोकित हो जाना सर्वोत्तम कर्म है। इसमें पुरुषों को भी उसका साथ देना चाहिए।

नारी शब्द तो न्यारा है ही। एतदर्थं वो अपने को उलट लें पर, भूलें नहीं; क्योंकि नारी शब्द को उलट देने पर भी रानी ही बनती है। अतः नारी अपने को विदेशी सभ्यता में खोकर 'लेडी' न बने अपितु अपनी गरिमा को ध्यान में रखकर 'देवी' पद से विभूषित हो जायं। ताकि संसार के पुरुष उन्हें मां, बहन और पत्नी के रूप में श्रद्धा-आदर, आशीर्वाद और स्नेह दे सकें तथा पूज्या और सम्माननीया समझ सकें—

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत के नभ-तल में।
पीयूष-स्रोत-सी वहा करो, जीवन के सुन्दर उपवन में॥"

जन-ज्ञान मासिक के नियम

१. 'जनज्ञान' के पाठक पत्रव्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें। (सदस्य संख्या 'जनज्ञान' के रैपर पर लिखे पते पर अंकित रहती है।)
२. 'जनज्ञान' प्रतिमास तीन या चार तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
३. मास के अन्त तक 'जन-ज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भेज दिया जाता है।
४. कागज, छपाई आदि की लागत में अत्यधिक वृद्धि के कारण मई सन् १९८९ से 'जन-ज्ञान' की एक प्रति का मूल्य चार रुपये कर दिया गया है। वार्षिक मूल्य चालीस रुपये है।
५. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न रहता है।
६. कृपया आगामी वर्ष के लिए नया शुल्क मनीआर्डर द्वारा तुरन्त भेज दिया करें। मनीआर्डर न मिलने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क की वी. पी. द्वारा भेजा जायेगा। वी. पी. भेजने पर आठ रुपए का डाक व्यय अतिरिक्त लगता है, जिसका लाभ न तो सदस्यों को होता है और न ही संस्थान को।
७. 'जन-ज्ञान' की वी.पी. वापस आने पर संस्थान को आठ रुपए की हानि उठानी पड़ती है। अतः सदस्यों से निवेदन है कि वे (हमारे भेजे पोस्ट-कार्ड पर) उत्तर देने की कृपा अवश्य किया करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"काँग्रेस और भारत की स्वतंत्रता"

—दुर्गादत्त शर्मा

आज हमें स्वतंत्र हुए ४२ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इस शताब्दी के आरम्भ से ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अतुलनीय गुणगान जारी है। अधिकांश भारत की जनता इसी धोखे की शिकार है कि हिन्दुस्तान को कांग्रेस ने स्वतंत्र कराया था।

किसी भी विवाद को जानने हेतु उसकी जड़ों में जाना अति आवश्यक होता है। अतः मेरे प्रिय पाठक पहले यह समझने की कोशिश करें कि कांग्रेस का जन्म किन उद्‌देश्यों को लेकर हुआ था और इसे बनाने वाला कोई भारत मां का लाल था अथवा कोई विदेशी गोरा।

सन् १८५७ में प्रथम बार अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति हुई। उसके बाद तो अंग्रेजों को भी अहसास होने लगा कि अब लम्बे समय तक भारत को गुलाम रखना संभव नहीं है। यही विचार भारत से रिटायर होकर इंग्लैंड जाने के पश्चात् अंग्रेजों के एक उच्च अधिकारी ए. ओ. ह्यूम के मन में भी उत्पन्न हुआ। उसने इंग्लैंड सरकार के सामने अपने मन की प्रतिक्रिया के रूप में भारत में एक ऐसी संस्था बनाने का विचार रखा जिसके सदस्य जन्म से तो भारतीय हों परन्तु संस्कारों से अंग्रेज बन चुके हों। परोक्ष रूप से अंग्रेजों का प्रतिनिधित्व करने वाली ऐसी संस्था का प्रस्ताव इंग्लैंड सरकार ने स्वीकार कर लिया तथा इसकी जिम्मेदारी भी ए. ओ. ह्यूम को ही सौंप दी। परिणाम ये हुआ कि २८ दिसम्बर सन् १८८५ को "इंडियन नेशनल कांग्रेस" की स्थापना हो गयी। विशेष ध्यान देने योग्य बात ये है कि कांग्रेस की कान्फ्रेंस में किसी विश्वविद्यालय का अंग्रेजी पढ़ा-लिखा स्नातक ही भाग ले सकता था। इस प्रकार के स्नातक युवक, व्यक्ति जन्म से तो भारतीय ही थे परन्तु संस्कारों से अंग्रेज बन चुके होते थे। ये स्नातक व्यक्ति शिवाजी, प्रताप और गोविन्द सिंह आदि का अपमान करने और महारानी विक्टोरिया का जन्मदिन मनाने में गर्व का अनुभव करते थे। अंग्रेजों जैसा व्यवहार करना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और अंग्रेजी बोलना उन्हें अच्छा लगता था इसी मानसिकता में लिपटे होने के कारण सरदार पटेल और लोकमान्य तिलक आदि देश भक्तों को कांग्रेस के संचालन का अवसर नहीं दिया गया, इस डर से कि कहीं इनके नेतृत्व में कांग्रेस अपना घृणित उद्देश्य (?) न भूल जाये और अंग्रेजों की ये गहरी चाल विफल न हो जाये।

जिस कांग्रेस का हर देशवासी गुणगान करते नहीं थकता, क्या उसी कांग्रेस का कोई सदस्य किसी ऐसे कांग्रेसी का नाम बता सकता है जिसे देश भक्ति (?) के आरोप में कभी अण्डमान या माण्डले की जेल भेजा गया हो या कालेपानी की सजा दी गयी हो ? क्या किसी कांग्रेसी को कभी मृत्यु-दण्ड दिया गया या उसे कैद की सजा दी गयी ? कभी नहीं। क्योंकि कांग्रेस ने कभी अंग्रेजी सरकार का उचित विरोध किया ही नहीं। और फिर अंग्रेज उस संस्था के सदस्यों को सजा देते ही क्यों जिसकी स्थापना ही अंग्रेजों ने की हो ? क्या अंग्रेज इतने बेवकूफ या मूर्ख थे जो भारत में ऐसी संस्था की स्थापना करते जो उन्हीं का विरोध करे ? इसीलिए कभी किसी कांग्रेसी को यदि सजा दी भी गयी तो मात्र औपचारिकता निभाने हेतु।

आज के कांग्रेसी नेता देश के लिए शहीद होने वाले महापुरुषों को याद करना भी अपना अपमान समझते हैं। पं० जवाहर लाल नेहरू और श्रीमती इन्दिरा गांधी को शहीद बताया जाता है जबकि वीर सावरकर, लाला लाजपतराय, "वंदेमातरम्" के जन्मदाता बंकिम चन्द्र तथा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आदि के नामों को ही भुलाया जा रहा है।

आजादी के समय कांग्रेस का नेतृत्व पं० नेहरू के हाथ में आया और उन्होंने लार्ड माउन्टबेटन की दी हुई आजादी उपहारस्वरूप लेकर असंख्य बलिदानों का अपमान किया। इस आजादी के बदले अंग्रेजों ने देश के टुकड़े करने जैसी घृणित शर्तं रखी जिसे सत्ता के लालच में हमारे आधुनिक (?) नेताओं पं० नेहरू आदि ने स्वीकार कर लिया।

कान्वेंट में पढ़े पं० नेहरू और माउण्टबेटन की सह पाठिता रंग लायी और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१५ अगस्त १९४७ की रात "पं० नेहरू की जय" और "महात्मा माउण्ट बेटन की जय" से बुलंद हो गयी। पं० नेहरू की दूषित नीतियों और कांग्रेस-अंग्रेजों के समझौते ने देश को टुकड़ों में बांट दिया और ऐसा हुआ केवल भारत के हिन्दुओं को नजरअन्दाज करके, मुस्लिम लीग तथा अंग्रेजों को खुश करने के कारण और फिर फारुख अब्दुल्ला को खुश करने के लिए धारा ३७० लगाकर कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा भी दे दिया जिससे कुछ समय बाद कश्मीर भी भारत से कटकर अलग हो जाये और भारत कभी अखण्ड न रह सके।

मेरा वचारिक मत हैं कि यदि आजाद भारत का नेतृत्व कांग्रेस व पं० नेहरू के स्थान पर सरदार पटेल या किसी अन्य नेता के हाथ में होता तो आज देश अपेक्षाकृत कई गुना प्रगति कर चुका होता।

आज भी देश कांग्रेस की दूषित नीतियों के कारण ही अन्धकारमय भविष्य की ओर बढ़ रहा है। अब समय आ गया है जब हम इस कांग्रेस की नीतियों को पहचानें जो आज भी नेहरू-परिवार के लोगों की ही कठपुतली है। आज हर देशवासी यह, निर्णय ले कि क्या कांग्रेस देश को अखण्ड रख सकती है ? क्या वो देश को सुरक्षित भविष्य दे सकती है ? और क्या कांग्रेस के नेतृत्व में हिन्दुस्तान के हिन्दू सुरक्षित हैं ? क्योंकि हमारा पक्का विचार है कि— "हिन्दू सुरक्षित तो हिन्दुस्तान सुरक्षित"

कल का हिन्दुस्तान

—जगदीश श्रीवास्तव

अपने हाथों में लिए सदियों का मैं दीवान हूँ,
जिन्दगी का आईना हूँ वक्त की पहचान हूँ।
आँधियों, तूफान, मौसम के थपेड़े झेलकर,
इन्कलाबी दौर का, यारो नया फरमान हूँ।

तोड़ डालूंगा यकीनन जुल्मतों की बन्दिशें,
वक्त जिसको रोक न पाएगा वो तूफान हूँ।

धूप, तपती रेत औ' जलती हुई चट्टान-सा,
आग के दरिया से निकला आज का इन्सान हूँ।

मैं जमीं से आसमां तक, खून से लिखता रहा,
अपने पैरों पर खड़ा मैं, कल का हिन्दुस्तान हूँ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिजूका

पहले पहल जब मैंने उसे देखा था तभी उस के हंडिया से सिर, सूखी लंबे डंडे-सी हड्डियाई हुई देह और उस पर अलगच से झूलते हुए पैबंदी मटियाले कुर्त्ते को देखकर अचानक बिजूके की याद आ गई थी। गांवों में किसान अक्सर पशु-पक्षियों को डराने के लिए एक डंडे पे हंड़िया टिकाकर, ढीला-ढाला कुर्त्ता पहनाकर बिजूके को खेतों के बीचों-बीच खड़ा कर देते हैं। पंद्रह-सोलह बरस का होगा। उसे देखते ही मेरे मुंह से धीरे से निकल पड़ा "बिजूका"।

तभी कैंटीन के मालिक रामधन की गुहार पर भगोना मांजते उसके हाथ थम गए। जैसे हवा के झोकों के साथ डोलता बिजूका अचानक हवा के थमने से थिर हो गया हो। "छोकरे, पहले बाबुओं को चाय दे दे। ये काम तो बाद में भी निपट जायेगा"।

कठपुतली की नाईं हाथ धोकर वह उठा और एक ट्रे में दो कप चाय लेकर आ गया। जैसे किसी बबुए में चाभी भर दी हो और अगली चाभी के भरने तक वह उझक-उझक कर चल रहा हो। सूखी लम्बी बांहों से जब वह हमारी टेबिल पर कप टिका रहा था। तब मेरी नजर एकटक उसका ही पीछा कर रही थी।

मेरी एकाग्रता देखकर वर्मा ने टोका—"क्या यार, तब से उस छोकरे को देखे जा रहा है। तेरे गांव का है क्या ?

"नहीं नहीं, बस यूं ही"। मैं कह न पाया कि कुछ है इस छोकरे में जो इस उमर के और बच्चों में नहीं होता। मुझे पता था कि मेरी बेसिर-पैर की बातों से वर्मा खीझ उठेगा और बोलेगा—'उस खूसट छोकरे में भी मुझे शायरी नजर आ रही है' ?

अजीब खब्त-सी सवार हो गयी थी मुझ पर। कैंटीन में आते ही मेरी नजरें पहले बिजूके को टटोलती थीं। पद्रह दिन हो गए थे, मैंने कभी उसे बोलते नहीं सुना था। शायद गूंगा हो। चाय देने जब पास आता तब उसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पसीने की गंध बिखर जाती थी। जून की गर्मी में भी पन्द्रह दिन से उसके तन पर वही ढीला ढाला पैबंदी कुर्ता और घिस-घिस कर मटियाला हुआ धारीधार कच्छा ही था। पता नहीं नहाता भी है या नहीं ? पर इसका नहाना न नहाना भी कौन मायने रखता है। नदी के मुहानों-सी पसीने की धारें टपकती ही रहती हैं। उसे मैंने कभी थकते नहीं देखा था। चकरघिन्नी सा नाचते हुए कैंटीन का सारा काम बड़ी फुर्ती से करता था। आने-जाने वालों से निरपेक्ष वह अपने काम में ही डूबा रहता। कभी-कभी लगता कि वह ऐसी कठपुतली है जिसकी डोर बस कैंटीन वाले रामधन के हाथ में ही है। जैसे चाहे जहां चाहे घुमा दे। अब तो कैंटीन और बिजूका पर्याय-से लगने लगे थे। एक दिन कैंटीन में उसे न देख कर कुछ अधूरापन-सा लगा और मैं रामधन से पूछ बैठा—"वो छोरा कहां है आज, दिख नहीं रहा है।"

'वो भी एक ही बौड़म था साब। उसके रहने खाने का ठिकाना किया, कल किसी बात पे हल्की-सी धौल उसकी पीठ पर जमाई, बस घूर कर मुझे देखा और उसी दम से यहाँ से चला गया। अरे मैं उसके बाप बरोबर था। एक चपत लगा भी दी तो कौन-सा पहाड़ टूट गया था उस पर"। ऐसे कामकाजी लड़के को खोने का गम रामधन के चेहरे पर अभी ताजा ही था।

मैं हैरान रह गया बिजूके के आत्मसम्मान पर। साला छिपा रुस्तम निकला। पर ये रामधन भी कौन-सा कम है। कभी किसी छोकरे को कैंटीन में तीन माह से ज्यादा टिकते नहीं देखा था मैंने। अब यह तो हर छोकरे के आत्मसम्मान और सहन-शक्ति की सीमा पर है कि वह कितने दिन यहाँ काट सकते हैं। शायद बिजूके की यह सीमा बीस दिन में ही चुक गई हो।

जून की तड़तड़ाती गर्मी में स्कूटर से वापिस आ रहा था। एक पेड़ की छांव में हाथ धरे एक पतली लम्बी देह को पसरे देख छठी इन्द्रिय ने टहोका- "ये, बिजूका न हो ?"

अपने मन से जद्दोजहद करते हुये स्कूटर रोका। वो बिजूका ही था। स्कूटर की घर-घर से आकृष्ट होकर उसने आंखों से हाथ हटाया और त्रस्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आंखों से मुझे देखकर एक प्रतिप्रश्न-सा मेरी ओर उछाल दिया। "क्या बात है भाई, कैंटीन का काम छोड़ कर यहाँ क्यों लेटे हो ? कहीं और काम मिल गया है क्या ?" उसने दायें बायें मूंडी हिला दी।

साले की बोलते हुए भी जबान घिसती है जाने कौन-से शब्दरत्न हैं जिनके झड़ने से इसका कोष खाली हो जायेगा। अचानक याद आया कि जब से रामदुलारी अपने घरवाले के साथ चली गई है पत्नी बडी परेशान रहती है। अगर बिजूका मान जाये तो इस किल्लत से छुटकारा मिल जाए।

"सुनो ! हमारे यहां काम करोगे ? रोटी पानी वहीं होगा और ऊपर से पचास रुपया पगार मिलेगा—"

"हाँ !" पहली बार उसके मुंह से बोल फूटे थे। "आ जाओ, स्कूटर के पीछे बैठ जाओ"।

वह उठा और अपने ढलकते कच्छे को कमर तक खींचकर पीछे बैठ गया। एक खौफनाक, गंध का भभका नथनों में घुस गया। पत्नी तो इस हालत में हरगिज इसे बर्दाश्त नहीं कर पायेगी। घर जाते ही पहले इसका सफाई अभियान चालू करना पड़ेगा।

घर पहुँच कर चटपट बिजूके को बाहर वाला नल दिखाया और कपड़े धोने वाले साबुन की एक बट्टी उसे थमा दी। "लो तुम अब साफ नहा लो, मैं तुम्हारे लिए कुर्त्ता पाजामा लाता हूँ। इन चिक्कट कपड़ों को भी अच्छी तरह से खंगाल लेना।

मैं जब तक अपना पुराना कुर्त्ता पाजामा लेकर आया, वह अपनी बिवाइयों से छिदी एड़ियां पत्थर से रगड़-रगड़ कर साफ कर रहा था। उसे देखकर ऐसा लग रहा था मानो किसी मटमैले धुंआए आइने को किसी ने धो-पोंछ कर चमका दिया हो। आज पहली बार मुझे लगा कि बिजूके की रंगत सांवली नहीं बल्कि उजली सांवली है। मुझे देखकर वह संकुचित हो उठा। कुर्त्ता पाजामा पहन कर जब वह खड़ा हुआ तो चार वर्ष के गुड्डू को भी हंसी आ गई। "पापा बहोत ढीला है ये कुर्त्ता। ये तो जोकर लग रहा है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिजूका भी शर्माते हुये अपना नखशिख का जायजा ले रहा था। ठीक पांच बजे प्रवेश करके श्रीमती जी ने आकर बिजूके को देखा पत्नी की आंखों में कौंधे प्रश्नचिन्ह को मैंने भांप लिया।

"नौकर लाया हूं। हमारी कैंटीन में काम करता था। बड़ा सीधा और ईमानदार है। फुर्तीला तो गजब का है।" एक ही सांस में मैं बिजूका-पुराण बखान गया।

"ठीक है, तुम कहते हो तो रख लेते हैं पर पहले इससे पूछो तो, कहां का है, मां-बाप कहां रहते हैं ?"

मैं बिजूका की ओर उन्मुख हुआ—"क्यों भई कहां के हो"

"मेलपुरा गांव का हूँ साब। सौतेली मां है, खूब काम कराती थी और मारती थी। ये देखो" और बिजूके ने कुर्ते को उठाकर पीठ हमारी ओर घुमा दी। पीठ पर लाल नीले निशानों का जाल बिछा था।

"ओह" पत्नी दयार्द्र हो उठी। "क्या तेरा बाप कुछ नहीं बोलता था?" "नहीं वो तो भिनसारे ही ठाकुर सा के खेत में मजदूरी करने निकल जाता था और शाम ढले आता था। सौतेली महतारी अपने बच्चों को प्यार करती थी पर मुझे मारती थी, सो एक दिन चुपके से शहर की बस में बैठ कर भाग आया।"

बिजूके का परिचय इन चार सतरों में ही पूरा हो गया। पत्नी भी आश्वस्त हो गई और घर का काम-काज उसे समझा दिया। उसने भी एक कुशल गृहणी की नाईं एक-दो दिन में ही सारा घर सम्भाल लिया। पत्नी ने राहत की सांस ली। 'हुं'; 'जी', 'अच्छा' के अलावा और बोल उसके मुँह नहीं फूटते थे। कैशोर्य की स्वाभाविक चपलता तो जैसे उसमें थी ही नहीं। पंद्रह बरस की उम्र में ही उसके चेहरे से थोपी हुई प्रौढ़ता झलकने लगी थी। कभी-कभी मशीन की तरह चलते उसके निरीह वजूद को देखकर पत्नी भी पिघल जाती थी। 'बेचारा गमों का सताया है। जाने कैसी राक्षस मां है। जो जवान छोकरे को घर छोड़कर भागना पड़ा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हर दस-बारह दिन बाद बिजूका हमसे दो घण्टे की छुट्टी मांगता। शहर की मजदूर बस्ती में उसके गांव का एक छोकरा मगू रहता था। उससे अपने घर के हाल-समाचार वह जान आता था। गाव छोड़ने पर भी अपने परिवार के प्रति वह निस्पृह नहीं हो पाया था। जाने कौन-सा अनदेखा तन्तु उसे गांव से बांधे था।

बिजूका ने कभी अपने मुंह से कुछ नहीं मांगा था। उसका वेतन उसके कहने पर मैं बैंक में जमा करा रहा था। काम सिमटा कर वह बाहर सीढ़ियों पर बैठ जाता था। टुकड़ों-टुकड़ों में बताई उसकी बातों से उसके अतीत का यह खंड-चित्र बना कि जब वो तीन बरस का था तभी उसकी महतारी चल बसी थी। साल बीतते-बीतते बाप दूसरी मां ले आया। दूसरी मां ने भी अपना सौतेलापन बखूबी निभाया। उसके एक भाई एक बहन और हुए। दोनों बच्चों को बिजूका से बड़ा स्नेह था पर सौतेली मां ने उनके और बिजूके के मध्य जो लक्ष्मण-रेखा खींची हुई थी उसे फलांगने की जुर्रत वे भी नहीं कर पाते थे।

बाल्यावस्था से ही अस्वाभाविक चुप्पी ने बिजूका के बाल-मुख में एक अजीब-सी परिपक्वता भर दी थी और वह एकांतप्रिय हो गया था।

आफिस से घर आया तो मन कुछ उद्विग्न था। मां की चिट्ठी आई थी गांव से। जाने क्यों मां की चिट्ठी खोलने में मेरे हाथ कंपकपाते थे। हालांकि मुझे पता है कि अन्दर दो लाईनों की कुशलक्षेम और चार लाईनों में गांव की औपचारिक बातों के अलावा कुछ नहीं होगा पर मेरी नजरों की एक्सरे इन सब को भेद कर दूर पहुंच जाती थी। मुझे इस लिफाफे में बहुत कुछ नजर आता था। मां का सारा इतिहास, उसकी बीमारी, उसका अकेलेपन का दर्द, इकलौते अफसर बेटे की निस्पृहता की कचोट, बहू और उसके मध्य खिची एक अदृश्य अनाम रेखा,। यह सब सुरसा-सा मुंह बाये मेरे वजूद पर छा जाते थे।

पत्नी और मां का मेल कभी नहीं बैठा। मां के आते ही पत्नी के माथे में दो त्यौरियां स्थाई रूप से घर बना लेती है, बेवजह बच्चों की पिटाई शुरु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो जाती, आफिस से लौटने पर पत्नी सिर बांधे, कोपभवन की कैकेई-सी नजर आती। मेरी नजरों में ताब नहीं है यह सब देखने और झेलने की। जो जैसा चल रहा है चलने दो।

मां और मेरे बीच भी एक अनाम समझौता हो गया है। साल बाद एक चक्कर गांव का लगा आता हूं और आज्ञाकारी श्रवण पूत की तरह हर माह एक बंधी रकम फर्ज-अदायगी के रूप में मां के पास भेज देता हूं। इसका जिक्र पत्नी अक्सर सौ-सौ जवानों से अपनी सखियों से कहती रहती है।

"क्या करें बहन—आजकल घर चलाना कौन सा आसान काम है। दो बच्चे हैं, उनकी फीस है, और फिर इनकी मां को भी हर माह पैसे भेजने पड़ते हैं।" पत्नी के आर्थिक मापदंड की कसौटी मां को भेजे पचास रुपयों के कारण हमेशा डगमगाई रहती है। वरना तो अब तक किसी पॉश कोलोनी में वह महल ही खड़ा कर देती।

पत्नी बच्चों के फटे कपड़ों का ढेर लगा रही थी। मां की चिट्ठी को एक नजर से पढ़ कर उसने मेरी ओर बढ़ा दिया। फटे कपड़ों को देखकर बिजूका बोला—"मेमसाहब, गुड्डु बेबी के एक दो पुराने कपड़े दे दो। कल मेरे गांव वाला संगू गांव जा रहा है।

पत्नी ने तुरत-फुरत कपड़ों का एक गट्ठर बांधकर बिजूका के हवाले कर दिया और वह उन्हें अपने गंवई दोस्त के सुपुर्द करने चला गया।

"च: च: ! बेचारे ने दुःख ही दुःख पाये हैं, फिर भी कितना प्यार है इसे अपने सौतेले भाई-बहनों से।" बिजूका के मोह से पत्नी पिघल उठी।

शाम को अपने निढाल पांव घसीटता बिजूका आया और साबुन में भीगे कपड़े खंगालने लगा। मैं उसके पास जाकर खड़ा हो गया। "बिजूका, एक चक्कर गांव का क्यों नहीं लगा आते ?"

बिजूका का मौन तो न टूटा पर उसकी बड़ी-बड़ी आंखों की मधुर भाषा मैं समझ गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाप इसका शुरु से ही इनसे निर्लिप्त रहता है और सोतेली मां तो वैसे ही इसके भाग जाने से खुश होगी, फिर भला क्या रखा है इसका वहां ?

मां की फिर चिट्ठी आई थी, खांसी जरा उभर आई है। सो चिंता की बात नहीं है। ठंड में ऐसा हो ही जाता है। सोचने लगा दस-बारह दिन की छुट्टी लेकर गांव ही हो आऊं। खेत बंटाई पर दिये हैं, उसका हिसाब भी हो जायगा।

आठ दिन बाद बिजूका मंगू से मिलने गया घर की सारी खबर लेने। घंटे बाद जब वह लौट कर आया तब उसका मुंह धुंआना-सा हो रहा था और दोनों होठ कस कर एक दूसरे से जुड़े थे। पिछले छः माह के सानिध्य से जान गया था कि इसके होंठ जितना ज्यादा भिचे रहते हैं उतना ही उथल-पुथल इसके अन्दर होती है। पूछा—"तेरे घर में सब ठीक ठाक तो हैं न ?'

"एक पखवारा हुआ मेरा बाप मर गया, आज मैं गांव जाऊंगा।"

"क्या ?" मैं स्तब्ध रह गया चाहे जैसा भी था पर था तो इसका बाप ही। अब भला कौन रहेगा इसका वहां। पंद्रह दिन में तो क्रियाकर्म, तेरहवीं सब निपट गयी होगी। खैर, वहां शायद इसके मन को कुछ शांति मिले।

"कब तक लौटोगे ?" पत्नी आशंकित हो उठी।

"अब नहीं लौटूंगा"

"क्यों" मैं जैसे आकाश से गिरा। "सौतेली मां ने क्या कोई कसर छोड़ी हुई थी जो अब पूरी करने जा रहे हो। अब भला तेरा क्या रखा है वहां ?"

"साब, सौतेली सही पर मां तो है मेरी। बाप ही मजूरी करता था ठाकुर सा के यहां। अब कैसे चलेगा ? ठाकुर बड़ा गन्दा आदमी है। मां मजदूरी करेगी तो बुरी नजर से देखेगा। फिर छोटे भाई-बहिनों को कौन देखेगा ? मुझे जाना ही पड़ेगा साब।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्नी तो अकबकाई-सी रह गयी। ऐसा काम-काजी और शरीफ नोकर अब भला कहाँ से मयस्सर होगा। भावी दिनचर्या की बोझिलता की कल्पना उसकी आँखों से साफ झलक रही थी।

पर इससे मेरे अन्दर तक जलन हो गई। टीसता-सा पका फोड़ा जैसे फूट गया हो।

उसने अपना सामान थैले में समेट लिया उसके पगार के दो सौ रुपये मैंने उसे थमा दिये। पत्नी ने भी बुझे मन से उसकी मां के लिए एक-दो सूती साड़ियाँ और बच्चों के लिये बेबी, गुड्डु के पुराने कपड़े निकाल दिए। घण्टे भर में ही बिजूका चला गया। उसके जाने के बाद मुझे लगा कि वह बिजूका नहीं था और था भी तो "जानदार बिजूका" था। जिस बात को हम पढ़े भी नहीं समझते या समझ कर भी अनदेखा कर देते हैं उसी को बिजूके ने बखूबी महसूसा है। सौतेली माँ के प्रति भी अपने कर्तव्य से वह सचेत है। उसके झबरीले अतीत में कहीं भी तो कोई फूल नहीं खिलने दिया था सौतेली मां ने, फिर भी पिछली सभी कालिख को धो-पोंछ कर वह चला गया उसके पास।

एक अपराध-बोध से भर उठा मैं। एक मैं हूं, लानत है मुझ पर। इकलौते अफसर बेटे की मां खांस-खांस कर धीरे-धीरे यक्ष्मा की रोगी बनती जा रही हैं। मेरे आँगन में फूल छितराकर खुद ठूंठ-सी गाँव में खड़ी है अकेली और बेसहारा। और मैं प्रतिमाह अनजान बना सिर्फ मनी आर्डर भेज रहा हूं। क्या करेगी इन पैसों का वो? चाटेगी? गाँव में डाक्टर नहीं, दवा नहीं है। इन नोटों से उसका कफन ही तो तैयार हो रहा है।

पश्चात्ताप के गोले उभर कर गले तक आ रहे थे। अचानक एक दृढ़ निश्चय से मेरी आँखें चमकने लगी।

दूसरे दिन आफिस जा कर १० दिन की छुट्टी की अर्जी देकर घर आ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया। असमय मुझे आया देखकर पत्नी घबड़ा गई—

"जी तो ठीक है न" ?

"हां। दस दिन की छुट्टी ले आया हूं। सोचता हूं दोपहर की गाड़ी से गांव हो आऊं। मां को साथ लेता आऊंगा। उसकी तबीयत भी ठीक नहीं चल रही। सर्दी भर यहां रह लेगी तो इलाज भी हो जाएगा। मई-जून में उसे छोड़ आऊंगा।"

पत्नी कुछ न बोली, एकटक मेरा मुंह ही देखती रह गई। मैं जानता था कि उसके माथे पर त्यौरियों का स्थाई उभार अब उगने ही वाला है, पर उसने पहले ही मैं पीठ फेर खड़ा हो गया।

"मेरा सामान अटैची में जमा दो।" और मैं बाहर खुली हवा में आ गया।

जो भी है हिन्दू का घर, गूंजे वहाँ वेद का स्वर

परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

(मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित)

लागत मूल्य 600 रु.। साथ में 251 रु. का श्रेष्ठ वैदिक साहित्य (वैदिक सम्पत्ति, महाभारत एवं गीता हिन्दी भाष्य समेत अन्य उपयोगी साहित्य) उपहार में प्राप्त करें।

साहित्य न लेना चाहें तो सम्पूर्ण वेदभाष्य 450 रुपये में प्राप्त करें।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम

इब्राहीमपुर, पो. आ. मुखमेलपुर, दिल्ली-110036

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुओं की कुछ माँगे

—सत्यव्रत वेदालंकार

धिक्कार है हिन्दुओं को—जो बहुसंख्यक होते हुए भी कोई अपना हिन्दू देश तथा पूर्णरूतेण हिन्दू-वत्सल व देशभक्त सरकार न बना सके और उन्हें छोटी व बड़ी सभी बातों के लिए हाथ पसारना पड़ रहा है।

हमारी मांगों के कुछ आधार

राजनीति, राजा व उसका विवेकपूर्ण चुनाव—हिन्दू धार्मिक नेताओं/धर्माचार्यों का पावन दायित्व—

मर्यादा-पुरुषोत्तम राम व कृष्ण को भी संसार में धर्म व मर्यादा की स्थापना के लिए राजनीति व कूटनीति का ही सहारा लेना पड़ा था। 'राजा कालस्य कारणम्'—इस उक्ति के अनुसार किसी देश व जाति के राजा व नेता ही उसके उत्थान व पतन के कारण होते हैं। अतः देश की सारी प्रजा, सभी पार्टियों व संस्थाओं का सर्वप्रमुख धर्म या कर्त्तव्य है— देशभक्त व प्रजा-वत्सल श्रेष्ठ राजा (प्रधानमन्त्री), उत्तम देशप्रेमी पार्टी व नेताओं का बहुत ही विवेक से चुनाव। जिनके पूरे परिवार उस देश की मिट्टी से जुड़े हों, जिन्हें उस देश, उस देश के बहुसंख्यक लोगों, उनके धर्म-भाषा-संस्कृति-साहित्य से अटूट प्रेम हो, जो अंशतः भी विदेशी मनोवृत्ति के तथा सत्ता व धन के लोभी न हों, तथा जो प्रजा के—आकण्ठ मंहगाई, भ्रष्टाचार, दुराचार, नौकरशाही, बेरोजगारी, विदेशी धन-शस्त्रास्त्र-लोगों की अथाह घुसपैठ, निरन्तर हत्या, लूटमार, दमन और शोषण, आदि—कष्टों से वस्तुतः विह्वल होते हों तथा गम्भीर घटनाओं, अक्षमताओं व आरोपों पर लोकतन्त्रीय मर्यादा का आदर्श रखते हुए स्वयं कुर्सी छोड़कर अलग हो जाते हों। यह तभी सम्भव है जब देश के निस्स्वार्थ व निस्पृह धर्माचार्य-सामाजिक-सांस्कृतिक नेता जागरूक रहकर राजा व प्रजा का निर्भीकता से मार्गदर्शन करते रहें, तथा उन पर अनुशासन व अंकुश भी रख सके।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संसार के मुस्लिम व ईसाई राष्ट्रों के बीच हिन्दू अल्पसंख्यक ! हजार वर्ष से पददलित – पर संरक्षण न मिल पाया :—

देश के विभाजन से दो पृथक् राष्ट्र बन जाने के बाद, सौ से भी अधिक कट्टर मुस्लिम व ईसाई देशों के बीच नितान्त अल्पसंख्यक तथा शताब्दियों से पददलित, असंगठित, पीड़ित व शोषित हिन्दुओं ने सोचा था कि अब उनका भी 'कोई अपना देश' (हिन्दू-आर्य-देश) होगा—जहां उन्हें पूरा-पूरा संरक्षण व प्रोत्साहन मिलेगा। परन्तु हमारे स्वभावत: अति उदार, अति भोले, राजनीति की उपेक्षा करने वाले, अदूरदर्शी, युधिष्ठिर के वंशज, सभी क्षेत्रों के हिन्दू नेताओं की कृपा से उत्तम अवसर मिलने पर भी, हिन्दुओं का वह स्वप्न तो पूरा हुआ ही नहीं, साथ ही देश में कट्टर हिन्दूविरोधी, मुस्लिम-लीगी व अराष्ट्रीय नेताओं पार्टियों, सरकारों व नीतियों का बोलबाला हो गया। लोकतन्त्र के मुख्य आधार देश के बहुसंख्यक हिन्दुओं, हिन्दू-धर्म-भाषा-संस्कृति-साहित्य, हिन्दू नेताओं-संस्थाओं-पार्टियों, तथा हिन्दू-देश के स्वप्न को भी—उनके ही वोटों से सत्ता में आये नेता; प्रधानमन्त्री व सरकारें ही खुलेआम जोर-शोर से साम्प्रदायिक, अराष्ट्रीय व देशद्रोही आदि कहकर दिन-रात कोसते हैं। उनकी ही कोई बात सुनने-मानने को वे तैयार नहीं। हिन्दुओं को शीघ्र (२५-३० वर्षों में) ही अल्पसंख्यक बनाने, उनके धर्म-भाषा-संस्कृति-साहित्य आदि को समाप्त करने तथा भारत को मुस्लिम देश बनाने के लिए जाने-अनजाने देश की अधिकांश पार्टियां व सरकारें सब स्तरों पर पूरी तरह सक्रिय हैं—ताकि भारत को भी शीघ्र ही मुसलमानों व ईसाइयों के नाम लिख दिया जाए।

कारण—हमारे अपने नेताओं का भोलापन; राजनीति, चुनाव, व वोटरूपी राम-बाण का अनादर :

यह सब हमारे भोले हिन्दू नेताओं व संस्थाओं के—देश की राजनीति व चुनावों की उपेक्षा चुनावों के समय अपने मांगपत्र के साथ जन-जागरण न करने, वोट-रूपी अमोघ राम-शर व सुदर्शन चक्र का अनादर करने तथा हिन्दू-हितैषिणी देशभक्त पार्टी को (जिसे हमारी मांगों में विश्वास हो) ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू वोट न दिलवाने जैसे पापों का ही कुफल है। अब शायद वे जाग गए हैं तथा वोटोन्मुखी जनजागरण करके कुछ प्रायश्चित करेंगे।

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा करके धीरे-धीरे उर्दू को राज्यों में राज्यभाषा बनाया जाना – देश के मुस्लिमीकरण के लिए एक बड़ा कदम :

देश की राष्ट्रभाषा (हिन्दी) का देश व विदेशों में निरन्तर अनादर व उर्दूकरण करके, विदेशी भाषा अंग्रेजी, रोमनलिपि व उर्दू को धीरे-धीरे पिछले द्वार से भारत की राष्ट्रभाषा व सम्पर्क भाषा बनाने के लिए विभिन्न मनमाने तरीकों से (जनता से बिना पूछे, बिना सरल किए) उन्हें धीमे-धीमे सब राज्यों पर तथा देश पर थोपा जा रहा है—जो देश के मुस्लिमीकरण तथा ईसाईकरण के लिए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण व दुर्भाग्यपूर्ण बड़ा कदम है—जिसको किसी भी प्रकार रोका जाना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु देश के मार्गदर्शक हमारे हिन्दू धार्मिक व सांस्कृतिक नेताओं व संस्थाओं का सम्मिलित रूप से कोई कड़ा विरोध लोकतन्त्रीय-अहिंसात्मक तरीकों से कांग्रेस (इ) पार्टी व उसकी केन्द्र तथा सभी राज्य सरकारों के पूर्ण बहिष्कार—असहयोग जैसी कोई कड़ी अपील, तथा कांग्रेस (इ) को किसी भी चुनाव में कोई भी हिन्दू वोट न दिए जाने की कड़ी धमकी अभी शीघ्र ही प्रतीक्षित है। क्योंकि यह केवल हिन्दुओं का ही नहीं, सारे देश के जीवन-मरण का प्रश्न है।

हिन्दू धार्मिक समारोहों आदि का उपहास-विरोध-प्रतिबन्ध-लाठी-गोली आदि :

हिन्दू देवी-देवताओं-महापुरुषों, हिन्दू धार्मिक समारोहों आदि का उपहास-विरोध, व उनकी पूर्ण सुरक्षा के बजाए उन पर प्रतिबन्ध आदि पर भी—हिन्दू धार्मिक व सामाजिक नेताओं व हिन्दू जनता की तीव्र प्रतिक्रिया एवं कांग्रेस (इ) आदि हिन्दू-विरोधी व मुस्लिम-परस्त नेताओं व पार्टियों के बहिष्कार एवं हिन्दू वोट न दिए जाने की कड़ी धमकी आदि बहुत आवश्यक हैं—अन्यथा यह एक फैशन सा ही बनता जा रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू नेताओं/संस्थाओं की रणनीति अत्यन्त दोषपूर्ण—वे एक भी प्रमुख मांग न मनवा सके :

यह तो मानना ही पड़ेगा कि हिन्दुओं व हिन्दू धार्मिक व सांस्कृतिक संस्थाओं की कार्यविधि एवं रणनीति में कहीं न कहीं भयंकर भूलें अवश्य हैं—जिनके कारण हमारी नयी व बहुत पुरानी पार्टियाँ व संस्थाएं तथा बड़े-बड़े नेता भी हिन्दुओं की एक भी प्रमुख माँग नहीं मनवा सके। यदि हिन्दुओं व हिन्दू-नेताओं की कोई मांगें ही नहीं हैं, या चुनाव जैसे रामराज्य ला सकने वाले अत्यन्त नाजुक व गम्भीर समय पर भी उन्हें उदासीन ही रहना हो, या बिना किसी उपलब्धि के हजार वर्ष तक उन्हें केवल संगठन ही करना हो, या उन्हें हिन्दू वोट कट्टर हिन्दूविरोधी, मुस्लिम-परस्त, अराष्ट्रीय कांग्रेस जैसी पार्टियों को ही दिलवाने हों—तो चुनाव के बाद जब तब दो-एक मांगों को लेकर वक्तव्यों/आन्दोलनों/लघु या विराट् हिन्दू सम्मेलनों के भ्रामक ढोंग क्यों ? क्या हम एक बच्चे से भी गये-बीते हैं जो प्रतिवर्ष या प्रति पाँच वर्ष में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते ?

प्रत्येक देशप्रेमी नागरिक, हिन्दू, हिन्दू नेता व संस्थाएं शपथ लें—कांग्रेस (इ) आदि का पूर्ण बहिष्कार करेंगे :

देश का प्रत्येक हिन्दू; हिन्दू नेता व संस्थाएं शपथ लें कि—पंचायत से लेकर लोकसभा तक के किसी भी चुनाव में वे सत्तारूढ़ दल कांग्रेस, मम्युनिस्ट पार्टी व उस जैसी अधिकांश हिन्दू-विरोधी, मुस्लिम-परस्त, कट्टर साम्प्रदायिक व अराष्ट्रीय पार्टियों का पूर्ण बहिष्कार करेंगे। मुसलमान फिलिस्तीनियों के लिए भी पृथक् देश की मांग करने वाली पर हिन्दू देश, हिन्दुओं की माँगों व हिंदू संस्थाओं/पार्टियों को साम्प्रदायिक कहकर उनका डटकर विरोध करने वाली तथा निरन्तर हिंदू-हितों के विरुद्ध कार्य करने वाली, भारत में फिर से मुस्लिम व ईसाई रियासतें (शायद जिला स्तर तक) बनाने वाली, देश का तीव्र गति से मुस्लिमीकरण करने वाली कांग्रेस जैसी कट्टर हिन्दूविरोधी व कट्टर मुस्लिमपरस्त पार्टियों को, अपने ही विनाश के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए हिंदू क्यों वोट दें ? भारत के हिंदू तथा अन्य सभी देशप्रेमी नागरिक केवल उस देशभक्त पार्टी व नेताओं को ही वोट देंगे—जो भारतविभाजन के बाद देश के बहुसंख्यक हिंदुओं के भी अपने देश, संरक्षण व प्रोत्साहन की व्यवस्था करे तथा जो हमारी निम्नलिखित व अन्य सभी माँगों को पूर्ण रूप से मानकर पक्का आश्वासन दे कि सत्ता में आने पर उन्हें देश में पूरी तरह लागू करने के लिए केन्द्र व राज्य के विधि-विधानों में उन्हें अविलम्ब समाविष्ट किया जाएगा।

समझौतों व शकुनि की चालों से सावधान रहें :

परन्तु हमारे देशभक्त, दूरदर्शी व विवेकी हिंदू-नेताओं को सम्राट् युधिष्ठिर व पृथ्वीराज की तरह अतिक्षमा व अति-उदारता (जो कायरता व मूर्खता बन जाती है) जैसी निर्बलताओं से तथा परस्पर बिना परामर्श किए चुनावों के समय के झूठे आश्वासनों, यथास्थिति व कुछ रियायतों के समझौतों ; भय-प्रलोभनों आदि की द्यूत-टेबल पर सब कुछ हार जाने से तथा शकुनियों व दुर्योधनों की उन चालों व षडयन्त्रों से विशेष सावधान व चौकन्ना रहना होगा—जिनसे हिंदू नेता व संस्थाएं चुनावों व वोटों की राजनीति को अपना क्षेत्र न समझकर सदा की भाँति चुनावी परीक्षाओं में बैठ ही न सकें तथा जीवन-मरण के उस महत्त्वपूर्ण नाजुक अवसर पर वे पहले की तरह उदासीन रहें या अन्य छोटे-मोटे धार्मिक-सामाजिक या सांस्कृतिक कार्यक्रमों व आन्दोलनों में उलझे रहें। एक बच्चा भी परीक्षा में बैठकर ही कुछ प्राप्त करता है। फिर चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, राम, कृष्ण जैसे श्रेष्ठ-ओजस्वी-नीतिज्ञ राजनेताओं की किसी पार्टी को पूर्ण बहुमत से आप सत्ता में ला सकें—तो हिंदू संस्थाओं की, देश व समाज की सब चिंताओं व समस्याओं को तो वह बहुसंख्यक-हितैषी देशभक्त पार्टी ही सम्भाल लेगी। राष्ट्र-हितों को सर्वोपरि रखने वाली, भ्रष्टाचार व दलाली से स्वयं मुक्त उस देशभक्त पार्टी के सामने—पंजाब, काश्मीर, आसाम की, अथाह विदेशी धन शस्त्रास्त्र-मुसलमान के दिन-रात घुसपैठ की, हिंदुओं को अल्पसंख्यक बनाकर देश के मुस्लिमीकरण व ईसाईकरण की, अंग्रेजी-उर्दू, राष्ट्रभाषा के अनन्तकालीन वनवास, लाखों-करोड़ों गौओं के चमड़ी उधेड़े जाने आदि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की समस्याएं स्वतः ही लुप्त हो जाएंगी। तभी सच्ची धर्मनिरपेक्षता व लोकतन्त्र के दर्शन हो सकेंगे—तथा आकण्ठ भ्रष्टाचार, गगनचुम्बी मंहगाई, नौकरशाही, लाल-फीताशाही, बेरोजगारी, हत्याएं, लूटमार, बलात्कार, दुष्टाचार, अन्याय, शोषण व दमन आदि से जनता मुक्त हो सकेगी।

हमारा पाप व प्रायश्चित

हिंदु नेताओं ने चुनावों के समय अपने वोटों को अपने मांगपत्र से न जोड़ कर, चुनावों तथा वोटों की निरन्तर उपेक्षा करके धीमे-धीमे न केवल अपने देश, हिंदुओं व हिंदू धर्म व संस्कृति को स्वयं ही औरंगजेबी युग में ला पटका है, अपितु देश की सभी राजनैतिक व सामाजिक पार्टियों व संस्थाओं को तथा अपने सारे हिंदू समाज को भी हिंदुत्व व हिंदू—हित-विरोधी एवं कांग्रेस व मुस्लिम-सापेक्ष करने का बड़ा पाप भी किया है (भोलेपन व अनजाने में ही) अब पंचायत से लेकर लोकसभा तक के किसी भी चुनाव में अपने अच्छे मांगपत्र के साथ किसी हिंदू-हितैषिणी, देशभक्त, सच्ची राष्ट्रीय पार्टी के पक्ष में ओजस्वी जनजागरण करके तथा सारे हिंदू-वोट से दिलाकर वे कुछ प्रायश्चित भी कर सकेंगे—साथ ही देश को सभी राजनैतिक पार्टियों, अन्य सभी संस्थाओं, देश की आम जनता तथा हिंदुओं को स्वाभिमान व देशभक्ति पूर्ण नवीन चेतना व सही दिशा भी दे सकेंगे। छोटे या बड़े किसी भी चुनाव-के अवसर पर जिला व राष्ट्रीय स्तर की अपनी मांगों पर दृढ़ता से अड़ कर रूठने व शोर मचाने से अद्भुत उपलब्धियां भी होती रहेंगी।

हिन्दुओं की कुछ मांगें :

हिंदू नेताओं व संस्थाओं को जनजागरण के लिए एक अच्छा, प्रभावी, ओजस्वी हिंदू-हित-रक्षक मांगपत्र व अपील पम्फलेट्स, पर्चों व बड़े-बड़े पोस्टरों, अच्छे-अच्छे गीतों व भाषणों के मन्दिरों आदि में कैसेट्स, इत्यादि द्वारा शीघ्र ही प्रसारित करना चाहिए। कोई न कोई देशभक्त पार्टी उन्हें पूरी तरह लागू करने के लिए सामने आएगी। अन्यथा लाचारी में सभी हिंदू नेता व संस्थाएं सम्मिलित रूप से पूर्णरूपेण हिंदू व देश-हितैषिणी नयी राजनैतिक पार्टी शीघ्र ही बना सकते हैं। ओजस्विता व स्पष्ट रूप से अपील करने पर तथा जनजागरण व जनसम्पर्क करने पर अधिकांश हिंदू जनता नोट और वोट दोनों ही देगी।

शुद्धीकरण राष्ट्रीयकरण है—क.मा. मुंशी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाज, धर्मनिरपेक्षता और सरकार

—डा० बी० आर० एस० गुप्त

समाज में अधिक लोग अब भी जीवन मूल्यों का सम्बन्ध सम्पत्ति से मानते हैं। हमें मनुष्य और उसकी निष्ठा के मूल्य पर विचार करना है। गोल्ड-स्मिथ ने ठीक ही लिखा है—"जहां सम्पत्ति का भंडार होता है और मनुष्य का पतन होता है, वहां बुराइयों और विपदाओं का आगमन होता है" अलग-अलग वर्गों के लिए जीवनमूल्य अलग-अलग नहीं हो सकते। राजनीति जीवन का एक अंग है। प्राचीन (यूनानी) अर्थ में तो राजनीति जीवन का सार तत्व है, क्योंकि यह जीवन की सभी गतिविधियों पर हावी रहती है। दुर्भाग्यवश आधुनिक राजनीतिज्ञों ने इसे कृत्रिम स्वरूप दे दिया है, जैसे यह भी एक पेशा हो। राजनीतिक और व्यावसायिक जीवन के मूल्यों को उन चिरंतन मूल्यों से पृथक नहीं किया जा सकता है जो मनुष्य के व्यक्तित्व को उजागर करते हैं और उसके लिए आवश्यक हैं। राजनीतिक मूल्यों को मानवीय मूल्यों से पृथक और स्वतन्त्र मानकर चलना मनुष्य को छोटा बना देता है। यदि राजनीति व्यवहार और कार्य के नए आधार नहीं ढूंढती तो वह स्वयं को नष्ट कर देगी। आज हमारे जीवन को एक दम नयी-नयी बातें प्रभावित कर रही हैं—शासन की ज्ञात प्रणालियों की अक्षमता से, चाहे वह पूंजीवादी व्यवस्था हो या समाजवादी व्यवस्था हो—समूचे विश्व में बेचैनी ही पैदा हो रही है। अनिश्चय का वातावरण बना हुआ है। एक राष्ट्र का चरित्र एक व्यक्ति के चरित्र को ही प्रतिबिम्बित करता है। वह व्यक्तियों से ही बनता है। अनेक मित्र कहते हैं कि हमें व्यक्ति की कुशलता व प्रभाव-शीलता पर ध्यान देना चाहिए, न कि उनके निजी जीवन पर। चरित्र सामा-जिक रूप से बहुत खतरनाक होता है। अनेक नेता लोग सोचते हैं कि वे जो कुछ बन्द कमरों में करते हैं उसे कोई नहीं देखता। परन्तु वे भारी भूल पर है। जनमत व जनता की आंख इतनी तीखी व पैनी होती हैं कि लोहे की दीवारों को भेद देती है। वह हर सार्वजनिक कार्यकर्ता के ईमान, चरित्र व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन पर दृष्टि डालती है । राजनीतिज्ञ हों या शिक्षाशास्त्री या गांधीवादी, किसी को वह नहीं छोड़ती । अतः आज अभी भी समय है कि वे नेता अपने को बदलें । यदि वे ऐसा नहीं करते तो समाज इन्हें बदलने को मजबूर कर देगा और ऐसा सबक सिखायेगा कि वे बदल जायेंगे । हमारा समाज सामान्यतया शान्तिप्रिय व शिष्ट है । वह वर्तमान नेताओं को सहन करता है । पर स्थिति बिगड़ती गई तो लोग उन्हें और सहन नही करेंगे ।

चरित्र का प्रश्न आज सबसे महत्त्वपूर्ण बन गया है । अनेक व्यावसायी व उद्योगपति अधिकांश लाभ चाहते हैं । खरीदने में भी वे लाभ व कमीशन चाहते हैं और बेचने में भी । इससे काले धन की उग्रता जहां बढ़ रही है वहां कीमतें तेजी से आसमान को छू रही हैं । इस दौड़ में बेचारा सामान्य जन पिस रहा है । वह लगातार भारी व असहनीय आर्थिक भार से दबा जा रहा है इस स्थिति का सामना करने के लिए ऐसे अच्छे युवा मित्र चाहिए जो इन बुराइयों के विरुद्ध दृढ़ जनमत तैयार कर सकें । भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए हमें अच्छे नैतिक मूल्यों के लिए प्रयत्न करना होगा क्योंकि बिना दृढ़ नैतिक बन्धन के व बिना चरित्र एवं ईमानदारी के राष्ट्र न कभी प्रगति कर सकता है और न खुशहाल हो सकता है और न शक्तिशाली बन सकता है । भ्रष्टाचार चाहे छोटा हो या बड़ा, हमें उससे लड़ना चाहिए । हमें निरन्तर सचेतना व सजगता का प्रकाश लाना चाहिए । यदि दृढ़ता और साहस से हमने इन बुराइयों का सामना किया, तो मुझे विश्वास है कि हमें अच्छे परिवार मिलेंगे । अच्छे युवकों का एक छोटा वर्ग भी देश के जीवन में परिवर्तन ला सकता है । कोई भी अच्छा प्रयत्न बेकार नहीं जाता । ईश्वर सदा ऐसे प्रयत्नों की मदद करता है ।

एक और तरह के गांधीवादी भी हैं जो पढ़े-लिखे विद्वान, अध्येता व अच्छे लेखक हैं । वे गांधी जी पर विश्लेषणात्मक व दार्शनिक पुस्तकें तैयार करते हैं । पर जनता की पीड़ा से अधिक सैद्धांतिक पिष्टपेषण में डूबी यह किताबें केवल शब्दों का भार मात्र बनकर रह जाती हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तीसरे गांधीवादी वे हैं जो जनता में रहते हैं तथा पददलितों तथा पीड़ितों के लिए काम करते हैं। सर्वोदय के ऐसे बहुत से कार्यकर्ता हैं जो जनता व ग्रामों से सीधे जुड़े हैं, वह उपदेश कम देते हैं गांधी के कथनों को पूरा करने की कोशिश में अधिक रहते हैं। गांवों की जनता सोचती है कि आज गांधी इन्हीं लोगों के बल पर टिका है। इनकी संख्या अल्प है पर उनके कार्य ही गांधी-वाद को जीवित रखे हैं। हमें उन सबकी सहायता करनी चाहिए।

यदि भ्रष्टाचार इसी तरह बढ़ता रहा तो लोग महसूस करने लगेंगे कि चुनावप्रणाली हमें बदलनी पड़ेगी। आज, समाज में आवश्यकता है कि ईमान-दारी के मूल्यों के लिए अच्छा वातावरण उत्पन्न करें। यदि हम मौन होकर इस बुराई को सहन करते चले गए तो ऐसी स्थिति आ जाएगी कि समाज पीड़ा में धंसता जाएगा। देश में भ्रष्टाचार व काले बाजार ने सभी को आक्रांत कर रखा है। अनेक राजनीतिक नेता उद्योगों व व्यावसायिक विश्व से चुनावकोष के नाम पर भारी मात्रा में धन ले रहे हैं और उसमें से अधि-कांश धन काले बाजार से प्राप्त हुआ है। यह धन न केवल काले धन की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है अपितु अनेक आयामों के साथ नई बुराइयों व रुग्णताओं को जन्म देता है। आज समाज में भ्रष्टाचार मान्य हो गया है। आज विवेकशक्ति बिल्कुल दब गई है। अधिकांश कार्य काले धन से ही सम्पन्न होते हैं। परिणामतः समानान्तर मुद्रा-व्यवस्था व मुद्रा-स्फीति फल फूल रही है। अनेक नेता व दल इस धन को अपनी जेबों में भर रहे हैं। सार्वजनिक जीवन में हमारे नेताओं के इस दूषित व्यवहार के कारण अधिकांश नैतिक मूल्य नष्ट हो गए हैं। आज स्वाधीनता के इतने वर्षों बाद भी हमारे गांव के हजारों भाई-बहन भूख से तड़प रहे हैं। उन्हें दो समय का भोजन भी प्राप्त नहीं हो पाता। यह स्थिति देश के लिए बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण है। हम इन सभी बातों के लिए सरकार को दोषी ठहराते हैं। नागरिकों का भी देश के प्रति कुछ कर्तव्य है जिसे कोई नहीं निभाता। नागरिकों को भी अपनी क्षमता से कार्य करना चाहिए। जनता के सहयोग से भूख व बेकारी आदि समस्याओं पर काबू पाया जा सकता है। देश में राष्ट्रीय एकता तब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तक स्थापित नहीं की जा सकती, जब तक ईमानदार समाज स्थापित न हो।

रोम जब आग की लपटों में जल रहा था, तो नीरो वंशी बजा रहा था। इस कहावत को सभी लोग जानते होंगे। रोम जैसी स्थिति आज हमारे देश में आसन्न है। सर्वत्र अशान्ति, हिंसात्मक आन्दोलन, डकैती, हत्या, लूटपाट, उपद्रव, तोड़-फोड़, आगजनी, हड़तालों की महामारी, गोलाबारी आदि आम बातें होती जा रही हैं। देश में कानून का शासन देखने को नहीं मिलता है। स्थिति इतनी बिगड़ गई है कि हर ईमानदार आदमी से यही सुनने को मिलता है कि भगवान ही इस देश का मालिक हैं। इस सारे माहौल में समाज विरोधी तत्त्वों, डकैतों, तस्करों, धन्नासेठों, मुनाफाखोरों और भ्रष्टाचारियों की बन आई है। कानून और व्यवस्था की नित्य बिगड़ती स्थिति का वे भरपूर फायदा उठा लेना चाहते हैं। देश की इस दुर्दशा से जहां लोग हतप्रभ हैं वहीं राजनैतिक दलों के नीरो रूपी नेता बेफिक्री से अपनी चुनावी बांसुरी टेरने में लगे हुए हैं। आज देश में जो स्थिति पनप रही है उसका बहुत कुछ श्रेय हमारे नेताओं की पदलोलुपता और उनकी राजनीति को है। आज की राजनीति लोगों को एक में जोड़ने के बजाय बांटने में लगी है। ऐसे माहौल में मूल्यों, सिद्धान्तों और राष्ट्रहित की बातें कोई महत्व नहीं रखतीं। सस्ती और ओछी नेतागिरी की प्राप्ति के लिए नेता भड़काते हैं, और छात्र, श्रमिक भड़कते है। इनमें गुंडों की बन आती है तथा बेगुनाह मारे जाते हैं। आज देश के सामने कई खतरे हैं और उनमें से एक खास खतरा स्वार्थी और लोलुप नेताओं की सत्ता-लोलुपता से है।

किसी सरकार के आवश्यक कर्तव्य होते हैं—**राज्य में कानून-शासन तथा देश की मुद्रा के मूल्य की रक्षा।** आजकल ऐसा लगता है कि हमारी सरकार शासन व्यवस्था के इन दो बुनियादी तत्वों को भूल गई है। लोकतंत्र तभी टिकता है जबकि समाज में सुरक्षा का वातावरण हो। आज देश में सर्वत्र कानून और व्यवस्था को जो चुनौती मिल रही है वह किसी भावी विपत्ति का संकेत कर रही है। गली-कूचों में कानून और व्यवस्था की दयनीय स्थिति देखकर निरक्षर लोग भी कहते हैं कि इससे तो इमरजेंसी ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भली थी। आम आदमी का यह चिन्तन दर्शाता है कि हमारे समाज के लिए भय आवश्यक है। इसके बिना हम काम नहीं कर सकते। जिस देश में लोग एक ओर भूख से मरें और दूसरी ओर फाइव-स्टार होटलों की रंगीन फिजां काले धन का प्रदर्शन करे। जहां दो नम्बरी शान समझी जाती हो, जहाँ भ्रष्टाचार शिष्टाचार मान लिया जाए, जहाँ कर्मठता और श्रम का मूल्य न हो, उस देश में अशान्ति का दावानल कभी न कभी तो फैलेगा ही। ऐसा लगता है कि हम इतिहास को भूलते जा रहे हैं। रोम और यूनान की सभ्यतायें मिट गई हैं पर हमारी कायम रही, क्योंकि हमारे चिन्तन का दृष्टिकोण आध्यात्मिक था। हमारे विश्वास की धुरी नैतिक थी और उस पर धार्मिक अनुशासन था, परन्तु आज यह सब बातें गौण हो गई हैं। कोई भी समाज या देश तब तक प्रगति नहीं कर सकता, जब तक उसे कानून और मर्यादा का भय न हो। भय के बिना तो प्रीति नहीं होती। अपराधों के मूल में धर्म और दण्ड के प्रति अज्ञानता तथा उदासीनता मुख्य कारण हैं। धर्म से पवित्रता और सार्वजनिक जीवन की शुद्धता आती है। धर्म से समाज भी समृद्ध होता हैं। ऋषि मुनियों के देश भारत में यद्यपि दंडविधान प्राचीन समय से भी अधिक कठोर हैं फिर भी कानून व्यवस्था को जो चुनौती मिल रही है उससे स्पष्ट है कि जिन हाथों में देश की बागडोर है वे सक्षम नहीं है और अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए देश को अराजकता की ओर धकेल रहे हैं। यह कैसी विडम्बना हैं कि हम और हमारा समाज उन दो शक्तियों धर्म और दंड को तेजी से भूलते जा रहे हैं, जिन्होंने व्यक्ति को समाज के विरुद्ध आचरण करने से रोका है। दंड के प्रति अभय और धर्म के प्रति अनास्था वर्तमान अराजकता का मूल है।

राष्ट्र धर्मनीति पर चलकर ही स्वस्थ और समृद्ध हो सकता है किन्तु राज्य को हर हालत में धर्म-निरपेक्ष ही रहना पड़ता है यह कहकर कि धर्म अनेक हैं, राज्य अपने लिए उस मानव-धर्म से भी निरपेक्ष ही रहने का हक बना लेता है जो सर्वथा एक है और धर्मों की तथा-कथित अनेकता के दायरे में समान भाव से व्याप्त है। स्पष्ट है कि ऐसी राजनीति न अपने देश को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनता को एक कर सकती है, न मानव-जाति में पड़े विभेद और वैमनस्य को कम कर सकती है। वह तोड़ती है, जोड़ती नहीं है। उस आधार पर राष्ट्र एकात्मकता प्राप्त नहीं कर सकता और न ही दुनिया को युद्ध से निस्तार मिल सकता है। इसलिए आज की जो बड़ी आवश्यकता है वह यह कि राष्ट्र का उदय हो जो राज्य को सीमा में रखें और राजनीति को मर्यादाशील बनाएँ। लेकिन आधार में राष्ट्र-दृष्टि नहीं होगी तो राजनीति भेदों प्रभेदों को उग्र और उत्कट बनाए बिना रहेगी नहीं और इस प्रकार भीतर और बाहर संघर्ष के नए-नए कारण उत्पन्न करती रहेगी।

उपर्युक्त देश की स्थिति से किसी को शायद ही मतभेद हो किन्तु मूल प्रश्न तो यह है कि स्थिति में सुधार कैसे किया जाय। वास्तव में आज मूलतः मूल्यों तथा नैतिक आस्था का संकट है। राजनैतिक अस्थिरता तथा सिद्धान्तहीन राजनीति भी वास्तव में नैतिकता के अभाव के वातावरण में ही पैदा होती है। तो फिर भारत को आज नैतिक पुनर्जागरण की आवश्यकता है। यह कौन करेगा ? कैसे संभव होगा ? आर्थिक विकास के बावजूद देश, दरिद्र, दीन और असहाय प्रतीत होता है। दुनिया के हर देश में और मुख्यता भारतीय समाज में धर्म का विशेष स्थान था, विशिष्ट भूमिका थी किन्तु औद्योगिक सभ्यता के बढ़ते हुए प्रभाव ने धर्म को एक कोने में दबा दिया हैं। धर्म तथा नैतिक मूल्यों की बातें करना पिछड़ेपन की निशानी माना जाने लगा है। संविधान में धर्मनिरपेक्षता स्वीकार किये जाने का भी कुछ हद तक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। वास्तव में धर्म-निरपेक्षता का अर्थ धर्म-हीनता नहीं है। यदि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है तो इसका यही अर्थ है कि यहां कोई भी सरकार किसी भी धर्म-विशेष से सम्बद्ध नहीं होगी। धर्मों के आधार पर किसी वर्ग को विशेष सुविधाएँ नहीं प्राप्त होंगी। सरकार सभी धर्मों को समभाव से देखेगी। किन्तु व्यवहार में हम पाते हैं कि एक ओर जहां धार्मिक भावनाओं तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है वहां दूसरी ओर साम्प्रदायिकता की भावना को प्रश्रय दिया गया है। वोटों की राजनीति इसके लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है। यदि हमारा संविधान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म-निरपेक्षता में आस्था रखता है तो फिर धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए आयोग की स्थापना सही दिशा में उठाया गया कदम है। इस पर हमें विचार करना होगा। सरकार के लिए किसी जाति या सम्प्रदाय के आधार पर कोई निर्णय करना क्या उचित होगा ?

धर्मों और सम्प्रदायों को यदि राजनीति से अलग रखा गया तो देश की एकता को खतरा पैदा हो जायगा। भारत के लिए धर्म-निरपेक्षता आवश्यश है, किन्तु धर्म-निरपेक्षता का आचरण भी होना चाहिए। बहु-संख्यक तथा अल्पसंख्यकों के बीच दीवार खड़ी करने वाली नीतियों को त्यागना पड़ेगा। धर्म व्यक्ति का निजी मामला है, राज्य का उसमें कोई दखल नहीं होना चाहिए।

"सजल"

—डा० रत्नलाल रत्नेश

अन्दर से बुझे गुल खिले
बाहर नए नए,
उपवन में आए जब से
नाहर नए नए।
सबको पता निर्माण हवाई हुआ यहाँ,
कागज पै बने बहुत से सागर नए नए।
पानी नहीं रहा कहीं नहरें गई हैं सूख
आंसू से भर रहे हम गागर नए नए।
मन में भरा है सबके अब मैल पुराना,
कबरों पै पर चढ़ाते चादर नए नए।
गौवध पै किसी का भी ध्यान ही नहीं,
कुत्तों को मिल रहे हैं आदर नए नए।
शैलानियत खरीदी मानवता बेच कर "रतनेश"
परिधान ज्यों धवल है निशाकर नए नए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन सम्पन्न

महात्मा हंसराज कालेज, दिल्ली के सभागार में आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विषयों को लेकर ३० सितम्बर से २ अक्तूबर तक चला। इसका आयोजन आर्यजगत के प्रसिद्ध नेता एवं विद्वान डा० प्रशान्त वेदालंकार ने किया।

प्रारम्भ में आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि आधुनिक काल में भारत के पुनर्जागरण और पुनर्निर्माण में आर्यसमाज का सर्वाधिक योगदान रहा है, परन्तु गत अनेक वर्षों से आर्यसमाज आक्रण्य और शिथिलता की बांहों में बेहोश पड़ा है। आर्यसमाज का संगठन किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति में है। राष्ट्र और समाज के प्रति आर्यसमाज का क्या दायित्व है उसका बोध कराने के लिए एवं इस दिशा में आर्यसमाज के संगठन को गतिशील बनाने के लिए सर्वांसमाज के बुद्धिजीवियों के सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

प्रारम्भ में मन्त्रिमंडल के प्रधान स्वामी सच्चिनन्द जी ने कहा कि प्रत्येक आर्य को आर्यसमाज के नियमों का कड़ाई से पालन करना चाहिए।

'गुरुकुल व आर्य शिक्षा प्रणाली सम्मेलन में बोलते हुए' श्री विजयकुमार महोल्त्रा ने कहा कि शिक्षा का वास्तविक विकास आर्य और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली द्वारा ही सम्भव है। परन्तु इन संस्थाओं को आधुनिक परिवेश के अनुरूप ढालना होगा। इन संस्थाओं के प्रति जनता तभी आकृष्ट होगी जब हम इनमें पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को अन्य शिक्षण संस्थाओं की भांति प्रगति की दौड़ में भाग लेने के लिए सक्षम बनाने में सम्पर्क हों।

'नयी शिक्षा : विश्वविद्यालय शिक्षा और आर्यसमाज' पर आयोजित शिक्षा-सम्मेलन में विद्वानों ने नयी शिक्षा नीति पर तीव्र प्रहार करते हुए कहा कि यह शिक्षा प्रणाली पश्चिम की नकल है। इस सम्मेलन में आर्यसमाज की डी०ए०वी० संस्थायें तथा अन्य सरकारी सहायता प्राप्त आर्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्यालय आलोचना का मुख्य शिकार रहे। वक्ताओं ने कहा कि नई शिक्षा प्रणाली 'तनुपोषक व उदर भरने की दृष्टि से शिक्षा देती है। इसलिए राष्ट्र और समाज का नैतिक पतन हो रहा है। इसमें भारत सरकार की संस्कृतविरोधी एवं उर्दू की समर्थक नीति की भी तीव्र भर्त्सना की गई। शिक्षा प्रणाली में भारतीयता के प्रति उपेक्षा पर तीव्र रोष प्रकट प्रकट किया गया। विशेष रूप से इतिहास की पाठ्य पुस्तकों को भारतीय दृष्टि से लिखने पर बल दिया गया।

'सामाजिक व राष्ट्रीय प्रश्न' सम्मेलन के अन्तर्गत अपने विचार रखते हुए श्री क्षितीश वेदालंकार ने गरीबी के उन्मूलन तथा साम्प्रदायिक दृष्टि पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री चिंतामणि ने हरिजन व दलितोद्धार की समस्या की जड़ में आकर इस बीमारी के निदान के लिए क्रान्तिकारी योजना बनाने पर बल दिया। सम्मेलन के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने मद्यनिषेद्ध के आन्दोलन को तीव्र करके देश की गरीबी दूर करने के लिए जनता का आह्वान किया।

'राजनीति और आर्यसमाज' सम्मेलन में श्री सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि भारत में राजनीतिक चेतना का सूत्रपात महर्षि दयानन्द ने किया था, परन्तु लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द की मृत्यु के बाद आर्यसमाज ने राजनीति से पृथक् रहकर अक्षम्य अपराध किया। अतः आर्यसमाज को सुराज्य के लिए जबर्दस्त आन्दोलन चलाना चाहिए। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री रामचन्द्र वन्दे मातरम्, भू0 पू0 सांसद भाई महावीर ने परामर्श दिया कि आर्यसमाज को आज की भ्रष्ट राजनीति से दूर रहना चाहिए पर स्वामी चन्द्रवेश, श्री मंगलसैन चौपड़ा व प्रायः सभी उपस्थित प्रतिनिधि आर्यसमाज द्वारा उसके राजनीति में सक्रिय भाग लेने के पक्षधर थे। श्री बलराज मधोक ने हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए आर्यसमाज का आह्वान किया। आर्यप्रति निधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने सुझाव दिया कि सार्वदेदिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध इस विषय के विचारार्थ एक परिपत्र समस्त सभाओं को भेज दें, और इस विषय पर उनके विचार मांगें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज का वर्तमान संगठन भी अधिकांश प्रतिनिधियों के रोष का शिकार रहा। प्रतिनिधियों ने आलोचना की कि आर्यसमाज के संएठन में भी वही तत्व आ गए हैं जो अन्य राजनीतिक दलों में है।

समापन समारोह में डा० प्रशान्त द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित कार्यक्रम सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए— (१) वैदिक व भारतीय संस्कृति के अनुसंधान को प्रपत्र देने के लिए शोध पुस्तकालयों (संस्थानों) की स्थापना (२) सभी समाजों में भारतीय संस्कृति व साहित्य के प्रकाशन की वृहद योजना (३) प्रत्येक प्रदेश में बुद्धिजीवियों का संगठन। उन सब विद्वानों का संगठन जो भारतीय संस्कारों से ओतप्रोत हैं, पर भारतीयता के प्रचार की किसी योजना से उदासीन हैं (४) प्रत्येक आर्यसमाज में योग्य पुरोहित की नियुक्ति, पुरोहित के कर्त्तव्यों में आर्यसमाज के वातावरण को भव्य बनाना भी है। (५) प्रत्येक आर्यसमाज को पिछड़ी जातियों के बच्चों को गोद लेकर उन्हें संस्कारी व शिक्षित बनाने का उत्तरदायित्व सौंपना (६) (क) प्रत्येक जिले में किसी गुरुकुल की स्थापना की योजना, ताकि प्रत्येक को शिक्षित करने का स्वप्न पूरा किया जा सके। (ख) सरकारी सहायता प्राप्त आर्य विद्यालयों में संस्कृति की अनिवार्य शिक्षा, (७) देश की राजनीति को प्रभावित करने के लिए विविध दलों में कार्यरत नेताओं का संगठन। (८) साहित्यिक पारिवारिक पत्रिका का प्रकाशन।

सम्मेलनों की अध्यक्षता क्रमशः डा० जयदेव वेदालंकार, डा० तुलसी राम, प्रो० शेरसिंह, स्वामी आनन्द बोध, श्री वीरेन्द्र तथा श्री क्षितीश वेदालंकार ने की। अन्य मान्य अतिथियों तथा वक्ताओं में सर्वश्री स्वामी ओमानन्द, स्वामी सत्यपति, प्रो. वेदव्रत, डा० निरूपण विद्यालंकार, भाई महावीर आचार्य हरिदेव, स्वामी विद्यानन्द, अनिल विद्यालंकार, डा० वेद प्रताप वैदिक, डा० कृष्णलाल, अनिल विद्यालंकार, प्रो० रत्नसिंह रामचन्द्र विकल स्वामी अग्निवेश, वीरेश प्रताप चौधरी, ज्वलन्त कुमार, के नरेन्द्र, डा० धर्मपाल, ब्र० आर्य नरेश, नवनीत लाल एडवोकेट तथा सुभाष वेदालंकार, इत्यादि थे।

इस सम्मेलन में देश के प्रायः प्रत्येक प्रदेश से लगभग ५०० प्रतिनिधि आये थे। इस सम्मेलन की विशेषता यह थी कि इसमें विश्वविद्यालय के प्राध्यापक व पत्रकार तथा लेखक आदि बड़ी मात्रा में थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बाँटिए

१.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	६० पैसे
२.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु:	६० पैसे
३.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	६० पैसे
४.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	६० पैसे
५.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	६ रु०
६.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	६० पैसे
७	पोस्टर दो प्रकार के	१.२० पैसे
८	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	६० पैसे
९	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ—जहीर नियाजी	६० पैसे
१०	हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	६० पैसे
११	इस्लाम—एक परिचय	६० पैसे
१२	A Challenge to the Christian Faith	६० पैसे
१३	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	६० पैसे
१४	पादरियों को चुनौती	६० पैसे
१५	बाइबिल को चुनौती	६० पैसे
१६	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	६० पैसे
१७	...और पादरी भाग गया	६० पैसे
१८	Christianity Unmasked	१ रु०
१९	The Clarion Call	६० पैसे
२०	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	६० पैसे
२१	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	६० पैसे
२२	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	६० पैसे
२३	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा ?	६० पैसे

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य की १ पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और ५०० पुतकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम १/४ धन अग्रिम अवश्य भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म-पालन क्यों ?

स्त्री और पुरुष को चाहिए कि जैसे दीमक बाँबी को बनाता है वैसे सब भूतों को पीडा न देकर परलोक अर्थात् पर जन्म के सुखार्थ धीरे-धीरे धर्म का संचय करे। क्योंकि परलोक में न माता, न पिता, न पुत्र, न स्त्री, न ज्ञाति सहाय कर सकते हैं, किन्तु एक धर्म ही सहायक होता है।

देखिए, अकेला ही जीव जन्म और मरण को प्राप्त होता और एक ही धर्म का फल सुख और अधर्म का दुःख-रूप फल उसको भोगता है। यह भी समझ लो कि कुटुम्ब में एक पुरुष पाप करके पदार्थ लाता है और महाजन अर्थात् सब कुटुम्ब उसको भोगता है। भोगने वाले दोषभागी नहीं होते, किन्तु अधर्म का कर्त्ता ही दोष का भागी होता है। जब कोई किसी का सम्बन्धी मर जाता है, उसको मिट्टी के ढेले के समान भूमि में छोड़कर, पीठ दे बन्धुवर्ग विमुख होकर चले जाते हैं। कोई उसके साथ जाने वाला नहीं होता।

उस हेतु से परलोक अर्थात् परजन्म में सुख और जन्म के सहायार्थ नित्य धर्म का संचय धीरे-धीरे करता जाय क्योंकि धर्म ही के सहाय से बड़े बड़े दुस्तर दुःखसागर को जीव तर सकता है। जो पुरुष धर्म ही को प्रधान समझता, जिसका धर्म के अनुष्ठान से कर्त्तव्य पाप दूर हो गया उसको प्रकाशस्वरूप और आकाश जिसका शरीरवत् है उस परलोक अर्थात् परम-दर्शनीय परमात्मा को धर्म ही शीघ्र प्राप्त कराता है।

—(मनुस्मृति)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
वेदमंदिर-वेदभिक्षु: सेवाश्रम
पो. आ. मुखमेलपुर दिल्ली-३६

मार्गशीर्ष
संवत् २०४६
नवम्बर १९८९

Delhi Postal
D-C-201
N. R. 10719/63

गो-महिमा

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर सहस्र छह सौ मनुष्यों को सुख पहुँचता है; ऐसे प्राणियों को न मारे और न मारने दे। जैसे किसी गाय से बीस सेर और किसी से दो सेर दूध प्रतिदिन होवे, उसका औसत ग्यारह सेर प्रत्येक गाय से दूध होता है। कोई गाय अठारह और कोई छह महीने तक दूध देती है, उसका औसत बारह महीने हुए। अब प्रत्येक गाय के जन्म भर के दूध से २४९६० (चौबीस सहस्र नौ सौ साठ) मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं। उसके छह बछियाँ और छह बछड़े होते हैं, उनमें से दो मर जाएँ तो भी दस शेष रहे। उनमें से पाँच बछियों के जन्म भर के दूध को मिलाकर ११४८०० (एक लाख चौबीस सहस्र आठ सौ) मनुष्य तृप्त हो सकते हैं। अब रहे पाँच बैल, वे जन्म भर में ५००० (पाँच सहस्र) मन अन्न न्यून से न्यून उत्पन्न कर सकते हैं। उस अन्न में से प्रत्येक मनुष्य तीन पाव खावे, तो अढ़ाई लाख मनुष्यों की तृप्ति होती है। दूध और अन्न मिलाकर ३७४८०० (तीन लाख चौहत्तर सहस्र आठ सौ) मनुष्य तृप्त होते हैं। दोनों संख्या मिलाकर एक गाय की एक पीढ़ी में ४७५६०० (चार लाख पचहत्तर सहस्र छह सौ) मनुष्य एक बार पालित होते हैं और पीढ़ी पर पीढ़ी बढ़ाकर लेखा करें तो असंख्यात मनुष्यों का पालन होता है। इससे भिन्न बैल गाड़ी, सवारी, भार उठाने आदि कर्मों से मनुष्यों के बड़े उपकारक होते हैं तथा गाय दूध में अधिक उपकारक होती है, परन्तु जैसे बैल उपकारक होते हैं वैसे भैंसे भी हैं। परन्तु गाय के दूध-घी से जितने बुद्धि वृद्धि से लाभ होते हैं उतने भैंस के दूध से नहीं। इससे आर्यों ने मुख्योपकारक गाय को गिना है। और जो कोई अन्य विद्वान् होगा, वह भी इसी प्रकार समझेगा।

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक प० राकेशरानी द्वारा 'जनज्ञान' मुद्रणालय दिल्ली-३६ से मुद्रित एवं प्रकाशित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi